मनुस्मृतिसटीक का विज्ञापनपत्र ॥

सम्पूर्ण धर्मशास्त्रों का अग्रणी व सकल धर्मानुरागियों से पूजित यह मनुस्मृति ग्रन्थ जिसकी मान्यता व मर्यादा का विस्तार अच्छेप्रकार संसारमें है—यद्यपि इसग्रन्थके बहुतसे अनुवाद व्रज याभिन्यादि भाषाओं में कियेगये हैं परंतु उनमें से कोई भी ऐसा नहीं है जिससे प्रत्येक वार्त्ताओं का समाधान सब कोई सुगमता से समझकर उसके तात्पर्य्यको जानलेवै इसकारण सम्पूर्ण धर्म कर्म्मानुरागियों व विद्यारसविलासियों के उपकारार्थ व अलीगढ़ की भाषा संवर्द्धिनी सभाकी सहायतार्थ सकल कर्म धर्मधुरीन मर्य्यादालवलीन पुण्यपीन गुणिगणप्रवीन सर्वैश्वर्य्य भूषित दोषादूषित उत्तमवंशी दुष्टाशयध्वंशी श्रीमान्मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) ने बहुतसी द्रव्य व्यय करके धर्म शास्त्राग्रगण्य सकलगुणिगणमंडलीमण्डन महामहोपाध्याय श्रीपण्डितगिरिहरचन्द्रजी से अन्य धर्म शास्त्र ग्रन्थों के तात्पर्य्यों से सम्बलित व सारों से मिश्रित और सकलटीकाओं के रहस्यों से युक्त उक्त ग्रंथका पदच्छेद अन्वय तात्पर्य्य व भावार्थ से भूषित अच्छेप्रकार देशभाषामें विवरणकराय मन्वर्थभास्करनामतिलक मूलश्लोकों सहित लक्ष्मणपुरस्थ स्वयन्त्रालयमें मुद्रितकर प्रकाशित किया संसारमें यावत् कर्मधर्मचतुर्वर्ण अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र व चतुराश्रम अर्थात् ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व संन्यासादिक हैं सविस्तार इसमें वर्णन कियेगयेहैं—इनकेसिवाय और भी सारे जगत्कावृत्तअर्थात् जगदुत्पत्ति स्वर्गभूम्यादिसृष्टिवर्णनदेवगणादिकोंकीसृष्टि धर्माधर्म विवेक मनुजीकी उत्पत्ति व यक्ष गन्धर्वादिकोंकीउत्पत्ति व मेघ, पशु, पक्षी, कृमि, कीट, जरायुज, अंडज, स्वे

भूमिका ॥

प्रकटहोय कि एक समय श्रीयुत महाराजाधिराज गुणग्राहक जानगिलक्रुस्त प्रतापीकी आज्ञासे श्री लल्लूजी लालकवि सहस्र अवदीच गुजराती ब्राह्मण आगरेवाले ने श्री नारायण पण्डित रचित संस्कृत हितोपदेश की नीति कथा का आशय लेकर ब्रज भाषा में राजनीति नाम ग्रन्थ बनाय महाराजाधिराज सकल गुणनिधि लार्डमिण्टो तेजस्वी के राज्य में गुणज्ञाता उपकारी कप्तान जानविलियमटेलरन क्षत्रीकी आज्ञासे और श्रीमान् दयायुत डाक्टरविलियम् हंटर साहब की सहायता और लेफ्टिनेण्ट एब्राहाम लाकिट रतीवन्त की अनुमति से निज यन्त्रालय में छपवाया इसी को श्रीयुत महाशय विद्वच्छिरोमणि हालसाहब ने इंगलण्डीय विद्यारसिकों को ब्रजभाषाके उद्धारार्थ इंगलंडीय भाषा में कठिन शब्दों का कोष और परिभाषा सहित रचनाकर प्रयागराज के मिशनयन्त्रालय में मुद्रित कराया अब श्रीयुत विद्यागुणग्राहक विद्वद्वृन्दशिरोमणि महाराजाधिराज कौलिन् ब्रौनिंगसाहब एम० ए० अवधदेशीयडैरेक्टरवीरेश ने इंगलण्डीय विद्यानुरागियों को ब्रजभाषामें अधिकश्रम और उद्धार कराने के निमित्त कोष को घटाय बढ़ाय हिन्दीभाषामेंही रचनाकर मुन्शी नवलकिशोर के यन्त्रालय में मुद्रितकराया निश्चयहै कि अवध देशीय पाठशालाओं के विद्यार्थियों को राजनीति और संसारी व्यवहारों में अतिउपयोगी हो ॥

राजनीति ॥

दो० गजमुख सुखदाता जगत दुखदाहक गुणईश ।
पूरण अभिलाषा करौ शम्भूसुत जगदीश ॥

काहूसमय श्रीनारायण पण्डितने नीतिशास्त्रनि ते कथानिका संग्रहकरि संस्कृतसें एक ग्रन्थबनाय वाको नाम हितोपदेश धरयो सो अब श्रीयुतमहाराजाधिराज परमसुजान सबगुणखान भागवान् कृपानिधान मारकिशवलिस्ली गवर्नरजनरल महाबली के राजसें औ श्रीमहाराज गुणवान् अतिजान जान्गिलक्रिस्त प्रतापी की आज्ञासों संवत् १८५९ में श्रीलल्लूजीलाल कवि ब्राह्मण गुजराती सहस्र अवदीच आगरेवाले ने वाको आशयले ब्रजभाषा करि नाम राजनीति राख्यो ॥

दो० पण्डित हैं ते जानि हैं कथा प्रसंग प्रवीन ।
मूरख मन में मानि हैं लालकहा यह कीन ॥

अरु संवत् १८६५ में मोहिं श्रीमहाराजानि के राजा सकल गुणनिधान ज्ञानवान् जगत् उजागर दयासागर प्रजापालक गिलबर्टलार्डमिन्टो तेजस्वी के राज्य मध्य अरु श्रीनिपट गुणज्ञाता महादाता उपकारी हितकारी कप्तान् जानविलियम् टेलरन क्षत्रीकी आज्ञासों औ श्रीमान् धीमान् दयायुत डाक्टर विलियम् हंटरसाहब की सहायताते अरु श्रीबुद्धिमान् सुखदान लिप्टेन् एब्राहाम्लाक्टरर्तावेलके कहे सों वाही कविने राजनीति ग्रन्थ छपवायो पाठशालाके विद्यार्थी साहिबनिके पढ़बेको ॥

दो० ब्रजभाषा भाषत सकल सुरवासी सम तूल।
ताहिबखानत सकलकवि जानि महारसमूल॥

या राजनीति के पढ़े सुनेते मनुष्य ब्रजभाषा में निपुणहोयँ अरु जितेक संसार के व्यवहार की बातें हैं तिन माहिं प्रवीण॥

प्रथम वा ग्रन्थमें ऐसे लिख्यो है कि जे चतुर हैं ते आपको अजर अमर समान जानि विद्या अरु धनकी चिन्ता करतुहैं अरु जैसें काहूकी चोटी काल गहेहोय ऐसो समझ वे धर्मकरत हैं पुनि ऐसे कह्यो है कि सब पदार्थन में विद्यारूपी पदार्थ उत्तम है क्योंकि आहारकी देनवारी पुण्यमार्गकी दिखावनहारी अरु सदा चतुराईकीदाताहै जाकोभागी भाग न लैसकै अरु मोलनाहीं क्षय नाहीं यह गुप्त धन है याको चोर ठग राजा छलकरि न लैसकै विद्या देतिहै नम्रता नम्रता पायेभयो सुपात्र सुपात्रभये मिलतुहै धन धन मिलेकरतुहै धर्म धर्मते सुखीरहतुहै अरु जैसे नदी नारेको समुद्रलौं पहुंचावै तैसे विद्याहू नरको राजातकलेजाय आगे जैसो वाके कपारमें लिख्यो होय तैसो फल मिलै शस्त्रविद्या औ शास्त्र विद्या ये दोऊ जगत् में उच्चपदकी देनवारी हैं पर वृद्ध अवस्था में शस्त्रविद्याको देखि लोग हँसतुहैं अरु शास्त्रविद्याते अधिकप्रतिष्ठाहोतुहै। तातें बालअवस्थातेलै वृद्धअवस्थालौं शास्त्रसंग्रह करनो मनुष्यको उचितहै क्योंकि जहां पण्डित प्रवेशकरतु हैं तहां धनवान् नाहीं जायसकतु। तासों बालकनिके नीतिशास्त्र सिखायबेको छलकरि कथाकहतहौं क्योंकि शास्त्रमें प्रथमही बालकनको चित्तनाहीं लागतु। पुनि ऐसेहू कह्योहै जो विद्या बालअवस्थामें सिखाइये सो भूलत नाहीं जैसे माटी के कोरेपात्रमें जो भरिये ताहीको गुण लहै याहीते पाँच प्रकारकी कथाकरि कहतु हौं पहिली मित्रलाभ कहे प्रीति कराइबेकी रीति दूजी सुहृद्भेद कहेसनेह छुड़ायबेकीभाँति तीजी विग्रहकहे युद्धकरायबेकीचालि। चौथी संधिकहे मिलाप करायबे की युक्ति संग्राम ते पहिलेहोयकै पाछे। पाँचवीं लब्ध प्रनाश कहे एक वस्तुपायकरि हिरायदेनी॥

अथ कथाप्रारम्भ ॥

दो० कवि बानी यह कूपको कथा अपार समन्द।
तैसी ये कछु कहत हौं मति है जैसी मन्द ॥

श्रीगंगाजू के तीर एक पटना नामनगर तहां सब गुणनिधान महाशील पुण्यवान् सुदर्शननाम राजाथा। वाने एक दिन काहू पंडित ते द्वै श्लोक सुने। तिनको अर्थ यह है कि अनेक अनेक प्रकारके संदेहनिको दूरि करै अरु गूढ़ अर्थनि को प्रकाशै। ताते सब की आँखिशास्त्रहै। जाहिशास्त्ररूपी नेत्रनाहींसो आँधरो है। अरु तरुणापन धन प्रभुता अविवेकता ये चारों एक एक अनर्थ की करनहारी हैं अरु जहां ये चारोंहोयँ तहां न जानिये कहाहोय यह सुनि राजा अपने पुत्रनकी मूर्खता देखि चिन्ताकरि कहन लाग्यो कि ऐसे पुत्रभये कौनकामके जे विद्याकरहीन अरुधर्म सों रहित ते पुत्र ऐसे जैसे कानीआँखि देखिवेको तौ नहीं परदुखनी आवै तौपीरकरै। कह्योहै पुत्र ताहीको कहिये जाके जन्मेते कुल की मर्य्यादहोय अरु यौंतो संसार में मरके को नाहीं उपजतुहै पर सज्जन अरु विद्यावान् जो पुत्र वंशमें होतुहै सोपुरुषसिंहहै जैसे चन्द्रमाते आकाश शोभापावतुहै तैसे वा पुत्रसों कुलजाकोनाम गुणीनकी गिनती में लिखनी ते नाहीं लिख्योगयो ताहीकी माता को बाँझकहतुहैं अरु दान तप शूरता विद्या अर्थ लाभमें जिनको यश नाहींभयो तिनकी माताओंने केवल जनतेहीकोदुःखपायोहै पै पुत्रको सुखनाहीं देख्यो कहतुहैं कि जिनने बड़ेतीर्थनमें अति कठिन तप व्रत किये हैं तिनके सुत आज्ञाकारी धनवान् पण्डित धर्मात्मा होतुहैं ये छः वस्तु संसारमें सुखदायक हैं सदा धनकी प्राप्ति शरीरआरोग्य स्त्रीते हित नारीमिठबोली पुत्र आज्ञाकारी अरु विद्यातें लाभ ॥

इतनो कहि पुनि राजा बोल्यो कि मेरेपुत्र गुणवान् होयँ तौ भलो। यह सुनि कोऊ राजसभा में ते बोल्यो कि महाराज आयु

कर्म वित्त विद्या अरु मरण ये पांच बात देहधारीको गर्भहीमें सिर-जीहै ताते जो भावी में है सो विनाभये नहीं रहति जैसे श्रीमहादेवजीको नग्नता अरु श्रीभगवान्को सर्प्पशय्या तासों चिन्ता मतिकरौ जो तिहारे पुत्रनिके कर्ममें विद्यालिखी है तो विद्यावान् होयँगे पुनि राजा कही यह तौ सांचहै पर मनुष्य को परमेश्वरने हाथ अरु ज्ञान दयो है सो विद्यासाधनके अर्थ जैसे एकचक्रकोरथ न चलै तैसे बिन पुरुषार्थ किये कार्य सिद्धि न होय ताते उद्यम सदा करिये कर्म कोई आसरोकरि न बैठि रहिये कह्यो है कि जैसे कुम्हार माटीलाय जो कछु कर्योचाहै सो करै तैसे नरहू अपने कर्मसमान फलपावै कर्म तो जड़है वासों कछु न होय उद्यमकर्ता है तासों कर्ता कर्मको प्रेरै तब भलो बुरो कर्ता कर्मके संयोगते होय अरु केवल कर्म कोई आसरोकरि बैठिरहनो कपूतको काम है अरु जाके माता पिता सुतको विद्याको उद्यम न करावै ते शत्रु जानिये कह्यो है। कि मूढ़पुत्र पंडितनकी सभामें शोभा न पावै जैसे हंसनमें बगुला न सोहै आगे राजाने यह विचारि पण्डितन की समाजकरिकह्यो हे पण्डितौ तुममें कोऊ ऐसो पंडितहै जो मेरेपुत्र-नको नीतिमार्गको उपदेशदै नयोजन्मकरै कह्यो है जैसे कांच कांचनकी संगतिपाय मरकतमणि जनाय तैसे साधुकी संगति में बुद्धिपाय मूर्खहू पण्डितहोय अरु नीचकी संगति में नीच॥

दो० संगति कीजै साधुकी हरै और की व्याधि।
ओछी संगति नीच की आठौं पहर उपाधि॥

तहाँ राजाकी बात सुनि विष्णुशर्मावृद्धब्राह्मण सकलनीति शास्त्रको जान बृहस्पतिसमान बोल्यो कि महाराज राजकुमार तौ पढ़ाइबे योग्य हैं अयोग्यको विद्या न दीजिये क्योंकि वह पढ़ै तौ सिद्ध न होय अरु जो सिद्धहोय तो अनीति विशेषकरै विद्याको गुणछाड़ै अवगुण दृढ़करि गांठि बाँधै ताते कुपात्रको न पढ़ाइये जैसे बिलावको नवोनवो भोजन खवाइये तौहू बि-लुरवेकी घात न तजै। पुनि कोटि यतनकरि बगुल को पढ़ाइये

पर सुवा सों न पढ़ै। जो मुनिधर्म में निपुणहोय तौहू मछरी मा-
रिबेकीघात अधिक सीखै। महाराज तिहारे कुलमें तो निर्गुणी
बालक न होयँ ज्यों मणि माणिककी खानिमें कांचन उपजै हम
विद्या बेंचतनाहीं तुमते कछु लेत नाहीं। पर तुम्हारी प्रार्थना है
याते हौं तिहारे पुत्रनि को सहजस्वभावही छःमहीना में
नीतिमार्ग में निपुणकरिहौं॥

यह सुनि राजा वृद्धब्राह्मण विष्णुशर्माते बोल्यो अहे पुहुपकी
संगतिते देख्यो नान्हें कीटहू सज्जननिकेमाथेचढ़तुहैं तातेतिहारे
सत्संगते कहा न होय जैसे पाथरकी प्रतिष्ठा किये सबमानुष
देवता करिपूजें। पुनि उदयाचलपर्वत की वस्तु सूर्यके उदयभये
सर्व सूर्य्यसमानही दीसैं सुसंग ते नीचकीहू प्रतिष्ठा होय॥

चौ० कीटभृंगि ऐसेउरअन्तर। मनस्वरूप करिदेत निरन्तर॥
लोहहेम पारसके परसे। या जगमें यह सरसे दरसे॥

दो० शेष शारदा व्यास मुनि कहत न पावैं पार।
सो महिमा सतसंगकी कैसे कहै गवांर॥

तुम मेरे पुत्रनि को पण्डित करिबेयोग्यहो। ऐसे वा राजाने
बिनतीकरि ब्राह्मणको अपनेपुत्रसौंपे तब वह विप्र राजपुत्रनिको
लै एकऊंचेमंदिर में जायबैठ्यो कोऊ समय पायकह्यो सुनो महा-
राजकुमार॥

दो० काव्य शास्त्र आनन्दलै रसिकनके दिन जात।
मूरखके दिन नींदमें कलह करत उतपात॥

हौं मित्रलाभकीकथाकहतहौं क्योंकि मित्रलाभमें लाभ बहुत
है एकदिन चित्रग्रीव कपोत औ कछुवा हिरण अरु मूसा ये परम
मित्रथे तिनकेमिलन औ कर्म कहतुहौं कि जे असाध्य हैं निधनहैं
पर बुद्धिमाननिते उनसोंप्रीतिहै तिनकेकाज ऐसे सिद्धि होतुहैं
कि जैसे काग कछुआ हिरण मूसाकेभये यहसुनि राजकुमारनि
कही यह कैसीकथाहै तहां विष्णुशर्मा कहतुहै॥

गोदावरी नदीकेतीर एकसेमलको वृक्ष तापै सबदिशिकेपक्षी

आय विश्रामलेतु हैं एकदिन प्रातही लघुपतनक नामक ग जाग्यो वह एककालरूप व्याधी को दूरते आवतदेखि विचारकरि कहनि लाग्यो आजभोरही की बेला अधर्मी दुराचारी को मुखदेख्यो सो न जानिये कहाहोय ऐसे विचारि लघुपतनककाग उड़िगयो कह्यो है कि उत्पातकीठाम पण्डित चतुर न रहैं मूरखभयशोक बैठ्योसहै इतेकमें व्याधी ने रूखतरे चांवलकेकनिकाडारि तापर जालपसा-र्यो तहां चित्रग्रीव कपोत कुटुम्ब समेत उड़त उड़त आयकढ्यो तिनमें ते एकपक्षी देखि बोल्यो इनचांवलनकोहौं चुग्यो चाहतुहौं चित्रग्रीवकही अरे यावनमें चांवलकहांते आये यह कछुकौतुकहै यातेयेसोको नीकेनाहींलागत सुनो जो तुम इनचांवलनको लोभ करिहौ तौ वैसेहोयगी जैसे कंकण के लोभसों एकपथिक दहदल में फँसि बूढ़ेबाघको आहारभयो यह सुनि पक्षियन कहो यह कैसी कथा है। तब चित्रग्रीव कपोतराज बोल्यो ॥

हौं एकदिन वनमें रह्यो। तहां यह देख्यो जुएकवृद्धबाघ पानी में न्हाय कुशहाथमें लै मार्ग में आयबैठ्यो। इतेकमें एक बटोही ब्राह्मणआय कढ्यो वानेजबपंथमें नाहरबैठ्यो देख्यो तबभयखाय वहांहींठिठक्यो। याहि भयातुर देखि सिंहबोल्यो अहोदेवता हौं जो गैलमें बैठ्योहौं सो पुण्यकरन के हेतु। अरु मोपास सोना को कंकणहै। सो श्रीकृष्णार्पणदेतुहौं। तू ले यह सुनि वाने आपने मनमें विचार्यो कि आज तो मेरोभाग्य जाग्यो दीसतुहै। पर ऐसे संदेह में जैबो योग्यनाहीं क्योंकि बुरेते भलीवस्तुहू पाइये पै आगे दुःखहोय। जो अमृत में विषहोय तो मारेहीमारै पुनि ऐसेहू कह्यो है कि बिन कष्टद्रव्य नाहीं आवतु अरु जहांकष्ट तहाँफलहै जैसे जहां माया तहाँ सांप अरु जहाँ पुष्प तहाँ कंटक। बिन दुःख सहे सुखनाहीं यह विचारि ब्राह्मण ने वासों कही कहां है वह कंकण वाने हाथपसारि दिखायो। तब विप्रको लोभ आयो अरु बोल्यो अरे तू व्याधिको करनहारो। मैं तेरो विश्वास कैसे करौं नाहर बोल्यो अहो एक तो मैं प्रातस्नानकरि दाता होय बैठ्यो

हों दूजे वृद्धभयों ताते नख दांत अरु इन्द्रियन को बलहूनाहीं अब मेरी प्रतीति क्यों न करे । कह्यो है यज्ञ वेद पाठ दान तप सत्य धीरज क्षमा निर्लोभ ये आठ प्रकार के धर्म कहेहैं ते पाखण्डी ते न होयँ हों तो आपने अर्थ के लिये दियो चाहतु हों अरु बाघ मांस खातु है सो मेरे नाहीं । पर न जानतुहै सो कहतु है जैसे कुटनी काहूको धर्म को उपदेश देइ तौहू लोक न मानै अरु ब्राह्मण हत्यारहू मानिये, ताते तू सांचो है मेरीदेह वृद्धभई अरु या कायाते मैं बहुतपाप किये हैं यह समझ सब पापतजि धर्मशास्त्र मैं पढ़्यो अरु सुन्यो है । प्राणी को ऐसो चाहिये कि जैसो अपनो जीवप्यारो है तैसोही सबकाहूको जानै अरु चारप्रकारते दानदेतु हैं धर्मार्थ भयार्थ उपकारार्थ स्नेहार्थ सो नाहीं मैं केवल तोहिं दुःखीजानि देतुहौं श्रीकृष्णचंद्रनेहू राजायुधिष्ठिरते कह्यो है कि दान दरिद्रीकोदीजे तौ अधिक फलहोय क्योंकि औषध अरु पथ्य दुःखी को देतुहैं सुखी को नाहीं । अरु जो देशकाल पात्रदेखि दान देतुहैं सो दान सात्त्विकी कहिये । ताते ब्राह्मण तू सरोवर में न्हाय आओ शुचिहोय दान ले वाकी बात सुनि लोभको मारेउ ज्यों वह सरोवरमें उतर्‍यो त्यों दवमें फँस्यो । जबकीचते पांव न काढ़िसक्यो तब बाघहौंलेहौले वाकी ओर चल्यो । ब्राह्मणकही अहोतुमकाहेको आवतुहौ बाघकही कि तू पानी में ठाढ़ोरह । तोपै प्रयोग पढ़वाय कंकणदै स्वस्ति शब्द सुनौंगो यह कहत कहत पासजाय वाको फँस्यो देखि नरहटी धरी तब विप्र अपनेमनमें कहनिलाग्यो कि दुष्टको धर्मशास्त्र वेद को पढ़िबो कछुकाम न आवै क्योंकि आपनो स्वभाव कोऊनाहीं तजतु जैसे गायको दूधस्वभावही ते मीठोहोतु है कछु वाके खैबेपीबे ते नाहीं अरु जाकी इन्द्रिय मन वशनाहीं ताकी क्रिया ऐसे जैसें हाथी को स्नान उतन्हायो इतफेरि ज्योंको त्यों । तातेमैंभली न करीजो बाघकीप्रतीतिकरी सब अपनेकुलव्यवहारते चलतुहैं जौलौं यह विचारकरै तौलौं नाहर ने वाहिमारिभक्षणकियो । तातेहौं कहतुहौं कि बिनविचारे काम कबहूं न करिये ॥

कुं॰ विना विचारे जो करे सो पाछे पछिताय।
काम बिगारै आपनो जगमें होत हँसाय॥
जगमें होत हँसाय चित्त में चैन न पावै।
खान पान सन्मान रागरँग मनहिं न आवै॥
कहिगिरिधर कविराय दुःखकछुटरत न टारे।
खटकतहै जियमाहिं कियो जो विना विचारे॥

कह्यो है पचायो अन्न पण्डित पुत्र पतिव्रता स्त्री सुसेवित राजा विचारिकरि कहिबो अरु करिबो इनते बिगार कबहूं न उपजे। यह सुनि एक परेवा बोल्यो अहो याडोकराकी बातैं आपदामें कहालौं विचारैं ऐसे संदेह करिये तो भोजन करनोहू न बनै क्योंकि अन्न पानीमेंहू संदेह है। ऐसो विचार कर्‌यो करैं तो सुखसों जीवनहू न होय कह्यो है कि तृषावन्त असंतोषी क्रोधी सदासंदेही जो और के भागकी आशकरै अतिदयावन्त ये छहों सदा दुःखीरहैं इतनी कहि वह परेवा चावल चुगन उतर्‌यो वाके साथ सब उतरे तब चित्रग्रीवने विचार्‌यो कि इनकी लार जो होय सो होय पर साथ छोड़नो उचित नाहीं कह्यो है मनुष्य अनेक शास्त्रपढ़े औरन को उपदेश देइ पर लोभ आयघेरै तब बुद्धि न चलै आगे उनके साथ चित्रग्रीवहू उतर्‌यो अरु जब वे पखेरू जाल में आये तब वाने जालकी जेवरी खैंची सब बझे तब जाके कहे उतरेथे वाकी निन्दा करनि लागे ऐसे औरहू ठौर कह्यो है कि सभामें सबते आगे होय कामकरै जो सँवरै तो सबको फल समान होय औ बिगरै तो दोष वाहीको देइँ जो आगे बढ़ै वाकी निंदासुनि चित्रग्रीव बोल्यो अरे याको दोष नाहीं जब आपदा आवतुहै तब मित्रहू शत्रु होतु है जैसे बछराके बांधिबे को गायकी जांघही थांभ होतु है॥

दो॰ वधिक वध्यो मृगबाणते रुधिरो दियो बताय।
अतिहित अनहित होतुहै तुलसी दुरदिन पाय॥
यथा ज्योतिषआगम जानसब भूतभविष्य वर्त्तमान।
होनहारि जब होति है उलटि जातु है ज्ञान॥

ताते बंधु सो जो आपत्तिमें काम आवै औ बातको पछितायबो कुफूलको कामहै। याते धीरजकरि छूटनिको उपायकरौ। कह्यो है॥

कुं० बीती ताहि बिसारि दे आगे की सुधि लेय।
जो बनिआवे सहज में ताही में चित देय॥
ताही में चितदेय बात जोई बनिआवे।
दुरजन हँसे न कोइ चित्त में खेद न पावे॥
कहिगिरिधरकविराय यहै करिमन परतीती।
आगेको सुख होय समझ बीती सो बीती॥

पुनि कह्यो है कि आपदामें धीरज सम्पदा में विनय सभा में वचन चतुराई संग्राम में पराक्रम यशमें रुचि पढ़िवे में व्यसन ये महत् पुरुषन के स्वभाव हैं। अरु पुरुषको छः दोषको सदा छोरे चहिये निद्रा अधीरता भय क्रोध आलस्य शोक। इतनी कहि पुनि चित्रग्रीव बोल्यो अब सब एक मतिहोय बलकरो या जालको लै उड़ो। ऐसे कह्यो है थोरेऊ मिलि एकोकरैं तौ बड़ो काम सिद्ध होय जैसे घास मिलाय जेवरी बटैं तामें हाथी बांध्योजाय। यह सुनि सब बलकरि जाललैउड़े अरु व्याधीने दूरगये देखे तब मन में कह्यो अबहीं सब एक मति हैं उतरि हैं तब देखलेउँगो। यदि जाल धरती में न गिर्‌यो तद वधिक निराशहोय बैठ्यो। तहां परवेरू चित्रग्रीव सों कहन लागे अहो राजा व्याधी तौ हमारे मांस की आश छोड़ि बैठ्यो। पर अब जालसों कैसे कढ़ैं। चित्रग्रीव कही अरे सुनो या संसारमें माता पिता अरु मित्र ये तीनों स्वभावही ते हित करतु हैं। ताते एक हमारो मित्र हिरण्यकनाम मूसा विचित्र वन में गण्डकी नदी के तीर रहतु है। तहां चलो तौ वह हमारे बन्धनकाटि है। ऐसे विचारि ईंदुरके द्वारकोचले अरु वहाँ हिरण्यकहू आपने द्वारपर बैठा था। सो परेवानिको आवतु देखि बिलमें पैठि चुप ह्वै रह्यो। तब चित्रग्रीव कही मित्र बाहरआओ। मित्रको बोल पहिंचान बाहरआय बोल्यो मेरे आज बड़ेभाग्य जो मित्र चित्रग्रीवने मोपै कृपाकरि आय दर्शन दियो। अरु जाल में

परखेरुनको देखि कह्यो मित्र यह कहाहै। उन कही वन्धु यह पूर्व जन्मको पाप है। जाके भाग्यमें जैसो लिख्यो है ताको तैसो फल मिलतुहै। अरु रोग शोग बन्धन और दुःख आपने किये कर्मको फलहै। कह्यो है॥

कवित्त॥

होत उदोत प्रभाकर जो दिशि पश्चिम तौ कछु धोखो नहीं है।
फूलै सरोज पहारन माहिं औ मेरु चलै तौ चलै कवहीं है॥
पावक शीतल होत सभै इक मोतियराम विचार कही है।
अंक मिटै न लिखे विधिके यह वेद पुराणनि माहिं सही है॥

यह सुनि मूसा चित्रग्रीवके बन्धन काटनि लाग्यो। तव चित्रग्रीव कपोतराज वोल्यो हितू पहिले मेरे संघातीन के फन्द काटौ तापीछे मेरे काटियो। ईंदुरकही प्रीतम ये वन्धन कठिन मेरे दांत कोमल। ताते पहिले तेरे वन्धनकाटि तापाछे कटैंगे तौ औरको काटिहौं। चित्रग्रीव कही मित्र यह नायकको कर्मनाहीं जो अपने साथीन को बँधाय आप छूटै। यासों पहिले ये छूटलेयँ तौ हमारो छूटनो वनै। पुनि मूसा वोल्यो भाई आपनी छोरि पराई वात कहनी यह नीति नाहीं कह्यो है कि दुःख पायके धन राखिये धनदे स्त्रीकी रक्षाकीजे अरु धन स्त्रीजाय तौ जान दीजे। पर आपनपौ राखिये क्योंकि धर्म अर्थ काम मोक्ष ये चारपदार्थ प्राण के राखे रहैं अरु गये जायँ। वहुरि चित्रग्रीव कही मित्र नीति तौ ऐसेही है पै पंडितहोय सो शरणागत वत्सल चाहिये कह्यो है पराये हेतु धन प्राणदीजे क्योंकि एकदिन तौ शरीरको नाश होगा ताते और के निमित्त आवै तौ यासों कहा भलो है। याते तू मेरे अनित्य शरीर राखिवेको यत्न छांड़ि अरु नित्य अविनाशी जो यश ताके राखिवे को उपायकर। कह्यो है अनित्य देहते नित्य यशपाइये अरु मलिनते निर्मल वस्तु। ताते शरीर अरु यशमें वड़ो अंतरहै। यह सुनि हिरण्यक संतोषकरिवोल्यो। हितू तोहिं इन सेवकनिके सनेह ते त्रिलोकीको राज्य वूझिये। यहकहि उन सबहीके बंधनकाटे अरु

कही बन्धु तुम अपनी बुद्धिके दोषते बँधे पर अब मनमें दुःखजनि करौ। कह्योहै कि पक्षी एक योजनते भूमि पर्यो अन्नदेखै परजाल न देखै। ताते तिहारी मतिको दोष नाहीं क्योंकि चन्द्र सूर्यहू ग्रह पीड़ा पावतुहैं अरु गज भुजंगहू बन्धनमें परतुहैं। पंडित निर्धन होतु हैं अरु समयपाय पशु पक्षी नभचर जलचरहू पर सब होय दुःख पावतु हैं। जो भावीमें होय सो विनाभये नाहीं रहतु। ऐसे हिरण्यकने चित्रग्रीवको समझाय मनोहर वचन सुनाय खवाय प्याय कुटुम्ब समेत विदाकियो अरु आपहू बिलमें गयो। तब लघुपतनक काग जो प्रातही व्याधी को देखि भाग्यो रहै वाने ये समाचर पाय आपने मनमाहिं कहो कि संसार में मित्राई बड़ो पदार्थ है। देखौ मित्र कौन ठौर काम आयो यह विचार रूखते उड़ि मूसकके वारजाय बोल्यो अहो हिरण्यक तुमको मेरोप्रणाम है अरु तुम्हें बड़ो जानि मित्राई करनि आयो हौं। यह सुनि हिरण्यक बोल्यो अरे तू को है। इन कही हौं लघुपतनक नामकाग हौं यह सुनि हिरण्यक हँसिकरि बोल्यो मोसों तोसों कैसी मित्र-ताई। अरे शत्रुसों मिताई करनो विपत्ति को मूल है अरु हम तिहारे भक्ष्य तुम हमारे खानहारे। याते जहां मित्राई बूझिये तहां करौ। अनमिल संग न होय अरु जो होय तो वैसेहोय जैसे स्यारने बँधायो हरिणको अरु छुड़ायो कागने। काग बोल्यो यह कैसी कथाहै। तहां मूसा कहतुहै॥

मगधदेश में चम्पकनाम वन। वहां अनेक दिनते एक चम्पा के रूखपर सुबुद्धि नाम काग अरु वाकेतरे चित्रांगद नाम हरिण रहै उन दोउनमें अतिप्रीतिरही। तहां हरिणको एकदिन काहू स्यारने हृष्टपुष्ट देखि आपने मन में विचार्यो कि यासों प्रीति करौं तो याको मांस खैवे को मिलै। यह विचारि हरिण के पास आय बोल्यो मित्र तुम कुशलतेहो मृगकही भाई तू कोहै। पुनि हरवेते उन कही हौं क्षुद्रबुद्धि नाम स्यारहौं। या वन में मित्रकरि हीन निरबन्धु अकेलो वसतुहौं। आज तिहारो दर्शन पायो मेरे

जीमें जी आयो अब तिहारे प्राँयनि तररहिहौं। ऐसे बातन लगाय वाके संग लाग्यो। सांझभई तब कुरंग आपने आश्रम को चल्यो अरु वहऊ साथ है लियो। निदान चलत चलत वहां आये जहां मृगको मित्रकागरह्यो। स्यारको देखि काग बोल्यो मित्र यह दूसरो तिहारे साथको है। मृगकही यह क्षुद्रबुद्धि नाम स्यारहै औ मोते मित्रताई कियो चाहतु है। कागकही हितू वेग परदेशी अनजान सों प्रीति न कीजिये। कह्यो है जाको शील स्वभाव आश्रम न जानिये तासों मित्रता न करिये। अरु नीति तो यों है कि वाको अपने घरमें वासहू न दीजे न जानिये कैसोहोय जैसे अनजाने बिलावको वास दे दीन गीधपक्षी मार्योगयो। मृगबोल्यो यह कैसी कथाहै तहां काककहतुहै॥

गंगाजूकेतीर गृध्रकूटनामपर्व्वत। तहां एकपाकड़कोरूख। वाके खोड़रमें एकअतिबूढ़ा गीधरहै। तहां और पक्षी आपनो चुनिल्यावें। तामेंतें थोरो २ गीधकोहूवांटदें जासों वहजीवै। अरु जब वे पक्षी चुगबेकोजायँ तब गीध उनके छौनानिको रखवारी कियोकरै। एकादिन दीर्घकर्णनाम बिलाव पक्षीनके शिशु खैबे को वा रूखपै चढ्यो। वाको देखि वे छौना पुकारे। तबगीधने उनकीपुकार सुनि खोड़रते मूड़निकासिकह्यो अरे यहको है। तबबिलावगीधकोदेखि डरि आपनेमनमांहिं कहनिलाग्यो कि जो ह्यांतेभागिहों तोयहपाछे दौरिमारैगो यासों याकेपास गयेहीबनै यहविचारि सरलस्वभाव होय गीधके पासआय दण्डवत् करि बोल्यो तुमबड़ेहौ गीध कही तू कोहै अरु। इतक्यों आयो है दूररहिनानहीं अबहींमारतु हौं। बिलावकही स्वामी प्रथममेरे आवनको कारण सुनिलेव। ता पाछे जोमनमाने सोकरियेगा। मैंने ब्रह्मचर्य ब्रतपालनकियोहै अरु चांद्रायणब्रतको मेरेनियमहै। अबहीं गंगाजूस्नानकिये आवतुहौं गैलमें पक्षीनकेमुखतें तिहारीबड़ाई सुनी कि तुमज्ञानचर्चामेंनिपुणहो ताते तुमसों धर्मउपदेश सुनिबेको आयोहौं। अरु विचारऐसो है कि जोकोऊदिन ऐसेसाधुकीसंगतिमेंरहौं तौपवित्रहोउँकह्योहै॥

दो० हियते मिटै असाधुपन लहै अगाध विवेक।
लालजु संगति साधुकी हरै उपाधि अनेक॥

मेरोतौयहमनोरथहै। यापरमार्योचाहौ तौमारौ। कह्योहैगृहस्थको ऐसो चाहिये कि वैरीकोवैरीहू आपने घरआवै तौहू वाकी पूजाकरै जैसे वृक्षको कोऊ काटनिआवै तौ वह वाहूपर छाँहकरै याते बूढ़ेके घरबालकहू पहुनोआवै तौ सेवा योग्यहै अवस्थाको विचार कछुनाहीं पाहुनो घरआवै ताको सबते बड़ोकरि मानिये यथायोग्य पूजाकीजे। जो औरकछु घरमें न होय तौ मीठे वचन तृणको बिछौना शीतलजल दे अतिहितकै मिलबैठे। अरु इतनोहू न करै तौ जाकेघरतें अतिथि निराशजाय वाको धर्मलैजाय आपनो पाप दैजाय। याते साधु निर्गुणहूपर दया करतुहैं जैसे चन्द्रमा सबठाम प्रकाशकरै। गीधबोल्यो बिलावको मांसतें अधिकरुचि होतिहै अरुह्यां पक्षिनके शिशु रहतहैं ताते तोसों हौं कछुकहिनाहींसकतु। पर जो तू यहांरहै तौ इनछौनानितें कपट जिनकीजौ। यहसुनि बिलाव ने भूमिमें हाथछुवाय कानहाथ धरि कह्यो स्वामी मोते ऐसीकबहूं न होय। धर्म शास्त्र पढ़ि सुनिमैं वैराग्यदशा गही है। अरु जीवहिंसा बड़ो अधर्महै। सबशास्त्रनिमें वर्जितहै। कह्योहै साधुको ऐसोचाहिये कि परायो अपराध सहै सबको पालै सो स्वर्गलोकपावै। यामें संदेह नाहिं क्योंकि धर्म सदासहायहोय अरुजाकोमांसखाइये सोतो जीवहीसों जाय खानिवारेको छिनएक जीभही को स्वादु ताते आपनोसो जीव सबकाहूको जानिये। कह्योहै जो वनके कंदमूलफल फूलपातसों पेटभरै तौ जीवहिंसा काहेकोकरिये। ऐसेकहि प्रतीतिबढ़ाय बिलाव गीधके समीपरह्यो। कोऊ समयपाय द्वैचारिपक्षीनकेछौनानिको पकरिल्यायो। जब वे शिशुपुकारे तब गीधबोल्यो अहोदीर्घकर्ण इनबालकनि को तू काहे ल्यायो है वाने कही स्वामी मेरे बालक मोते बिछुरे हैं। ताके हेतु इनते दिनकटी करतुहौं ऐसे कहि यद अपनो मनोरथ साध्यो तद बिलाव ह्यांते परायो अरु

पक्षिन आय अपने वालकन के हाड़ चाम गीधके खोड़र समीप परेपाये। तब उननि जान्यो कि हमारे छौना या पापी विश्वा-सघाती चाण्डाल ने खाये। ऐसे समझि सबनि मिल गीधको जीवसों मार्‍यो ताते हौं कहतुहौं कि बिनजाने मित्राई कबहूं न करिये यह बात सुनि स्यार क्रोधकरि बोल्यो मित्र जा दिन तुम हरिण सों मित्राई करी ता दिन यह तिहारो कुल स्वभाव कहा जानतुहो जो मिलबैठ्यो। याते आपनो परायो कहनो मूर्खनि कोकामहै। पण्डितको तौ सब आपनेही हैं जैसे मृग हमारौ मित्र तैसें तुमहूं। अरुभलौबुरौ तौ व्यवहारहीते जान्योंजातुहै। हरि-णकही मित्रविवादक्योंकरतुहौ। जितेकमिलरहैं तितेकहीभले काककही भाईतुमजानौ इतेकमें सब आपने आपने उदरकी चिं-ताकोगये अरुसांझको आयइकट्ठेभये। याहीभांति वहांरहनिलागे कितेकदिनपाछे स्यारने हरिणको एकलौ पाय कह्यो मित्र हौं ति-हारेलये आछौहर्‍यो कोमल यवको खेत देखि आयोहौं। जो मेरी गैल चलौ तौ दिखाऊं। यारीतिकपटकरि वाको कुमार्गमेंल्यायो। अरुवहू कुविषनकोमार्‍यो लोभकरि वाकेसंगही उठिधायो। ऐसे नितवाके संगजायजाय खायखाय आवै। एकदिन वा खेतके रख-वारेने हरिणको आवतुदेखि फांदरोप्यो। ज्योंहीं यह चरबेको पै-ठ्यो त्योंहीं बझयो तब मन में कहनिलाग्यो कि मित्र बिन मोहिंया संकटते को निकारि है। अरुइतस्यारवाको फँस्योदेखि नाचिनाचि मनमें कहनिलाग्यो कि मेरे कपटको फल आज मिलैगो जबरख-वारो याकोमांस भक्षणकरैगो तौ हाड़चाममें जो मांसलपट्यो रहैगो सो हौं खाऊँगो। यहतौ या विचारमें नाचिकूदिरह्यो है। अरु मृगनेजान्यो यह मेरोई दुःख देखिव्याकुलहो हाथपांवपटक-तुहै। पर यह न जान्यों कि दामकोलोभी नटुवाकीभांति कला करतुहै। आगे स्यारकी दशादेखि मृगकही भाई मेरे निमित्त तू एतौ खेद क्योंकरतुहै। कह्योहैआपदामें कामआवै सो हितू रणमें जूझै सोशूर दरिद्रमें स्त्रीकी परीक्षा लीजिये दुःखमें वन्धु जांचिये

ऐसे मृगनेकह्यो। तब स्यारने निकट जाय देख्यो कि यह तौ कठिन बन्धनमें परयो है। ताते मेरो मनोरथ शीघ्रसिद्ध होयगो। ऐसे विचार बोल्यो भाई यह जाल तौ तांतको है अरु मेरे आदित्य को उपासहै। सो दांतकरि कैसेकाटौं जो और व्रतहोय तौ कछु चिंता नाहीं पर रविके व्रतको यह विचारहै जो भंगहोय तौ सब पाछली काष्टा निरफलजाय याते आज तौ यहवातहै। काल सकारे जो मोते बनैगी सो करौंगो। ऐसे कहि वहांते उसरिपरै होयबैठ्यो। इतेक में निशा व्यतीतभई अरु हां सुबुद्धि नाम काकजाग्यो। सो विचायकरि कहनलाग्यो कि रात्रि मित्रमेरो नाहीं आयो अब कहूं खोजौं। यह कहि ह्वांतेचल्यो। आगेजाय देखे तौ जालमें बझरह्योहै। काककही मित्रयहकहाहै। उनकही हितूमैं तेरोकह्यो न मान्यो। ताही को यहफलहै पुनि काककही वह तेरो नयो मित्र कहां है। इनकही वह मेरे मांस को लोभी ह्यांहीहोयगो। बहुरि काककही भाई साधुजन अपनो सो स्वभाव सब काहू को जानै अरु दुष्टको जातीयस्वभाव है जो वातेकरै भलाई ताते वह करै बुराई कह्यो है दुष्टविनबुलाने आय पहिले पायँपरै पाछे कानाबातीकरै। हितकीरीतिमों प्रीतिजनाय कपटकर कुमार्ग बतावै। अवसरपाय घातचलावै। जैसे माछर पीठपाछे आय कानसों लागिसमयपाय डंकमारै तैसेही दुष्टमनुष्य ताते हौं कहतुहौं कि वैरीको विश्वासकवहूं न कीजे ऐसेहू कह्यो है॥

कुं० वैरी बँधुआ बानियाँ ज्वारी चोर लबार।
व्यभिचारी रोगी ऋणी नगरनारिको यार॥
नगर नारिको यार भूलि परतीत न कीजै।
सौ सौ सौहैं खाय चित्त एकौ नहिं दीजै॥
कहि गिरिधर कविराय घरै आवै अनगैरी।
हितकी कहै बनाय जानिये पूरो वैरी॥

इतेकबातैंसुनि मृग लांबीसांस लै बोल्यो जे झूंठीबातैं कहि औरको बुरो करतुहैं तिनको भार पृथ्वी कैसेसहतिहै। ऐसेबत-

राय रहेथे। इतेकमें रखवारो आवत देख्यो तब वायसने कुरंग ते कही अब तू आंखि फिराय मृतक होयरहु। जब मैं पुकारौं तब उठिभाजियो। यह सुनि उन वैसेहीकरी। रखवारो आय हिरण को देखि बोल्यो यहतो आपही मररह्यो है। याहि कहामारौं। आगे वाहि मर्योजान बंधनखोलकेचाहै कि वाहिउठावै। त्योंहीं काक बोल्यो अरु हिरण उठिभाग्यो। तब रखवारेने खिस्यायके लौठियाघाली सो स्यारके मूड़सें लागी अरु लागत प्रमानही मर्यो। ऐसे औरहू ठौरकह्यो है कि तीनदिन तीनरात तीनपक्ष तीनमास तीनवर्षमें पुण्य अरु पापको फल मिलि रहतु है॥

इतनी कथासुनि लघुपतनक काकने हिरण्यक चूहासों कही मित्र जो कदाचित् मैं तुम्हें खाऊं तौ पेटहू न भरै याते तुमसे मित्र धर्मात्मा साधुको बुरोकहि करिहौं क्योंकि चित्रग्रीव सहित सब पक्षी जब जालमें परे तब तुमने सहायताकरि उनके जीव बचाये। कह्यो है कि आपने कार्य सिद्धकरिबेको सज्जनते मित्राई करिये तौ एकदिन कामआवै। ताते हौं तिहारो पठंगौलियो चाहतुहौं कि कबहूं मेरेदुःख में सहायता करिहौ। या कारण आयोहौं तुम और मतिजानो। पुनि मूषक बोल्यो कि चञ्चलसों मित्रता कबहूं न कीजै॥

दो० कागरु भैंसा का पुरुष आन भेड़मंजार।
इन पांचन के विश्वास तें आपुनजैये हार॥

याते इनसबलिको विश्वास कबहूं न करिये बैरी मिल्यो रहै ताके हितपर न भूलिये। कह्यो है कि कैसेहू तातो पानी होय पर अग्निको विन बुझाये न रहै निबल सबल न होय अनमिलबात कबहूं न मिलै जैसे पानीमें गाड़ी अरु भूमि पर नाव न चलै पुनि ऐसेहू कह्यो कि स्त्री ते मर्मकी बात न कहिये जो कहिये तौ विरोध न करिये। करिये तौ जीवनको आश न राखिये। कोऊ ऐसेहू कहतु हैं॥

कुं० सांई येन विरोधिये कविपण्डित गुरुयार।

बेटा वनिता पवँरिया यज्ञ करावनहार ॥
यज्ञ करावनहार राजमन्त्री जो होई ।
विप्र परोसी वैद्य आप को तपै रसोई ॥
कहिगिरिधर कविराय यहैकैसीसमुझाई ।
इन तेरह तें तरह दिये वनिआवै सांई ॥

बहुरि काककही प्रीतम जो तुम कह्यो सो सब मैंसुन्यों पर मेरो यहविचारनहीं जो तुमसे द्रोहकरौं । अरु जो तुम मोसों प्रीति न करिहौ तौ तिहारे द्वारपर उपास करिकरि प्रानतजौंगो । मोहिं रामलक्ष्मणजूकी आनहै क्योंकि असाधुकीमित्राई थोरेई दिनन मेंटूटै जैसेमाटीकोपात्र फूटिकै न जुरै अरुसाधुकीप्रीति ऐसे है जैसे सुवरणकोपात्र वेग न फूटै और जो फूटै तो फेरिसंधै औ कितेक सज्जनपुरुष नारियलकी भांति रहतु हैं कि ऊपरते तौ कठिन अरु भीतर कोमल पुनि दुष्टजन की बेरकीसी रहनिहै कि ऊपर कोमल अरु भीतर कठोर । ताते सज्जन अरु दुष्टजन स्वभावहीते जान्यो जातुहै कछु रहनते नहीं अरु पवित्र दाता शूर संकोची स्नेही निर्लोभी सत्यवक्ता साधुहोतुहैं असाधु न होयँ यासों तुमहीं कहौ कि साधुजनपाय को न प्रीतिकरै । यारूपकी वातैं सुनि हिरण्यक मूसा बिलते बाहरनिकसि बोल्यो कि तेरेवचन सुनि मैं अतिसुखपायो जैसे कोऊ लूअको मार्यो स्नान करि चन्दन सब अंगपर चढ़ाय शीतल होतुहै तैसे मेरोहियो ठंढोभयो कह्यो है छः प्रकार ते प्रीति बढ़तिहै लैबोदैबो गुह्यकहिबो सुनिबो खैबो खवायबो अरु ये स्नेहके दूषणहैं सदा मांगबो अप्रियवचन कहिबो मिथ्याभाषिबो चंचलता अरु जुआ सो तोमें एकहूनाहीं यासों हौं तेरो सुविचारदेखि प्रसन्नभयों । आजते तू मेरोमित्रहै इतनीबात कहि काकको द्वारपर बैठाय मूसा बिलमें गयो अरु ह्वांते कछुखैबे की सामग्री ल्याय खवाय आपहू वांकेपास बैठ्यो । ऐसे वे दोऊह्वां रहनिलागे । एकदिन काककही भाईमूसा या ठौर तौ अतिकष्ट सों अहार जुरतुहै यासों वहांचलौ जहां वहुतचुगो सुखतेखैबेको

मिलै। पुनि मूषक बोल्यो मित्र कह्योहै कि जो सयानोहोय सो अगलो पांव धरि पाछिलो पग उठावै। ताते प्रथम ठौर विचारौ तापाछे ह्यांतेचलौ। वायसकही बन्धु तुम नीकठाम विचारो है कि दंडकारण्यवनमें कर्पूर नामसरोवर। तहां मन्थरकनाम कछुआ मेरो मित्रहै सो बड़ोपण्डित धर्मात्माहै। कह्यो है औरनके धर्म उपदेशदेनको सब पण्डितहैं पर आप धर्ममार्गमें दृढ़ताराखैं ते विरलेजनहोतुहैं। ताते मित्र वह हमको भलीभाँति राखिरक्षा करि है कह्योहै सुनो जादेशमें आपनी बड़ाई मित्र विद्याकी प्राप्ति सुसंग गुणविचार अरु तीरथहू न होय तौ वहां बसिवो उचित नहीं। मूषककही हितू ह्यां मोकोहू साथलैचलो। ऐसे बतराय दोऊ कछुआपै गये इन्हें देख कच्छपबोल्यो मेरोमित्र लघुपतनक आयो। इतनो कहि आगूबढ़ि सिष्टाचारकरि आदरसों पायँपखार आसनपर बैठाय पूजाकरनि लाग्यो तब कौआबोल्यो मित्र याकी पूजा विशेषकरि करौ। यह बड़ो धर्मात्मा हिरण्यकनाम मूसा सबचूहनको राजा है। याके गुणकी स्तुतिकरिबेको मेरो मुख नाहीं जो सहस्रमुखते शेषनागजूकहैं तौ कहिसकैं इतनी कहि चित्रग्रीवकी सबकथा सुनाई तब मंथरकने वाकी पूजाकरि पूंछ्यो आपुको वासकहां अरु ह्यां आवनो कैसेभयो तब मूसा कहनलाग्यो चम्पानगरी में संन्यासियनके मठ तामें चूराकरण नाम संन्यासीरहै सो जो भिक्षामांगि अन्नल्यावै वह ऊंचे आरा में राखै वा अनाजको हौं कूदिकूदि खाऊं कितेकदिनपाछे वाको मित्र वीणाकरण नाम संन्यासी तहांआयो चूराकरण वासों बातकरै अरु लकड़ी धरती में खरकावै तब वीणाकरणकही तू जो मेरीबात नीकै चित्तदै नाहीं सुनत सो तेरोमन कहांहै। पुनि उनकही गुरुभाईहों तौ तेरीबात हियोदै सुनतुहौं पर यह नीगुरोमूसा मेरी भिक्षाको अन्न सबखातुहै मोहिं दुःखदेतुहै याहि लालचलाग्यो भाई याको कछु उपायकरौ वीणाकरण बोल्यो याको कछू कारणहै। ज्यों एक तरुणस्त्रीने बूढ़े पुरुषको आलिं-

गन चुम्बनकरि जारको छिपायो त्यों यह मूसाहू बिनकारणनाहीं कूदतु चूराकरणकहीयाकैसीकथाहै पुनि वीणाकरणकहनलाग्यो॥

गौड़देशमें कौशम्बीनाम नगरी तामें चन्दनदासएकवनियां उन वृद्धअवस्थामें धनके मदसों लीलावती नाम और महाजन की वेटीब्याही। सो कामकी अधिकाई ते थोरेई दिननमें यौवन-वती भई जब वह भर्त्तार वाके सुखको न पूंछै तब वाहि अनखा-वनो लागै जैसे विरहिनिको चन्द अरु घामके तौंसे को सूरज न सुहाय तैसे तरुणस्त्रीको वूढ्यो स्वामीहू न भावे क्योंकि वृद्धकोदर्प कहां कह्योहै ज्यों बालकको ओषधि न रुचै त्यों वहहू वाहि नीको न लागै पर बुड़उनातो अधिक प्रीतिकरै। पुनि ऐसेहू कह्योहै न डोकराभोगकरसकै न छांड़िसकै चाटतचूसतुरहैजैसे विनादांतको कूकरहाड़पाय न खाय न छांड़ै। जब वाकीइच्छापूरण न भई तब वह वनियांकीवेटी लीलावती कुलकी मर्य्यादछांड़ि धर्मको भय नाखि लोकलाज तजि यौवनकी अधिकाईसों एक और वनियां के पुत्रते व्यभिचार करनलागी अरु कामातुरह्वै पिताके घरवसै रात्रिको जाय भर्त्तारके आगे और सों बतराय कह्योहै जो नारी पतिके साक्षात् और पुरुषसों बातें करै सो निस्संदेह परकीया होय कहतुहैं इतनी भांतिसों परकीया होति है बालहोय जाको पति वृद्धहोय कुरूपहोय विदेशहोय अशक्तहोय पास न रहै हित न करै असंतान होय। नारी इतनी भांति व्यभिचारिणी होतिहै अरु मद पीवै कुसंगमें वैठे पतिके अवगुण और सों भाषै घरघर डोलै अतिसोवै नित तनु मांजै सदा शृंगार करतिरहै रात्रि पर-धाम बसे ये नारिनके दूषणहैं अरु जिनके स्थान नाहीं ठिठाई नाहीं और पुरुषसों न वोलै लाज बहुत ते स्त्री पवित्र जानिये क-हतुहैं नारी घृतसमान अरुपुरुष अग्निसम ताते इनको संगभलो नाहीं। पुनि कह्यो है बालअवस्था में पितारक्षाकरै तरुणाई में पति रखवारी करै वृद्धापनमें पुत्र सावधानीते राखै तौ स्त्री को धर्मरहै। नातो नष्टहोय आगे एक दिन वह लीलावती बनियां

के पुत्रसाथ अपने घरमें आनन्द करि रहीही। यामें वाको पति बाहरते आयो ताहि आवतुदेखि वेगही खटियाते उतरि सन्मुख धाय आलिंगन कियो वाके देखिबेको तो द्वैआंखिहीं पर एकसों दीसतुनहीं अरु जासों दीसतुहो तापै चुम्बनको मिसकरि उनि मुखराख्यो और जारको बाहर निकारिदियो कह्योहै कि जो बृहस्पति ते विद्या पढ़े पर उत्पातकी ठांव वाहूकी बुद्धिस्थिर न रहै अरु कछू न बनिआवै सोनारी क्षणहीं में उपायकरै आगे लीलावती को आलिंगन करतिदेखि एककुटनीने कारणविचारि वाहि डाट्यो अरुकह्यो ऐसो काम फेर जनिकीजो ताते मूसाके कूदवे को कारण में जान्यो कि याके बिलमें मायाहै क्योंकि धन बिन बल नाहीं होतु कह्यो है ॥

दो० कनककनकते सौगुणी मादकता अधिकाय।
वह खाये बौरातु है यह पाये बौराय॥

ऐसे कहि संन्यासियन मिलिकै मेरे बिलते सबधन काढ़िलियो। ताके दुःखते हौं बलहीन भयो अरु मनमें उत्साह हू नाहीं रह्यो क्योंकि देह में जो बल हर्ष होतु है सो माया ते। अरु धन हीनते कछु न बनै कह्योहै धनहीन पुरुष संसारमें मृतक समान हैं जब द्रव्यहीन भयो तब निबलाई ते मोपै चल्यो न जाय पुनि चूड़ाकरण संन्यासी मोहिंदेखि बोल्यो कि यहमूषक अब सीधो भयो जैसे ग्रीष्मऋतु में नदी बलहीन होतिहै तैसो ह्वै गयो। कहतु हैं द्रव्यहीनकी मति स्थिर न रहै जापैधन सोईबुद्धिमान्। पंडित, ज्ञानी, दानी, बली, चतुर, कुलीन, गुणी है। अरु पुत्र बिन घरशून्य विद्याबिन हृदय औ दरिद्रीको संसार सूनोलागतु है पुनि देखौ धनगये कैसोहू स्वरूप होय पर कुरूप होयजातु है ऐसी बातें वा गोसाईंकीसुनी। तब मैंने आपने मनमाहिं विचार्‍यो कि अब ह्यां रहनो योग्य नाहीं कह्यो है ॥

दो० मन्त्र मैथुन ओषधी दान, मान अपमान।
मर्म द्रव्य गृह छिद्र ये प्रकट न लालबखान॥

जो कहियो तो मिथ्या आपनो गर्वगवाँवै। जब देवता असंतुष्ट होतुहै तब जो उद्यमकरै सो निष्फलजाय अहंकारी को द्वैबात जैसे धतूराकोफूल कैतो भूमिपर्यो सूखै कै महादेवके माथे चढ़ै ताते भिक्षाउपायकरि जीबो योग्य नाहीं कृपण ते मांगिबो औ मरिबो समानहै ॥

क० मान मनमानको पधानहोत पहिलेही यद्यपि निपट गुणी गिरिहू ते गरुवो। कहै कविदेव बारबार जग उच्चरतु छुट-की देतु लागै कुटकीते करुवो॥ अतिही अजानुबाहु तऊ तन थोरो दीसै मनमाहिं लसैजो हिंडोरेकोसो मरुवो। तृणहूते तू-लहूते फेनहूते फूलहूते मेरेजान सबहूते मांगिबो है हरुवो॥

पुनि चूड़ाकरणते वीणाकरण कहन लाग्यो कि पराधीनभो-जन द्रव्यदै मैथुन विद्याकरहीन प्रदेश को वास कायारोगी पराये घरसोनो ऐसेमनुष्यको जीवन मरण समान है कह्यो है लोभते चित्त डुलै कष्ट पावै मरणहोय लोक परलोकजाय। जब वा गो-साईंने ऐसेबोल कहे तब मैंने विचार्यो कि हौं लोभी असंतोषी आत्मद्रोही हौं ताते मेरी संपत्ति गई अरु संतोषीकी संपत्ति कबहूं न जाय जेसंतोषकरिअघानहैं तिनको जैसो सुखहै तैसोअसंतोषी को नाहिं कह्यो है जिनतृष्णा न राखी काहूकी सेवा न करी अधीन वचन न भाषे विरहकीपीर न सही अधीरतानकी ऐसेपुरुषनितेसो योजनधनदूररहतुहै अरु संतोषीकोहाथकीवस्तुकोहूआदरनाहीं। ऐसेविचारकै हौं निर्जनवनमें आयो तिहारोआश्रम स्वर्गसमान पायो। कहतुहैं यहसंसार विषयको रूखहै यामें द्वैफलमीठे कहतुहैं एकतौकाव्यरस दूजो साधुकोसंग इतेकबातें सुनि मंथरककछुआ बोल्यो मित्र धनमें बड़ोदोषहै। एकतौ अनेक दुःखपाय इकठौ कीजै दूजेप्राणतेहू यत्नकरिराखिये ऐसोधनकाहेकोभलो। कह्यो है जे आपनो सुखछांड़ि परायेलिये द्रव्यउपजाय राखैं ते ऐसे जैसे मोटिया मोटढोयमरै अरु भोग औरहीकरै ऐसेतो सबधनवानहीं कहावैं क्योंकि दान भोगमें तौ नाहिं। याते दरिद्रीऔधनी समान

पर धनवान्‌को एक और दोष कि वाहिगये को शोच । सो नि:र्द्धनको नाहिं पुनि कह्योहै चार बात संसारमें आय मनुष्यते होनी कठिनहैं प्रियवचन सहित दान गर्वविनज्ञान क्षमासमेत शूरता त्यागलिये धन याते धर्मका संचयकरिये अतिलोभ न करिये जैसे एक स्यार अधिक लालच करि मार्‍यो गयो हिरण्यक बोल्यो यह कैसी कथाहै । कछुआ कहनिलाग्यो ॥

कल्याणकटकनगरमें भैरवनामव्याधी सोएकदिनविंध्याचल के वनमें गयोहो सोह्वांते एक मृगमारिकांधेलिये आवतुहो गैलमें एक शूकर आवतदेखि याने लोभकरि वापै बाणघाल्यो। सो शरतो वाके लाग्यो पर मरतुमरतु वाने याहूको आयमार्‍यो इहिबीचएक दीरघरवनामस्यारक्षुधितहै आयकढ़्यो अरु इनतीननको हुआंपरे देखि विन आपनेजीमाहिंविचार्‍यो कि आहारवहुत पायो याहिअ-नेकदिनलौं खाऊंगो अरु आपनी कायापुष्टकरोंगो यह विचारि वह स्यार वधिकके पास जाय ज्यों पहिले धनुषकी जेह खानि लाग्यो त्योंहीं जेह टूटि वाके कपालमें लाग्यो अरु तत्काल प्राणदेहते निकर भाग्यो जंबुक जीवसोंगयो मांस सब हुआंहीं धर्‍योरह्यो। ताते हौं कहतु हौं कि अतिलोभकरि संचय न करिये अरु जो धन पाय न खाय न देय ताको द्रव्यजौलौंजीवै तौलौंरहै। मरेपर वाके धन जनके औरही गाहक होतुहैं जीवतुभर देखिदेखि मनरंजन करै । मरेपै वाके कामकछु न आवै याते खाइये लुटाइये सोई आपनो क्योंकि यामें स्वार्थ परमार्थ दोऊरहतुहैं । इतनी बात कहि पुनिकच्छपने मूसासों कह्यो कि अव तुम गये द्रव्यको शोच जिनकरो क्योंकि जो वस्तुपाइये योग्य न होय ताको यत्न पण्डित चतुरनाहीं करतु हैं ताते मित्र तुम चिन्ता मतकरो कह्यो है कि विद्यापढ़ेते सबपण्डित नाहींहोतुहैं जे क्रियावान् तेई पण्डित हैं जैसेरोगीकोरोग ओषधिको नाम लिये न जायखायतबहींजाय तैसे बिन उद्यम विचारकिये धनहू न आवै आंधरेके हाथ दीपक कहा करै। आपनी आंखकी ज्योति बिन प्रकाश न करै पुनि कह्यो है

दांत, केश, नख, नरस्थान छूटेते शोभा न पावै अरु सिंह शूर गज पात्र पण्डित गुणवान् औ योगी ये जहां जहां संचरैं तहां तहां आदर बढ़ावैं कहतुहैं जैसे कुआंमें दादुर सरोवरमें कमल आपही ते आवैं तैसे उद्यम किये लक्ष्मीहू आवै दुःख सुख चक्रकी भांति फिरतुहै अरु जे पुरुष साहसी शूर ज्ञानी उद्यमी हैं तिनको दुःख नहीं व्यापत । कह्यो है कि कैसोहू पण्डित गुणी तपस्वी शूर वन्धु धनवन्त होय परलोभकिये अनादरही पावे । गुणवान् स्वभावही ते वड़ो जैसे कंचनको आभूषण ज्यों कूकरकेगरेबांधै तोहू सुहावनो लागै ताते हौं कहतुहौं कि धनको शोच न करिये क्योंकि जब माताके गर्भमें विधाता वास देतुहै ताके प्रथमहीं दूध स्तन में प्रकट करतुहै औ पाछे जन्म होतुहै ऐसो विचारिये ॥

दो० जिन तोते हरये किये श्याम काग हंस सेत ।
मोर विचित्रज रंगकिये सो चिन्ता करि देत ॥

अरु सुनो धनमें एते दुःखहैं उपजतु राखतु जातु । औ वहुत बढ़ेहु धन सुख कबहुं न देय याते ज्यों उपजै त्यों दीजै खाइय । तौ-ही भलो नातो जैसे मांसको ऊपर राखे पक्षी खाय भूमिमें स्यार कूकर पानी माहिं कच्छमच्छ माटी माहिं कीराकीरी खायँ तैसे धनको चारभय राजभय अग्निभय चोरभय दुष्टभय । अरु ताहूमें यह वड़ो दोष कि माया के लोभते सेवकहोय आधीनता करै पर भावी काहूसो न टरै यासों प्रीतम तुम हमारोसाथ अव जिन छांड़ो जन्मभर यांहीं रहौ । कह्यो है संतोषकरिरहनो दानदेनो क्रोध न करनो यह साधुके लक्षण हैं । असाधुते न होयँ । इतेक सुनि लघु-पतनकृकाक बोल्यो अहोमित्रमंथरक तुमको धन्यहै अरु आश्रम के योग्यसहन्तहो । आपदामें उद्धारलेतुहो ऐसे जैसे दहदल में परे हाथी को हाथिही काढ़ैं । अरु संसार में तेई नर स्तुति करिवे योग्य हैं जे पराये दुःखमें सहायता करैं जिनके द्वारते शरणागत निराश न जाय याचकविमुख न फिरैं इतनी कहि वे तीनों वा ठावँ सुखसों खात पियतु क्रीड़ाकरतु आनन्दसों रहनलागे । एक दिन

तहां चित्रांगदनाम मृग भोरही व्याधी को डरायो आयो ताहि आवतु देखि मंथरक जलमाहिं पैठ्यो मूसा बिलमेंधस्यो काक रूखपर उड़िबैठ्यो अरु वाने दूरिलौ दृष्टिकरिदेख्यो कि याकेपाछे औरतो कोऊनाहिं यह अकेलोई आवतुहै तब काक बोल्यो भाई कुछभयनाहिं । सब निकरिबैठो यह सुनि वेऊ निकसि आये औ तीनों मिलिबैठे हरिण इनके पासआयो तब मंथरक बोल्यो मित्र तुम कुशलक्षेमते नीके आये कह्यो है उत्तम पुरुषनिको यह धर्महै घर आयेको पहिले तौ कुशलता पूंछै पुनि आदर करि बैठावै फेरि अतिसन्मान करि भोजन को पूंछै । यह उत्तम जनको व्योहारहै इतनो पूंछि पुनिकह्यो अहोमित्र इत आवन तिहारो कैसे भयो। मृग कही हौं व्याधीको डरायो आयोहौं अरु तुमते मित्राई कियो चाहतुहौं हिरण्यक कही हम तुमतो सहजही मित्रहैं औ परम्पराय तुमते हमते मित्रताई चलीआवति है । कह्यो है जो आपदा में राखै सोतो सदाहीको मित्रहै तुम इतआये सो भलीकीनी आपने घरते ह्यां नीकीभांति रहिहो यह बात सुनि कुरंगने आहारकियो अरु पानीपी रूखतरे विश्राम लियो पुनि मंथरकबोल्यो मित्र तुम कह्यो कि हौं व्याधी के डरते आयों । सो या निर्जनवनमें व्याधी कहां हरिण कही कलिङ्गदेशको राजा रुक्मांगद सर्वदिशि जीत चंद्रभागानदीके कांठेआय उतर्‍यो है । अरु सकारे इतआय या कर्पूरसरोवर में जार डारि मच्छकच्छ पकरिहै । यहबात हौं धीमर केमुखतेसुनिआयोहौं तातेह्यांरहनोभलो नाहींकह्योहै कष्टआवतुदेखि दूरितेटारिये मैं तो यह कह्यो पर अब तिहारी बुद्धिमेंआवै सो करो मंथरक बोल्यो हौं और सरोवरमें जाऊं तब काग औ मृग ने कह्यो कि पानीके जीवको पानीकोबल ऐसे है कि जैसे राजाको आपने राज्यको । पुनि हिरण्यकमूसा बोलिउठो कि भाई तुमतौ बातकोभेद न समझ ऐसोविचारकरतुहौ जैसोएकबनियाकेपुत्रने अनजाने विचारकियो अरु पाछे अपनी स्त्रीको देखि दुःखपायो । मंथरक कही यह कैसी कथाहै । तब मूसा कहतुहै ॥

बीरपुरनगर दाको बीरसेननाम राजा । ताके पुत्रभयो जाको नाम तुंगबल धरयो । जब वह समर्थभयो तब राजाने राज सुत को दयो । आप हरिभजनकरनि लाग्यो और राजकुमार राज एक दिन वह राजपुत्र देवदर्शनकिये आवतुहो । वाने काहू बनियांकी स्त्री तरुणि अतिरूपवती गैलमें देखी । वाकोरूपचाहि यह काम को सतायो निजमंदिर माहिं आयो । अरु वह लावण्यवती हू राज- कुमारको देखि कामातुरहोय आपने धामको गई । कह्योहै स्त्रि- यनके ना कोऊ प्रिय औ ना अप्रिय । जैसे बनमाहिंगैयां नयेनये हरेहरे तृण चरैं और मन संतुष्ट करें तैसे युवतीहू नवीननवीन नर चाहैं । पुनि राजकुमारने एक दूतीबुलाय वाको अपनी अवस्था जताय वाकेनिकट पठाई । वानेजाय राजपुत्रकी अवस्थासुनाई । तब उनकह्यो हौंतो पतिव्रताहौं । अरु नारीको ऐसोकह्यो है कि बिन स्वामीकी आज्ञा कछुकाम न करे । याते जो मेरो भर्त्तार कहै गो सो मैं करूंगी । कुटनीने कह्यो यह तैं भलीकही । हौं ऐसेही करिहौं । इतनौं कहि दूती राजपुत्रपै आई अरु वाको संदेशो कह्यो । राजकुँवर कही यह कैसे ह्वैहै । बहुरि कुटनी कह्यो महाराज कछु चिंता जिन करौ । उपायकरिहौं कह्यो है जो कार्य्य उपायते होय सो बलते न होय जैसे स्यारनि उद्यमकरि गजकौं कीचमाहिं फँसायके मारयो । राजपुत्र कही यह कैसी कथाहै । तब दूती कहति है ॥

ब्रह्मारण्यवनमें एककर्पूरतिलकनाम हाथी रहै ताहि देखि सब जम्बुक मतौ करनिलागे कि काहूप्रकारते या गजको मारिये तो चौमासे भर खैवेको आहार मुकतो होय । यह सुनि तिनमेंतेएक वृद्धस्यारबोल्यो या हाथीकौं हौं युक्तिकरि मारिहौं । इतनी कहि वहबूढ़ो जम्बुक गजके निकटगयो अरु धूर्त्तने मनमाहिं कपटकरि वासों यों कह्यो हे देव तुममोपर कृपाकरो । गजकही अरे तू को है अरु कहांते आयो है । इनकही सब बनवासिन मिलि मोहिं तुमपै पठायो है औ विनती करि कह्यो है कि या वनमें हमारो

कोऊ राजानाहिं। वनके राजा तुमहौ सबगुण संयुक्त। कह्यो है जो कुलवंत आचार प्रताप धर्मनीति संयुक्तहोय ताको राजाकरिये। अरु राजानीकोहोय तो धन स्त्रीको संचयकरिये। कहतुहैं प्राणिकोजैसो मेहको आधार तैसोई राजाको भरोसो है क्योंकि राजाके भयते सबधर्महैं। दुर्बल रोगी दरिद्री पतिहूकी पत्नी भूपालके भयते सेवाकरै। याते अब तुम विलम्ब जिनकरौ बेगचलौ शुभकर्ममें ढील करनि योग्य नहीं। यहकहि स्यार हाथीको लै चल्यो। अरु गजहू राजपदके लोभको मार्‌यो वाकेसाथहैलियो। आगे आगे स्यार पाछेपाछे कुञ्जर ऐसे दोऊ चले। जापैड़ेमाहिं वर्षाकी दलदल है रहीही ताही गैल वह याको लै चल्यो। आगे जाय हाथी दोमें फँस्यो। तब बोल्यो मित्र अबहौं कहाकरौं। स्यार कही मेरीपूंछ पकरिचिल्योआव। यों सुनाय पुनि जब देख्यो वह यामाहिंफँस्यो। तबइनकही तुमसोच जिनकरौ। हौंतिहारेनिकारिबेको आपने सजातीभाइयनको टेरिल्यावतुहौं। इतनीकहि सब जम्बुकनि बोलि लै आयो अरुकाढ़निकेमिसदाँतनितेवाको चामफारिफारिखायो। गज चिचाय चिचायके मर्‌यो। इतनौ कहि दूतीबोली महाराज उपायते कहा न होय। याते अब हौं कहौं सो तुमकरौ। प्रथमतौ लावण्यवती के पतिकौं चाकर राखौ। पाछे जो हौं कहौं सो कीजो। यहसुनि राजकुमारने लावण्यवतीकेभर्तार चारुदंतको चाकर राख्यो। पुनिदूतीने राजपुत्रको सब छलछिद्र की बातैं सिखायदई। तब उबि वाकी प्रतीतबढ़ाय वाहि सब कामसे प्रधान कियो। एकदिन राजपुत्रने चारुदंत सों कह्यो कि आजतें लै हौं एकमासलौं श्रीभवानीजूको व्रत करिहौं। तुम काहू सौभाग्यवती स्त्रीको ल्यायो। आज्ञापाय चारुदंत काहू असती स्वइच्छाचारिणी को लै आयो। तब राजपुत्र ने पवित्रहोय वाहि एकांतलै जाय पाँयपखाल भोजनकरवाय केसर कपूरचन्दनसों चरचि वस्त्र आभरण पहिराय अति आदर मानते बिदा कियो। तब गैलमें जाय चारुदंतने लोभकरि वा नारीसों कह्यो कि या

द्रव्यते कछुमोहूंको बांटिदै । उनकही मोंहिं राजकुमारने दयो है । मैं तोहिं क्यों बांटि देउँगी । निदान वाने धन न दियो । तब चारुदंतने आपने मनमाहिं विचार्‌यो कि राजपुत्र तौ नित एक महीनालौं इतनोधन देयगो । याते आपनी स्त्रीको क्यों न ल्याऊं जुइतेकद्रव्य सेंतमेत आपने घर लै जाऊं । यों विचारि वह निज घरआय लावण्यवतीसों बोल्यो कि हे प्रिये राजकुमार इतनौं धन नितप्रति देइगो । जो तूजाय तौ वह सब धन आपने गेह माहिं आवै । लावण्यवती बोली स्वामी हौं तिहारी आज्ञाकारीहौं जो तुम कहो सो मोहिंप्रमाणहै । निदान लोभकेमारे वाने अपनी नारि राजपुत्रको आनदई । पुनि राजकुमारने वाहिदेखि मनमें कही कि जाके मिलनकी अभिलाषारही सोतौ आय मिली अब अपनो मनोरथ क्यों न पूरोकरौं । यह समुझि निरालो करि वाने आपने मनकी आश पूजी अरु धनदै वाहि बिदाकियो । तब चारु-दंत बनियां निजमन्दिरमें जाय स्त्रीको श्रृंगार छिन्नभिन्न देखि आपनी करणी औ करतूततें आपही पछितायो ॥

दो० अर्थ न समझौ बात को ग्रन्थ न दीनौ मन्त्र ।
नगर लोग के देखते भयो भाँड़ महजन्त्र ॥

इतनी कथा कथ फेरि मूसाबोल्यो अहोमित्र मंथरक जो तुम आपनी ठौरते अनत जायहौ तो दुःखपायहौ । आगे इंदुरकी बात न मान मंथरक भयको मार्‌यो सरोवरछांड़ि वनको चल्यो । अरु वे तीनोंहूं वाके साथ ह्वैलये । आगे जातही एकव्याधा आयो । तिन कच्छपको पकरिबांध्यो । कहतुहैं जब आपदाआवै तब सुखमें दुःखबढ़ावै कैसोहू बलवान् बुद्धिमान् होय पर आपदाते न छूटै । पुनि ऐसेहू कह्यो है कि सम्पत्तिमें विपत्ति संयोगमें वियोग लाभ में हानि गुणमेंदोष ज्ञानमेंग्लानि मानमेंअपमान हांसीमें विषाद भलाईमेंबुराई ये सब समयपाय आपतेआप आयघटति हैं । पर भय औ आपत्यहैसो प्रीतिकीकसौटी हैं । याही में सज्जन अरु दुर्ज्जन जान्यो जातुहै । औ योंकहवेको तौ सबही सबके मित्रहैं ॥

दो० सुख में सज्जन बहुत हैं दुखमें लीने छीन।
सोना सज्जन कसनको बिपति कसौटी कीन॥

आगे मन्थरक को बूझ्यो देखि वे तीनों चिंता करनिलागे। तव मूसाने हिरणसों कह्यो मित्र तुम पंगुबनि बधिक के आगे ह्वै कढ़ौ। जब यह बधिक मन्थरक को त्यागि तिहारे पाछे भजिहै तब हौं याके बन्धनकाटिहौं। काग बोले बहुरि तुम पराइयो। यह बात मूषकते सुनि कुरंग ने त्यौंहींकरी। बधिकने देख्यो कि मृग लँगरातु जातुहै। याहि दौरिके पकरिलेउँ। यों विचारि व्याधी आपनो सरबसु जलकेतीर रूखतरे राखि हिरणके पाछे दौर्‌यो त्यों मूसाने मन्थरक कछुआके बन्धनकाटे। वह नीरमाहिं गिर्‌यो। काग पुकार्‌यो भाई भागो। परमेश्वरने काजसुधार्‌यो। यह सुनतही मृग चौकरी मारि परायो। व्याधी निराशह्वै उलटो फिर आयो। ह्वां देखै तौ कछुआहू नाहिं। तव कहनि लाग्यो कि मोहिं ऐसो करनो उचित न हो जो हाथको छोंड़ि और को धायो। कह्योहै अति लालच नीको नाहीं। जैसो मृगको लोभ कियो तैसो हाथ आयो कछुआ खोयदियो ऐसे पछताय व्याधी ह्वांतेगयो। ये चारों मित्र तहां सुखसोंरहे उनके मनोरथ पूरेभये॥

इतनी कथाकहि विष्णुशर्मा बोल्यो महाराजकुमार सुनो या कथाके सुनते सज्जन सों मित्रताहोय मनमें सन्तोष आवै घरमाहिं लक्ष्मी बाढ़ै राजा राजनीति सों चलै प्रजाकी रक्षाकरै। यह मित्रलाभ प्रथम कथाकही। यामें जाकी रुचिहोय सो कबहूं ठगायो न जाय। सदा निर्मलबुद्धि ते संसारके सब काजसाधै। वक्ता श्रोता को श्रीमहादेवजू कल्याण करैं॥

अथ द्वितीयकथा आरम्भ॥

राजकुमारनि विष्णुशर्मासों कह्यो अहो गुरुदेव मित्रलाभ की कथा तो हमनि सुनी। अब कृपाकरि दूजी सुहृद्भेदकी कथा सुनाओ तहां विष्णुशर्मा कहतुहै कि महाराजकुमार पहिले

एकबड़े औ बाघ सों स्यारने प्रीति करवाई अरु पाछे बड़ेको मर-वायो वाही बाघसों। राजकुमारनि कही यह कैसी कथाहै। तब विष्णुशर्मा कहनि लाग्यो॥

दक्षिणदिशा में सुवर्णनाम नगरी। तहाँ एक वर्द्धमाननाम बनियां। सो बड़ो धनवन्त हो। काहूदिन वाने एक और सेठ की सम्पत्तिदेखि आपने मनमें विचार्यो कि काहूभाँति औरहू लक्ष्मी इकठी करों तो भलो। कह्यो है आपते अधिक बल द्रव्य विद्यादेखि काको मन मलिन न होय अरु ऐसेही आपनी सम्पत्तिकी बढ़वार देखि को न मनमाहिं अहंकार करै क्योंकि ध-नाढ्यको सबकोऊमानै। पुनि ऐसेहु कह्यो है कि असाहसी औ आलसीनको लक्ष्मी आपही त्यागति है। जैसे वृद्धपुरुषको तरुण स्त्री न चाहै तैसे विन्हैं लक्ष्मीहू। अरु जे आलसी होयँ सन्तोष करि घरमाहिं बैठरहैं तिनको विधाता कबहुं न बढ़ावै। कह्यो है भगवान् असाहसी पुत्रहू काहू को न देय। बहुरि कहतुहैं कि अनपाई वस्तुको यत्न कीजै तौ प्राप्तहोय अरु वाकी चिन्ता न क-रिये तौ नमिलै। ऐसे विचारि बनियां पुनि मनमें कहनिलाग्यो कि जो धनपाय न खाय न उठावै वह धन कौन काम आवै। औ बलभये शत्रुको न मारिये तो वा बलको ले कहा करिये। अरु विद्यापढ़ि धर्म न जानिये तौ वा विद्याते कहा लाभ। पुनि शरीरपाय उपकार न होय अरु इन्द्रिय न जीतै तो शरीरसों कहा अर्थ। कह्यो है थोरे २ उद्यम करेहू धनबढ़ै जैसे बूंदबूंद जल करि घटभरै अरु बिन विद्या औ धन जो जन सांसलेतुहै सो लुहार की धवनि समान जानिये। ऐसे शोच विचारि करि वर्द्धमान बनियां नन्दक औ संजीवकवर्द्धक रथमाहिं जोति बहुत धन द्रव्य लादि रथपर चढ़ि काश्मीरकी ओर चल्यो। कह्यो है सामर्थीको कहा भार व्यापारी को कहा विदेश मीठो बोलै ताहि कोनपरायो। आगे अधवर गैरमें चलत दुर्गनाम महावन माहिं संजीवक को पाँवटूट्यो पछारखाय बर्द्धगिर्यो। वाहि गिर्यो देखि महाजन

कहनि लाग्यो कि कोऊ कितेक उपायकरि मेरो फल विधाताके हाथहै ऐसेविचार बंडको वहांहींछोरि बनियांआगेकोचल्यो। बर्द्ध ह्वांरह्यो। कितेक दिवस माहिं वह हरेहरे तृणखाय निर्मलजलपी अति बलवान्भयो अरु एकसमय परमानंद करि दड्डक्यो। वा ठौर एकपिंगलकनाम बाघ राज्य करतुहो। पर वाहि काहूने राजतिलक न दियोहो। कह्यो है आपने बलकरि सिंह मृगराजही कहावै। सो नाहर वाहीकाल यमुनातीर नीर पीवनि गयो ह्वांजाय संजीवकके दड्डकबे को शब्दसुनि मनहीमन भयवान्ह्वै पानी बिन पियेही आपनी ठाम आय बैठ्यो। तहां दमनक औ करटक द्वै स्यार रहैं। सो यह चरित्रदेखि दमनकने करटकते कह्यो कि मित्र तुम कछू देख्यो जु आज यमुनातीरपै जाय बाघ बिन पानी पिये आपनी ठावँ सुचित्त ह्वै आनि बैठ्यो ताको कारण कहा। करटककही बंधु मेरो तो यह विचारहै कि जाकी सेवा न करिये ताकी बात पूछेते कहा प्रयोजन कहतु हैं जा गावँ न जानों वाको पैंड़ो पूछिबेते कहा काम। मोहिं तो अब याकी सेवाकरतहूं लाज आवतु है। पर आहारके लोभते करतुहों। कह्यो है जे सेवाकरि धन चाहतु हैं ते आपनो शरीर पराये हाथ बेंचतुहैं। अरु जे औरकेहेतु भूख प्यास घाम शीत वर्षा सहतहैं तिनकी तपस्या में खोट जानिये क्योंकि पराधीन परवश को जीवन मृतक समानहो कहतुहैं॥

क० दैनो भलो सुपथ कुपथपै न दूनोभलो रूनोभलो भौनपै न खल साथकरिये। सन्तनको लघुसंग जड़को गुरुत्वछांड़ि साधुको सहज औ असाधु क्षमा डरिये॥ थोरिये सराफी न बहुत जुवाँको छांड़ि परिकै कुसंग आप बलसों सपरिये। हारिमानिलीजे पै न रारिकीजे नीचनिसों सरबस दीजे पैन परवश परिये॥

मृतक कौनको कहतु हैं कि जा सेवकको ठाकुर न चाहै अरु कहै इततें उतजा बोलैं जिन ठाढ़ोरह ऐसे अवज्ञा करि वाको मानमर्दनकरै तौहू मूर्ख धनके हेतु पराधीन रहै। जैसे वेश्या परपुरुषके निमित्त शृंगारकरै तैसे मूर्खहू पढ़िगुनि परायो

आधीनहोय याते मेरेजान सेवककेसमान मूर्ख जगत् में कोऊना- हिं। दमनककही मित्रतुम यहबात जिन कहो। कह्यो है बड़ो जगत्करि भलो ठाकुर सेइये जासों मनकामना पूरणहोय। छत्र चमर गज अश्वआदि सब लक्ष्मी के पदार्थ मिलैं। जो न सेइये तो कहांसों पाइये। ताते सेवा अवश्यकरिये। बहुरि करटककही हितू जो तुम कह्यो तासों हमैं कहा प्रयोजन। कह्यो है विना समझे बूझे काहूके बीचपरे सो मरे जैसे एक वनचर मर्यो। दमनक कही यह कैसी कथाहै तहां करटक कहतुहै॥

मगधदेशमें शुभदत्तनामकायस्थ तिन धर्म्मारण्य वनमेंक्रीड़ा की ठौर बनावनको आरम्भ कियो। तहां कोऊ बढ़ई काठचीरतु चीरतु वा माहिं लकरीकी कीलदै काहू कामकोगयो। अरु एक वनको बानर चपलाई करतु करतु कालवश वाहीकाठपर कील पकरिआय बैठ्यो अरु वाके अण्डकोष वा काठकी सन्धि माहिं लटकिपरे। ज्यों उनि चंचलता सों युक्तिकरि कील काढ़ी त्यों काढ़त प्रमाण अण्डकोष चपे और मर्यो। ताते हौं कहतुहौं कि विन स्वारथ चेष्टा न करिये। दमनककही मित्र जो प्रधानहोय सो सब काम करै। सेवकको ऐसो बिचारनो योग्य नाहीं। कर- टकबोल्यो भाई आपनोकामछोड़ि औरके काममें परनो उचित नाहीं। अरु जो परै तो वैसे होय जैसे पराये काजमें परि बिचारो गदहा मार्योगयो। दमनक कही यह कैसी कथाहै। तद कर- टक कहतु है॥

वाराणसीनगरी माहिं कोऊ कर्पूरपाटनामधोबीरहै सो तरुण स्त्री ब्याहिल्यायो। वाकेसाथ एकदिन रातको क्रीड़ाकरि सुख नींदमाहिं सोवतुहो। वाकेघरमें चोरपैठे। अरु ताके अँगनामें एक गदहा औकूकररहो। सोगदहा चोरनिकोदेखिकूकरते बोल्यो अरे यहतेरो कामहै कि ठाकुरको जगायदे। उनिकही अरे मेरो अकाज जिनकर तू जानतु नाहिं जुयह मोहिं खैबेको नाहिंदेतु। सुन कह्यो है जबलौं ठाकुर पै आपदा न परै तबलौं सेवक को आदर

हू न करै। पुनि गर्दभ कही सुनुरे बावरे जो काम परे मांगे सो कैसो चाकर उनि कही जो काजपरे सेवक को चाहे सो कैसो ठाकुर। सेवक औ पुत्र समान हैं इनको पोषण भरण करनो स्वामी को उचित है। गदहाबोल्यो ओ तूतो पापी है जो स्वामी को काज नाहीं करतु। अरु मेरो नाम स्वामिभक्त है। ताते जामें स्वामी जागिहै सो उपाय करिहौं। बहुरि श्वानकही रेसूरजको पीठिदे सेइये अग्नि आगे धरि तापिये अरु स्वामीसों आगे पाछे शुद्ध भाव रहिये पर यह स्वामी वैसो नाहिं। अरु जो तू मेरेकाज माहिं पायँ धरैगो तो मेरो मौन तोहिंलागिहै। वाकी बात सुनि गदहा ह्वांते उसारि धुवियाके निकटजाय कानसों मुँह लाय रैंक्यो। तब वा रजकने नींदसों चौंकि क्रोधकर गदहाको सुहांगियन मार्‌यो। वा मार ते वह मर्‌यो॥

ताते हौं कहतु हौं कि और के अधिकार माहिं कबहूं न परिये हमारो कामतो यह है कि अहार खोजनो। पै आज हमैं वाहूको शोच नाहीं क्योंकि काल्हिको मांस बहुत धर्‌यो है वाते हम अनेकादिन पेटभरि काटिहैं। दमनक कही जो तू अहार ही के लिये सेवाकरतुहै तो यह भलो नाहिं राजाकी सेवाकरनो सो तो स्वारथ परमारथ के निमित्त कि जाकी सेवाते मित्रसाधनिको उपकार करिये औ शत्रुदुष्टनिको मारिये यह मनमें बासना रहति है। केवल उदरभरनके हेतु नाहीं सेवत। कह्यो है संसारमें जाके आसरे अनेकलोग जीवैं ताहीको जीवन सुफलहै। सब सेवक समान न होयँ। सेवक २ मेंहू बड़ो अन्तर है जैसे एकपांच कौड़ी की हूं अंकरो औ एकलाखनि तेहू न पाइये कहतु हैं घोड़ा हाथी काठ पाथर कपरा स्त्री पुरुष अन्न इनके मोलमोल में बड़ो भेद है। देखो कूकर थोरोई मांस हाड़ ते लपट्यो पावै तो वाही माहिं संतोष करि रहै। अरु सिंह आगे स्यार ठाढ़ो रहै तौहू वह वाहिछांड़ि गजकोहीं मारै। ताते हौं कहतुहौं कि जे बड़े हैं ते बड़ोई काम करतु हैं। पुनि कूकर

पूंछ हिलावै पेट दिखावै तव टूकापावै। अरु हाथी स्थान बैठ्यो केते यतन उपायकरि घनेआदर सों अहारको ग्रासलेय। कह्यो है जगत्माहिं ज्ञान पराक्रम यश अहंकार सहित एकघरी जीनोहू भलो। अरु मानरहित कागकी भांति विष्टाखाय अनेक दिन जियो तो कहा जो आपनोंहीं पेटपालि कियो तो वा मनुष्य औ पशुमें कहा अंतरहै। पुनि करटककही कछु हम तुम या राजाके सेवकनाहिं। बहुरि दमनक कही भाई समयपाय मंत्री ह्वैवेको यत्न करिये बड़ो पाथर कष्टकरि उठाइये पै गिराइये सहजमें। औ आपनी प्रतिष्ठा राखिवे को उपाय सदा करिये। पुनि करटक कही बंधु तुम कछु जानतुहो कि सिंह आज काहेडर्‌यो दमनक बोल्यो भाई यामें कहा जानबोहै पण्डित विन कहेहीं जानें अरु कहेते तो पशुहू पिछाने पर जाको जो भावै सो भलो। मेरेजान तो राजाकी सेवा माहिं रहिये औ जब राजा पुकारै ह्यां कोऊ है तब कहिये महाराज कहा आज्ञा होतिहै दास बैठ्यो है। वा भांति यद पुकारै तद याही रीति उत्तर देइ। अरु जो कछु कहै सो सावधान ह्वै सुनिलेइ कह्यो न उलंघै क्षणभर साथ न छांड़ै। परछाईं की भांति संग लाग्यो रहै। करटक कही हितू कह्यो है अनअवसर नृपतिके निकट जाय तो निरादरहोय। दमनकबोल्यो तौहू सेवक स्वामीको न छांड़ै। कह्यो है लोगनि के भय उद्यम औ अजीर्णके डर भोजन न करनो कपूतको काम है। कैसोहू अकुलीन मलीन विद्याहीन पुरुष राजा के समीपरहै तासों हित करै कहतुहैं अग्नि स्त्री राजा लता ये निकटवत् सों लगचलतु हैं। यामें संदेह नाहीं। करटक कही तू राजासों पूंछैगो तुम क्यों डरे। उनिकही प्रथम जाय हौं राजाको देखिहौं प्रसन्न है कै उदास। इनकही यह तू कैसें जानैगो। पुनि उनि कह्यो जो ठाकुर सेवकको दूरते आवत देखि प्रसन्नहोय आपहीते बतराय निज सेवकनि माहिंगनै। थोरी सेवादेखि बहुत मयाकरै। दिन दिन आदरदेइ तो जानिये ठाकुर संतुष्टहै अरु जब राजा सेवकको

आवतु देखि आंख चुरावै औ देबेको आज काल्हिकरि आशा बढ़ावै काहू बातमाहिं चित्त न देइ गुणमें औगुण काढ़ै तब जानिये राजा असंतुष्टहै ताते तुमचिंताकछुजिनकरो। मैं जैसे राजाको देखिहौं तैसेही बात करिहौं कह्यो है जो सयानो मंत्री होय सो अनीतिमें नीति औ बिपत्तिमें सम्पत्तिकरि दिखावै। बहुरि करटक कही भाई समयबिन बृहस्पतिहू कहै तो अपमानही पावै। मनुष्यकी किन चलाई। पुनि दमनक बोल्यो अहोमित्र तुमजिन डरो। हौं बिन अवसर न कहिहौं। कह्यो है जब कोऊ कुमारगमें चलै तब वाको हितूहोय सो बिनकहे न रहै। औ समय असमय मंत्र न कहै तो मंत्रीकाहेको क्योंकि अवसर परहीबड़ाईपाइयतु है॥

दो० समय चूकिकर सकलनर फिरपाछे पछितात।
ना यह रहै न वह रहै रहै कहानि को बात॥

इतनीकहि फेर दमनक बोल्यो अबजो मोहिंकहौ सो करौं। करटककही जामें आपनो भलो जानो सोकरो यह सुनि दमनक पिंगलराजाके नेरे गयो। दण्डवत्करि करजोरि सन्मुख ठाढ़ो रह्यो। तब राजाने हँसिके कह्यो दमनक तू मोपास बहुत दिन पाछे आयो। इतनो कहि बैठायो। पुनि दमनकने राजाकी अन्तर्गतिपाय वाको भयमान जानि ऐसे कह्यो कि पृथ्वीनाथ तिह्यारे हमारो कामतौनाहीं। परहम सेवकहैं। हमको यह योग्यहै कि समय असमय आयो चाहै क्योंकि एकसमय दांत कान कुरेदबेको तृणहूको कामपरतुहै ताते सेवकबेलाकुबेला काज न आवै तो पाछे वह कौनकामको। यद्यपिबहुतदिनभये तुममोसोंकुछमंत्र नाहीं पूंछ्यो। पर मेरीबुद्धि नाहीं घटी। कह्योहै जो मणि पायँ बांधियेऔ कांचशिर तोहू कांचसीकांच अरु मणिसी मणि। पुनि अपमान कियेहू जाकी बुद्धि स्थिररहै सो पण्डित। यासों महाराज तुमको सदा विवेक करनो उचितहै। संसारमें उत्तम मध्यम अधम तीनप्रकारके लोगहैं। जाको जैसो देखिये ताको तैसो अधिकार सौंपिये अरु सेवककी सेवा बूझिये जो सेवककी सेवा

राजा न बूझै तो सेवक मनमाहिं महादुःखी रहै । ताते महाराज आभरण औ सेवक जहांको होय तहांहीं शोभापावै । अरु राजा मंत्री की बुद्धिते चलै तौ अनेक सेवक आवैं । कह्यो है अश्व, शस्त्र, शास्त्र, बीन, नर, नारी ये सब भले के हाथ रहैं तो भले रहैं औ बुरेके हाथ बुरे । पुनि कह्यो है जो राजा सुबुद्धी पर कुमायाकरै तो वह याके निकट न रहै जो सुबुद्धी राजा के ढिग न रहै तो नीतिजाय । नीतिगये लोगदुःखीहोयँ । अरु भूपतिमया करै तो सबहीमानै नीकिबात सब को सुहाय पै मीठोबोलनो महाकठिनहै । इतेक बातैं जब दमनकने कहीं तब बाघराजा बोल्यो अहो दमनक तुम हमारे मंत्रीके पुत्रह्वैकै हमपास कबहूं न आये । ऐसोतुम्हैं न बूझिये अब आवन कैसेभयो । दमनक कही कि महाराज हौं तुमते कछुपूंछवेको आयोहौं आपकी आज्ञापाऊं तो पूंछौं । सिंहकही दमनकतुम हमते निस्संदेहपूंछो।पुनि दमनक बोल्यो महाराज तुमपानीके तीरजाय बिन नीरपिये सुचित्त ह्वै आपने स्थाल पै जुआय बैठे सो ताको कारण कहा । यह कृपाकरि मोहिं कहो तो मेरेमनको संदेहजाय । उनि कही भाई मेरेमनकी बात काहूसों कहवेकी नाहीं । पर तू मेरे मंत्रीको पुत्र है । याते हौं तोते कहतुहौं । तू काहूसों या बातको जिन कहियो कि जब आजहौं जलपीबेको गयो तबएक अतिभयानक शब्द सुन्यो । ताके भयको मारयोहौंते बगदि यहां आय बैठ्योहौं । अरु जी में विचारतुहौं कि या बनमें कोऊ महाबली जन्तु आयो है ताते या बनते अनत जाय बसिये सो भलो । पर यहां रहनो योग्य नाहीं । यह सुनि दमनक बोल्यो महाराज कछु कहिवेकी नाहीं । वह शब्द मैंनेहूं जबते सुन्यो है तबते मारे भयके थर २ कांपतु हौं । पर मंत्रीको ऐसो न चाहिये जु पहिलेही ठौर छुड़ावै कै लरावै । औ राजनिको यह उचित है कि आपदामें इतनेनकी परीक्षालेयँ सेवक, स्त्री, बुद्धि, बल क्योंकि इनकी कसौटी बिपत्ति है । नाहर कही मेरे मनमाहिं अतिशंकाहै । तब दमनकने निज

मनमें कह्यो कि तुमको शंका न होती तो हमसों काहेको बतरा-
ते। ऐसे मनमें समझि पुनि बोल्यो कि धर्मावतार जौलौं हम
जीवत हैं तौलौं तुम भय कछु जिनकरो। हौं करटक आदि सब
सेवक बुलायलेतहौं। नीतिमें ऐसो कह्योहै कि आपत्यके स-
मयराजा आपने सबसेवकनिको बुलाय एकमतोकरि अधिकार
सौंपै। इतनीकहि दमनक करटकको बुलाय ल्यायो। औ राजा
सों मिलायो। पुनि राजाने इन दोउवनको बागे पहिराय पानै
दै वा भयकी शांतिको बिदा कियो। आगे डगरमें जात करटक
ने दमनकसों कह्यो कि भाई तुम बिन समझे राजाको प्रसाद
लियो। सोभली न करी। कहाजाने हमते वाभयको निवारणह्वै-
सकै के नाहिं। कह्योहै काहूकी वस्तु बिन समुझे न लीजिये
पर राजाको तो प्रसाद विशेषकर न लीजै क्योंकि जोकबहूंकाज
न होय तौ राजा क्रोधकरै अरु न जानिये कहादुःखदेय। ऐसेहू
कह्यो है कि राजाकी दलमें लक्ष्मी बसतुहै अरु पराक्रममें यश
क्रोधमें काल और सव देवतानको तेज भूपाल में है। ताते नर
नरपति की आज्ञामाहिं रहै तोही भलो क्योंकि पृथ्वीपति मनु-
ष्य रूप कोऊ बड़ो देवता है। बहुरि दमनक कही मित्र तुम चुप-
के रहो। या बातको कारण हम जान्यो कि यह बर्द्धके बोलबेको
शब्द सुनिके डर्‍यो है। अरु बैल कोतो हमहूं मारिसकतुहैं। सिंह
को वह कहा करिहै। पुनि करटक कही भाई जो ऐसीही बात
है तो राजासों कहिके उनके मनको भय काहे न दूरि कियो। द-
मनक कही हितू यह बात प्रथमहीं नरपति ते कही होती तो हम
तुमको अधिकार कैसे मिलतो। कह्यो है सेवक स्वामी को
निश्चिंत कबहूं न राखै। जो राखै तो दधिकरण बिलाव की
भांति होय। यह सुनि करटक कही यह कैसी कथाहै तब दम-
नक कहतुहै॥

अर्बुदपर्वत की कन्दरा में एक महा विक्रम नाम सिंह रहै
जब वह वहां सोवे तब एक मूसा बिलसे निकरि वाके केश

काटै। यद वह जागै तद बिलमें भजिजाय। कह्योहै छोटे शत्रु बड़ेनिते न मरैं। वा मूषककी दुष्टता देखि बाघने निज मनमें बिचारेउ कि याकी समान को कोऊ ल्याऊं तो यह माख्योजाय। नातो याके हाथते सोवन न पायहों। यह बिचारि गावँमेंजाय एकदधिकरणनाम बिलावको अतिआदरसोंल्यायो अरुराख्यो। वहहू वाकन्दराके द्वारबैठ्योरहै अरु बिलावके भयते मूसाबिल सों बाहर न निकरै। सिंह सुखनींद सोवै। याते मूसाके डरते बाघ बिलावको अति आदरकरै। आगे कितेक दिन पाछे एक दिन दावँ पाय वा मूसाको बिलावने मारिखायो। जब सिंहने मूषकको शब्द न सुन्यो तब उनि मनमाहिं बिचारेउ कि जाके कारण याहि ल्यायोहों सो काम तौ सिद्धि भयो। अब याहि राखिबे ते कहा प्रयोजन। बाघने ऐसे बिचार वाको अहार बन्दकियो। तबबिलाव वा ठौरते भूख्यो मरिमरि परायो। याते हौं कहतुहौं कि ठाकुरको कबहूं निचतो न राखिये॥

इतनो कहि दमनक करटकको एकरूखतरे ऊंचीठौर बैठाय कितेक जम्बुक वाके निकट राखि आप इकल्लो संजीवक के पास जायबोल्यो तू कहांते आयो है। जब उनि अपनी सर्व पूर्वव्यवस्था कही तब इनकही या बनको राजासिंहहै। तुम ह्याँ कैसेरहिहौ। पुनि भयमानहोय वृषभकही तुम काहूभाँति मेरी सहायताकरो। बहुरि दमनक ने आपनी घातें वाहि निर्भयकरि कह्यो कि मेरो बड़ो भाई करटक राजाको मन्त्री है। प्रथम उनते तोहिं मिलाऊंगो। पाछे राजातेहू भेंटकराऊंगो। ऐसे कहि दमनकने वा बर्द्ध को करटकके समीप लैजाय वाके पायँन परायो। तब करटकने बैलकी पीठि ठोंकिकै कहेउ अब तुम या बनमाहिं अभय चरतु फिरौ अरु काहूभांतिकी चिंता निजमनमें जिन करो। ऐसे वाको भय मिटाय साथलै राजपौर पर आय बैठे। कह्यो है बलते बुद्धिबड़ी। देखो बलबिन बुद्धिसों गजबश करतुहैं। पुनिसंजीवकसों करटक कही अबतुम ह्यां बैठो। हम राजापै होय आवैं।

तबतुमहूँ को लै जायँगे। इतनो कहि वे दोऊ सिंह पासगये औ प्रणामकरि करजोरि सन्मुख ठाढ़ेभये। तव राजा ने उनते अति मधुर वचनसों पूछ्यो कि जा कार्यके लये गयेहो वाको समाचारकहो। तहां दमनक हाथजोरि नीचौ मूड़करि कहनि लाग्यो महाराज हम वाहि देख्यो। सो अति बलवन्त है पर हमारे समझायबेते वह आपसों मिल्यो चाहतुहै हम वाहि अवहीं लै आवतुहैं। पै आप सावधान ह्वै वैठिये वाके शब्दते न डरिये। शब्द को कारण विचारिये जैसे शब्द को कारण विचारि कुटनीनें प्रभुतापाई। राजा वोल्यो यह कैसी कथा है। तब दमनक कहतुहै॥

श्रीपर्वतमें ब्रह्मपुर नाम नगर। अरु वा पहाड़ की चोटीपै एक घंटाकर्ण नाम राक्षस रहै। सो वा नगरके निवासी सव जानें क्योंकि वाको शब्द सदा सुन्यो करें एकदिन नगरमें ते चोर घंटाचुराय गिरिपर लियेजातुहो ताहि तहां वाघने मारिखायो अरु वह घण्टा वानरके हाथ आई। जव वह वजावै तव नगर निवासी जानें कि राक्षस डोलतुहै। काहूदिन कोऊ वा मरे मनुष्यको देखि आयो। तिन सवते कह्यो कि अव घण्टाकर्ण रिसायकै नर खान लग्यो यह मैं स्वदृष्टि देखि आयों। वाकी वात सुनि मारे भयकै नगर के सव लोग भजवे लागे। तव कराला नाम एक कुटनीने वा घंटाके वजवेको कारण जानि राजासों जाय कह्यो कि महाराज मोहिं कछु देउ तौ घंटाकर्ण को मारि आऊं। यह सुनि राजाने, वाहि लाख रुपैया दिये अरु वाके मारिवेको विदा कियो। तब वाने धन तौ निज मंदिर माहिं राख्यो अरु वहुतसी खैबेकी सामालै वनकी गैलगही। ह्वां जाय देखै तौ एक मर्कट रूख पर वैठ्यो घंटा वजावतु है वाहि देखि याने एक ऊंचे पर सव सामा विथराइ दई। वह वंदरा देखतही वृक्षते कूदि ह्वां आयो। पकवान मिठाई फल मूल देखि घंटा पटकि खैवेको जो उनि हाथ चलायो त्यों घण्टा अलगभई। तव याने घण्टालै आपनी गैलगही। नगर में आय वाने वह राजा के हाथदई अरु वह बात कही कि महाराज

हौं वाहि मारिआई। यहसुनि औ घंटा देखि राजा ने वाकी बहुत प्रतिष्ठाकरी अरु नगर के लोगनहूं वाहि पूज्यौ ॥

तातेहौं कहतुहौं कि महाराज केवल शब्दहीते न डरिये। प्रथम वाको कारण विचारिये पुनि उपाय करिये। यह तो श्रीशिवजूको वाहनहै औ तुम पार्वती के। याते यह तिहारो आश्रमजानि निर्भय गर्जतुहै। तुमको वाकी आगता स्वागता करि सेवाकरनी योग्यहै क्योंकि आज वह तिहारो पाहुनोहै वाकी सेवा ते ईश्वर पार्वती प्रसन्न होयँगे। यहसुनि दमनकते सिंहबोल्यो कि तुम शिष्टाचारकरि वाहि मोते मिलाओ। वहतो हमारो भ्राताहै। पुनि दमनक ने संजीवक बर्द्धको पिंगल बाघसों मिलायो। दोऊ अति मिलि अधिक सुखपायो। कछुक दिननि पाछे उनमाहिं अति प्रीति भई। आगे एकदिन सितकरण नाम सिंह राजाको भाई तहां आयो। तब संजीवक ने। यह टेरिसुनायो कि महाराज आज तुमनि जो मृग मार्योहो वाको मांस कहांहै। सिंहकही भाईकरटक दमनकजानै। पुनि संजीवक बोल्यो कि महाराज तुम उनते पूंछो तो सही है कैनाहिं। बहुरिनाहर उत्तर दियो कि हमारे यही रीतिहै जो ल्यावैं सो उठावैं। फेरि संजीवक बोल्यो महाराज मंत्री को ऐसो न बूझिये कि जो आवै सो उठावै कैराजा की आज्ञाबिन काहूको देइ। यह नीति नाहीं कह्यो है आपदा के अर्थ धनराखिये। औ मंत्री ऐसो चाहिये जो राजाके धनको संग्रहकरै थोरोउठावै बहुतजोरै। राजाको भंडार प्राणसमान है। सबकोऊ धनके निमित्त राजसेवाकरतुहैं धनहीनभये घरकी नारीहू न मानै। और की तो कहाचली। या संसार में धनहीकी प्रभुताहै। जाके पास धन सोई बड़ो। ये प्रधान के दूषणहैं अतिखरचै प्रजा की रक्षा न करै अनीति अधर्म करि भंडारभरै राजा के सन्मुख झूंठ बोलै तो अल्पदिननिमेंहीं राजभ्रष्टहोय क्योंकि बिनशोचे बिचारे काज करेते काज कबहूं न रहै। संजीवक ने जब यह बातकही तब सितकरणबोल्यो भाई तैं इनस्यारन को अधिकारी कियो सो भली

करी पर हम प्राचीनलोगनिते सुन्यो है कि ब्राह्मण क्षत्री सम्बन्धी उपकारी औ मित्र इनको अधिकार न सौंपिये क्योंकि ब्राह्मण धनखाय तो राजा दंड न देसके। अरु क्षत्री जब बल पावै तब राज दबायलेय। पुनि सम्बन्धी आज्ञा न मानै। उपकारी सब तुच्छजाने। मित्र राजासम आपको गनै। ताते इनको अधिकार कबहूं न दीजिये। बहुरि ऐसेहू कह्यो है कि चट प्रधानको नतारिये। सहज सहज निचोरिये जौं स्नानको चीर। यद्द वाने याहि भरमायो तद याहूके मनमाहिं कपटछायो। कहतुहैं वेश्या काकी स्त्री औ राजा काकोमीत॥

कवित्त॥

सांप सुशील दया युत नाहर काग पवित्र औ सांचो जुआरी। पावक शीतल पाहनकोमल रैनि अमावस की उजियारी॥ कायर धीर सती गणिका मतवारो कहा सतिवारो अनारी। मोतियराम सुजान सुनो किन देखी सुनी नरनाह की यारी॥

पुनि राजाबोल्यौ कि भ्राता तुम सांचकहतुहो। ये दोऊ मेरो कह्यो नाहीं मानतु और मोहिं दुखदेतुहैं। बहुरि सितकरण कही भाइ कह्यो है कि अहंकार ते यशजाय कुत्रिसनतेज्ञान आलस्यते धन क्रिया विनकुल औ लोभते धर्म पुनिऐसेहूकह्यो है॥

दो० आज्ञा भंग नरेन्द्र की विप्रन को अपमान।
भिन्न सेज नारीनकौं विना शस्त्र वध जान॥

अरुनीति तो यों है कि पुत्रहू कह्यो न मानै तो राजा वाहू को दंडदेय। पुनि चोर अरु लोभी प्रधानते प्रजाकी रक्षाकरि पुत्रकी भांतिपालै। अरु सुन भाई। आज मैं तेरो अन्नखायो है। तातेहौं तेरे हितकी कहतुहौं। यहसंजीवक बड़ोसाधुहै। शुभचिन्तक औ सुकृतिकी खानिहै। याते आपनो भलोचाहौ तो याहि अधिकारी करो। यह बात राजा ने भाई की सुनि संजीवकको

अधिकारी कियो औ दमनक करटकते अधिकार खोसलियो। तब दमनकने करटकते कह्यो मित्र अब कहाकरियो यहतो हमारोई कियो दोषहै। जैसे चित्रलिखेको छूवत कंदर्पकेतुने औ मणिके लोभते महाजनने अरु आपनी करतूतिते दूतीने दुःखपायो तैसे हमहूं आपने कियेको फलपाये। पुनि करटकबोल्यो यह कैसी कथा है तब दमनक कहतु है॥

कंचनपुरमें वीर विक्रमादित्य नाम राजाहो। वाके सेवक एक नाऊको मारनलैचले। तहां कंदर्पकेतु संन्यासी अरु साहुने वाहि देख्यो। तब संन्यासी ने राजाके चाकरनिसों कह्यो कि या नौआको कछु अपराधनाहीं। सेवकनि कही याको व्यौरो कहो। पुनि संन्यासी बोल्यो कि प्रथममेरो दोष मोहिंलाग्यो। सो सुनो। सिंहलद्वीपको जंबुकेतु राजा ताको मैं पुत्रहौं अरु कंदर्पकेतु मेरो नामहै। एक दिन एकव्योपारी मेरे नगरमें आयो अरु उत्तम पदार्थ उनमोहिं आनिदिखायो। जब मैंने वासों पूछ्यो कि तैंने यह कहांते पायो तब उनि प्रसंग चलायो कि महाराज हम व्योपारीलोग समुद्रकेतीर वणिजको जातुहैं। तहां वर्षमें दिन सागरमेंते एक वृक्ष निकरतुहै। तापै अतिसुन्दरी नवयौवनारत्नजटित आभूषणपहिरे एक नायका बैठी बैठी आछेआछे पदार्थ भेज २ देतिहै अरु महाजन व्योपारी सब लेतहैं औ देशदेश बेंचत फिरतहैं। इतनीबात जब वाने मोसों कही तब मैं वाहिसाथ ले समुद्रतीरगयो। अरु ह्वाजाय वाहि देखत प्रमाण समुद्रमेंकूद्यो। कूदतही मोहिं एक कंचनको मन्दिर दृष्टिआयो। तदहौंहूं उठिवा माहिं धायो। मोको देखि वाने एकदूती पठाई। सो चली २ मेरे ढिगआई। मैंने वासों पूछ्यो यह कोहै उनकही यह कंदर्पकेलि विद्याधरनके राजाकी पुत्री है अरु रत्नमंजरी याको नाम है। यह बात सुनि मैंने आगे बढ़ि वाके निकटजाय अधिक सुख पायो। तब उनिकह्यो स्वामी स्वइच्छाते तुमह्यां रहो पर यह चित्रलिखी विद्या कबहूं मत छुइयो। आगे गन्धर्व विवाह करिहौं

वहां कितेक दिन रह्यो। एकदिन वाको कह्यो न मानि ज्यों वह विया मैं छुई त्यों उनि मोहिं एकलात ऐसी दई कि हौं मगध देशमें आनि पस्यो। ता दिनाते वाही के वियोग में संन्यासी भयो डोलतुहौं। आज तिहारी नगरी में आय रातहौं अहीरके घर मा-हिंरह्यो। सु ह्यां देख्यो कि वह घोस अपनी घुसायनको यार के साथ बतराति देखि क्रोधकरि थांभसों बांधि मतवारो होय सोय रह्यो। अरु जब आधी रात बाजी तब एक नायन कुटनी वाके पास आय बोली कि सुनरी तेरे विरहते वह बापुरो मरतुहै वाकी दया विचारि हौं तोपै आईहौं। अबतू विलम्ब जिन करै। मोहिं या थांभते बाँधिजा अरु वाको भलो सतायआ। वाकी बात सुनि उनि वैसेही करी तव अहीर जाग्यो औ वासों कहनि लाग्यो कि अब तू यार पास क्यों न जाय। जब वह न बोली तब उनि वाकी नाक उतारलई अरु मदकोमातो पुनि सोयरह्यो। इतेक में घुसायनने आय नायनसों पूछी कि अरी कुशलहै। उनि कही वीर तू तो कुशलते आई पर मैंने ह्यां अपनी नाक गवाँई। यह सुनि वाःलिनि आप बँधगई अरु वाने नायनको बिदादई। जब नायन अपने घर आई तब फेर घोस जाग्यो औ जो कुछ वाके मुख आयो सो कहनि लाग्यो वा समय अहीरी बोली तू मेरो धनी है। मारबांध जो चाहे सो कर। और ऐसोको है जो मोहिं कलंक लगावे। मेरो कर्म औ धर्म अष्टलोकपाल, चांद, सूर्य, ध-रती, आकाश, अग्नि, जल, पवन, रात्रि, दिन, दोऊ सन्ध्या जानति हैं। अरु प्राणी जो कर्म करतु है ताकी उनको गम्यहै। अबहौं अपने धर्म सतसों कहतिहौं कि हे सूर्यदेवता जो मैं अपने सतधर्मतेहौं तो मेरी नासिकाकाटी न जनाइयो। यह बात सुनि अहीर वाके ढिगजाय देखे तो नाक ज्योंकी त्यों बनी है। देखत प्रमाण वह वाके पांयनपै गिस्यो औ बोल्यो कि तू मेरो अपराध क्षमाकर। मैं तोहिं बिन अपराध सतायो। पुनि वह वाके कंठ लागि बोली कि स्वामी यामें तिहारो कछु दोष नाहीं। यह मेरे

ही कर्मको फलहै। आगे नायन निज घर जाय नाक हाथ माहिं लिये बैठीहीं कि भोरभये वाके भर्त्तारने पेटी मांगी। इन एक छुरा वाके हाथ दियो। उनि क्रोधकरि याकी ओर फेंक्यो। तद यह पुकारी कि हाय इन निर्दयी ने मेरी नाक पै छुरामारो। याकी पुकार सुनि तुमवाहि बिन शोच विचार किये पकरिलाये औ मारणको लियेजातुहौ पर याको कछु अपराध नाहीं। अरु साधु महाजन मेरे संगहै। ताकी बात सुनो कि यह बारहवर्ष विदेश कमाय धनलिये अपने घर को जातु हौ। सो या नगरमें आय रात वेश्या के घर रह्यो। वा सामान्याने आपने द्वार पै एक काठको बैताल बनाय कल लगाय वाके मूड़पर एक रत्न जड़ि राख्योहो। यह साधु लोभको मार्‌यो आधीरातको उठि बैताल के निकटजाय हाथबढ़ाय ज्योंहीं रत्न लयोचाहै त्योंहीं वाकी कल छूटी वाके दोऊकर बँधे। कल छूटबेको शब्दपाय वह बार विलासिनि याके ढिग आय बोली कि तू मलयागिरिते मुक्तान की जो माला ल्यायो है सो मोहिं दे। नातो तोहिं भोर कोटवार के इहां जानोहोयगो अरु ह्वांते जीवत न फिरैगो। इतनी बात यह वाकी सुनि भय खाय आपनो सब धन वाहि दै मेरे संग आय लाग्यो है। यह बात संन्यासी ते सुनि राजा के सेवकनि न्याय विचार्‌यो औ वाहि छांड़ि वेश्याते साधुको धन दिवाय यथायोग्य दण्डदै सबको छांड़िदियो। तातेहौं कहतहौं कि ज्यों उननि आपने दोषते दुःखपायो तैसे हमहूं आपने कियेको फलपायो। पर भाई करटक अब जो भई सो भई। परन्तु तुम जिन शोचकरो। सुनो। जैसे मैंने इनते प्रीति कराई तैसेही अब बैरकरवायहौं कह्योहै जे चतुरहैं ते झूंठी बातकोहूं सांचीकरि दिखावैं जैसे एक अहीर ने झूंठको सांचकरि स्वामी के देखत जारको घरते निकार्‌यो। करटक कही यह कैसी कथाहै। पुनि दमनक कहतुहै॥

द्वारकानगरीमें एक घोसकी नारि व्यभिचारिणीही। सु कोटवार और वाके मोड़ाते रहै। एक दिन रात्रिकी बेला कोटवार के

छोहरातें भोग करिरहीही। ता माहिं कोटवारआय द्वारपर पुकारयो। तब याने वाके ढोटाको कोठीमें लुकाय द्वारखोलदियो अरु ताहूको भलोमनायो। इतेकमें वाको धनी आयो। तद इन कोटवारको यह सिखायो कि हौं तो बारउघारनि जातिहौं पर तुम लौठिया कांधपै धरि क्रोधकरि घरते निकरो। ता पाछे हौं वात बनाय लेउँगी। उनि वैसेहीकरी। तब अहीरनें घरमेंआय आपनी स्त्रीते कह्यो कि आज कोटवार हमारे घरते रिसायकै क्यों गयो। अहीरी बोली कोटवार हमारे घरते क्यों रिसायगो। वाको पूत वाते रिसाय मेरे घर माहिं आय छिप्योहै। सु वह आपने मोड़ाको मोसो मांगतुहै। इतेक माहिं तुम जो आये सो तुम्हें देखि चल्यो गयो। यह कहि वुसायननें कोटवारके पुत्रको कोठी तें निकारि कह्यो कि तू कछु भय मतकरै मैं तोहिं बाहर निकारि देतिहौं। जित तेरे सींगसमाय तित चल्योजा ऐसेकहि वाहि घरते निकारि दियो। कह्यो है॥

दो० पुरुषन ते द्विगुणी क्षुधा बुद्धि चौगुनी होय।
काम आठ साहस छगुण या विधि तिय सबकोय॥

तातें हौं कहतहौं कासपरे जाकी बुद्धि फुरै सोई पण्डित बहुरि करटक बोल्यो भाई इन दोउनमें तो अति प्रीतिहै तुम कैसे बिगारकरवायहो। फेरि दमनक बोल्यो कि मित्र जो काज उपायते होय सो बलते न होय। जैसे एक साँपको काहू कागने मरवायो तैसे हौंहू याहि मरवाऊंगो। करटक कही यह कैसी कथाहै। तहां दमनक कहतुहै॥

उत्तरदिशा में विद्याधर नामे पर्वत। वहां एकतरु पर काग कागली रहैं अरु वाकी जर में एक साँपरहै। जब कागलीने अण्डादये तब सर्प नें रूख पर चढ़ि खायलिये अरु अण्डानि के लालचसों नित वृक्षपै चढ़ि वाके खोंधा में जाय जाय बैठे। पुनि कागली गर्भसों भई तो उनवायसतें कही रे स्वामी या

तरुवरको तजि अनत जाय बसिये। तो भलो क्योंकि कह्यो है कि जाकी नारी दुष्ट मित्र शठ सेवक वादी घर में नागको बास ताको मरण निस्संदेह होय। यासों ह्यांको रहनो उचितनाहीं। कागकही हे प्रिये अब जिन डरे क्योंकि मैंने या नागको अधिक अपराध सह्योपर अब न सहोंगो। कागलीबोली तुम याको कहा करोगे। काग कहीं प्यारी जो काम बुद्धि ते होय सो बलते न होय। जैसे एक शशाने बुद्धिकरि महाबली सिंहको मार्यो तैसे हौं याहि बिनमारे न छांड़िहौं। कागली बोली यह कैसी कथा है तहां काग कहतुहे॥

मंदरगिरि पै दुर्दांतनाम एकसिंहहो। सोबहुतजीवजंतु मार्यो करै एक दिन वनके सब जीवनमिलि बिचारकरि आपसमें कह्यो कि यहसिंह नितआय एकजंतुखातुहे औ अनेकमारतुहै। ताते याकेपास चलिकै एकजंतु नितदेनो कहिआवैं अरु बारी बांधि पहुंचावैं। तौ भलो ऐसे वे आपसमें बलराय सिंहकेपास गये औ करजोरि प्रणामकरि मर्यादसों वाके सन्मुखठाढ़ेभये। इन्हैंदेखि नाहरबोल्यो तुम कहा मांगतुहो। इननि कही स्वामी तुम आहारकेलिये नितजातुहौ अधिक मारतुहौ अल्पखातुहौ। याते हमारीयहप्रार्थनाहै कि हम तिहारेखैबेको एकजंतु नितह्यां ही पहुंचाय जैहैं। तुम परिश्रम जिन कियोकरो। उन्न कही अति उत्तम। ऐसे वे बाघते बचन करिआये। आगेजाकी बारीआवे सो जाय वह खाजाय। ऐसे कितेक दिनपाछे एक बूढ़े शशाकी बारी आई तब वाने आपनेजी में बिचार्यो कि मेरोशरीर छोटो है। यासों वाको पेट न भरैगो। तब हमारे और भाइयनको खायगो ताते हमारोकुल तौ एक दोइबारी मेंहीं पूरो करैगो। याते आपने जीवतुही याको नाशकरौं तौ भलो। यह विचारि आपनेस्थानते उठि हरुवैहरुवै चलि वह सिंहके पास आयो तब वह याहि देखि क्रोधकरि बोल्यो। अरेतू अबेरो क्यों आयो। पुनि शशाने कर जोरि यह वचन सुनायो। स्वामी मेरो कछुदोष नाहीं। हौं चल्यो

आवतुहौं तुमपाहीं गैल माहिं दूजो सिंहमिल्यौ। तिन मोसों कह्योरेतू कित चल्योजातुहै। मैं कही कि हौं आपने स्वामी पास जातुहौं। उनकह्यो या बनकोस्वामी तो मैंहौं। और स्वामीह्यां कहांते आयो। सुनि मैं कह्यो कि आजुलुड़ाय तो तुमको ह्यां कवहूं न देख्योहौं। इतनी बातके सुनतेही वाने क्रोधकरि मोहिं बैठायराख्यो। तद मैं वासों कह्यो कि यह सेवकको धर्म नाहीं जोस्वामी काजमें विलम्बकरै। तुममोहिंरोंक्यो है सु मेरो ठाकुर न जानैगो। बरन मेरो कह्यो झूंठमानैगो अरु निजमन में कहैगो कि यहघरजाय सोरह्यो औ मोसों आय मिथ्या भाषतुहै। याते तुम मोहिं जनि अटकावो। हौं आपने स्वामी पास होयआऊं। वहमेरी बाट जोवतुहोयगो। तुम्हें यह बचन दिये जातुहौं कि मैं स्वामीको काहि उलटे पायँन वगादि आवतुहौं। या बातके कहेते उन वचन बंधकरि मोहिं बिदा कियो तबमैं तिहारेपास आयो। स्वामी यामें मेरो कहा दोषहै। इतनी बात सुनि सिंह बोल्यो अरे मेरेबनमें और सिंह कहांते आयो तूमोहिं वाहि अवहीं दिखाव। मैं वाको विनमारे आजभोजन न करिहौं। ऐसे बातैंकरि वे दोऊह्यांतेचले आगे २ शशा पाछे २ सिंह। जब चलतु चलतु वनमें कितनी एकदूरपहुंचें तब शशा एककुआँके ढिगजाय ठाढ़ो भयो। तहां सिंहबोल्यो अरे वह तोहि रोकानिवारो कहां है शशाने उत्तर दियो कि स्वामी वह तिहारे भयते या कूपमाहिं पैठ्यो है। इतनी सुनि सिंहने क्रोधकरि कुआ के पनघटापर जाय ज्यों जलमाहिं देख्यो त्यों वाहि वाकोही प्रतिबिम्ब दृष्टि आयो। परछाईं देखत प्रमाण वह जलमें कूद्यो औ डूबि मस्यो। तब शशाने आपने स्थानपरआय सब वनबासियन को सुनायो कि हौं सिंहको मारिआयौं। मैंने तिहारो जन्म जन्मको दुःख दूरिकियो। यह सुनि सबबनवासियन वाहि आशीर्वाददियो॥

इतनीकिथाकथ कागने कागलीते कह्यो कि हेप्रिये तू देखि ज्यो कामबुद्धिते भयो सो बलते कबहूं न होतो। पुनि कागली

बोली स्वामी जामें भलोहोय सो उपायकरो। तद वायसह्याते उड़ि आगेजाय देखै तो एकराजपुत्र काहूसरोवरके तीरपै वस्त्र शस्त्र आभूषणराखि वामें स्नानकरतुहै। ताकी मोतिनकी माल यह लैउड्यो अरु आपने खोंदापै जाय वह माल साँपके कण्ठमें डारि अलग होय बैठ्यो। याके पाछे लागे वा राजाके सेवकहू देखत चलेआये हे। तिननि जब कागकी चोंचमें हार न देख्यो तब विनमें ते एक रूखपर चढ्यो। ताने देख्यो कि खोड़रमेंकारो नाग वह मालापहरे बैठ्योहै। यह देखि राजाके वा किंकरने निज मनमाहिं विचारयो कि माला तो देखी पर अब कुछ बिनउपाय हाथ न ऐहै। यासों कछु यत्न कीजे। इतनो कहि वाने सर्पको तीरनिते मारि माला राजपुत्रको ल्याय दई। तातेहौं कहतु हौं भाई उपायकिये कहा न होय। बहुरि करटक कही भाई तुम जो जानो सो करो। आगे दमनकने ह्यां ते उठि पिंगलसिंहकेपास जाय कह्यो कि महाराज यद्यपि तिहारेपास हमारो कछु काम नाहीं पर समय असमय आपके निकट हमको आवनो उचितहै कह्योहै कि जब राजा कुमार्गमें चलै तब सेवकको धर्महै जु राजा को चितायदेइ। औ न जतावै तो सेवकको धर्मजाय। आगे राजा मानो कै जिन मानो परवाको कहनो योग्यहै। महाराज राजा भोगकरिबेको है औ सेवक सेवा करनिको। पुनि कह्यो है जो राजाको राजबिगरै तौ मंत्रीको दोष ठहरे। राजाको कोऊ कछु न कहै। यातै प्रधानको चाहिये अपने स्वामीके काज कष्टपाय धन तनदेइ पर राज्य न जानिदेइ। अरु जो प्रधान राजकाज बिगरत देखि राजा सों न कहै सो कैसो सेवक। औ जो राजा समय असमय किंकरकी बात न सुनै सो कैसो ठाकुर। पिंगलबोल्यो तुम कहाकह्यो चाहतुहो सो कहो। दमनक कहनिलाग्यो पृथ्वीनाथ यह संजीवक तिहारी निन्दाकरतुहै अरु कहतुहै कि अब यह राजा प्रतापहीन भयो। प्रजाकी रक्षाकरी चाहिये। या बातसे महाराज मोहिं ऐसो समझपरयो कि अब वह आप राजाकियो

चाहतुहै। यहबातसुनि राजा चुपह्वैरह्यो। पुनि दमनक बोल्यो धर्मावतार तुम ऐसो प्रचण्ड मन्त्री कियो कि जो राजकाज को मतो तुमते न पूंछि एकाएकी आपही राज्य करनिलाग्यो। सो भलो नाहीं। जैसे चानक मन्त्री ने राजानन्दकको मार्‌यो कहूं वैसे न होय। राजापूंछी यह कैसी कथाहै। तहां दमनक कहतु है॥

काहू देशमें नन्दक नाम राजा। वाको चानकनाम मन्त्री सो राजा वा मन्त्री को अपने राजकाजको भारदै आप निश्चिन्तहोय आनन्द करनिलाग्यो अरु मन्त्रीराज। एकदिन वहराजा प्रधानको लारलै अहेरको गयो। वनमें जाय एकमृग देख्यो। वाकेपाछे विननि घोड़ादपटे। तद और लोगहू झपटे पर इनके अश्वनकी समान काहूको अश्व न पहुँच्यो। पुनि सबलोग अटपटाय पाछे रहे औ वे दोऊ आगे गये। जब हिरण चपरि उनके हाथते वनमें पैठ्यो तब राजाहू घाम प्यासको मार्‌यो घोड़ा ते उतरि एक रूखतरे बैठ्यो। निदान वह महीपति आपनो हय प्रधानको थँभाय तृषाको मार्‌यो ह्वांते उठि जलखोजतो चल्यो कितेक दूरजाय देखै तो एक वापी निर्मलजल भरी वाहि दृष्टि परी। वह जोवतु प्रमाण प्रसन्नह्वै वामें नीर पीवन उतर्‌यो। जलपी फिरनिलाग्यो। तो वाने एकपाथरमें यह लिख्यो बांच्यो कि राजा औ मन्त्री तेज अरु बलमें समानहों तो द्वैमेंते एक को लक्ष्मी त्यागै। यह बांचि वह पाहनपै कांदा लपेटि मन्त्री के ढिग आयो। पुनि मन्त्रीहू जलपीवन वा बावरीमेंगयो औ उनदेख्यो अरु कह्यो कि यह तो कोऊ अबहीं पाहनपै गार लथेर गयो है। बहुरि उन पाथर धोय लिख्योपढ़ि निज मनमें कह्यो कि राजाने मोसों दुरावकियो। ऐसेसमझि पानीपी मन्त्री राजाकेपास आयो। राजा सोयो। तब मन्त्री ने हन्यो। याते महाराज हौं तुमसों कहतुहौं कि जो वलवान् प्रधानहोय सो आपही को राजाकरि मानै। अरु जो राजा एकही मन्त्री को अधिकार सौंपै तो वह गर्वकरै औ गर्वते अज्ञानहोय अज्ञानभये वाहि धर्म अधर्म को बि-

चार न रहै। कह्यो है बिष मिल्यो अन्न दियो दान अरु दुष्ट मन्त्री इनको निकट कबहूं न राखिये महाराज जो सेवकको धर्महो सो मैं तुमसों कहि सुनायो। आगे आपनी इच्छामांहिं आवे सो करो। संसार में ऐसे लोग थोरे हैं जिनको राज्य औ धनकी लालसा नाहिं। ताते मैं तुमसौं अब पुष्ट कहिदेतहौं कि वह तिहारो राज्य लियो चाहतुहै। आगे तुम जानो। सिंह बोल्यो संजीवक मेरो बड़ोमित्रहै। वह मेरो बुरोकबहूं न चेतैगो, क्योंकि जो प्रियहै सो अप्रिय न होय। कह्यो है अग्नि घरजरावै तौहूं अग्नि बिन न सरै। बहुरि दमनक कही कि महाराज कोऊ कितेककरो पर दुर्ज्जन औ गँवार आपनो जातीय स्वभाव न छोड़ै। ज्योंकूकरा की पूंछ तेलमसल सेंकिये तऊ टेढ़ीकी टेढ़ीरहै त्यों नीच को सन्मानकरिये। तौहूं भलो न मानै। अरु नींबको मधुदै सींचिये पर वाको फल मीठो न होय। कह्यो है प्रीतम सो जो आपदा निवारै। कर्म वह जाते अपयश न होय। स्त्री अरु सेवक सो जो आज्ञाकारी रहै। बुद्धिमान् वह जो गर्व न करै। ज्ञानी सो जो तृष्णा न राखै। पुरुष वह जो जितेन्द्रिय होय। अरु महाराज मंत्री वह जो हितकारीहोय। संजीवक तिहारो सुखदेवा नाहिं यह दुःख को मूलहै। याको शीघ्रही नाशकरौ। कह्योहै जो राजा धनान्ध कामान्ध होय आपनो भलोबुरो न जानै सो इच्छामातो रहै। अरु जब अहंकार ते दुःख पावै तब मंत्रीको दोष लगावै या बात के सुनवेते सिंह ने जीमें बिचार्यो कि बिन समझे बूझे काहूको दंड देनो उचित नाहीं। पुनि दमनक कही पृथ्वीनाथ संजीवक आजही तिहारे मारिबेके उद्यममें लाग्योहै। तुम वाहि बुलावो अरु भेद दुराओ। कह्योहै मंत्री औ बीज गुप्तराखिये। जो गुप्त न राखिये तो वाको फल न होय। अरु दुष्ट को यह स्वभावहै कि पहले मीठी मीठी बातैं कहि मन धन हाथकरि लेइ। पाछे दुष्टताकरि वाको सर्बसु खोय देइ जैसे शकुनि ने दुर्योधनको कपट सिखाय महाभारत करवायो। पिंगल कही

यह हमारो कहाकरिहै । बहुरि दमनक बोल्यो कि महाराज तुम यह जिनजानो कि हम बलवान् हैं कह्यो है समयपाय छोटोहू बड़ोकाज करै जैसे एक टिटोरने समुद्रको महाव्याकुल कियो । राजा पूंछी यह कैसी कथाहै । तब दमनक कहवेलागयो ॥

समुद्र के तीर एक टिटोर और टिटीहरीरहै । जब टिटीहरी गर्भसों भई तब वाने आपनें स्वामी सों कह्यो कि रे स्वामी मोहिं अण्डाराखिवे को ठौरबताव । उनकही यह तौ नीकी ठौर है । पुनि टिटीहरीने कह्यो ह्यांतो समुद्र की तुरंग तरंग आवति है । वह हमैं दुःखदेहै । टिटोरकही जो यह हम को दुःखदेहै तो हमहूं याको उपावकरिहैं बहुरि टिटीहरी हँसकर बोली कहां तुम और कहां समुद्र । यासों प्रथमही विचारकरि काजकरो । तो पाछे दुःख न होय । पुनि टिटोरकह्यो तुम निश्चिन्ताई सों अण्डाधरो । फेर हम समुझ लेहैं यह बात सुनि वानें तहां अण्डादये अरु समुद्रहू वाकीसामर्थ्य देखिवे के लिये लहरिसों अण्डा बहायलैगयो । तब टिटीहरी बोली रे स्वामी अण्डा तो सागर बहाय लैगयो । अब कहा करैगो सो कर । टिटोरकही हे प्रिये तू कछु चिन्ता जनि करै । हौं अवहीं लैआवतु हौं । इतनो कहि वह सब पक्षियनको साथलै गरुड के पासगयो अरु गरुड ने श्रीनारायणसों जाय कह्यो । श्रीनारायणजूने समुद्र को दंडदै आज्ञाकरी विन अण्डापाछे दये । तब वह सब पक्षीसमेत अण्डालै आपने घर आयो । तातें महाराज हौं कहतुहौं कि विन काम परे काहूकी सामर्थ्यता जानी न जाय । बहुरि राजा कही हम कैसे जानैं कि वह हमते लरिवेको आवतु है । दमनक बोल्यो महाराज वाको तौ सींगको बलहै । जब सींग साम्हने करै तब जानियो । अरु जो तुमते होसकै सो करियो ॥

इतनी बात कहि ह्यांते उठि दमनक संजीवक बर्द्धके निकटगयो औ मुख सुखाय वाके सन्मुख ठाढ़ो भयो । तब उनि याते कुशल पूंछी । इन उत्तर दियो मित्र सेवक को काहेकी कुशल क्योंकि

वाकोतौ मन रात्रिदिन चिन्ताहीमें रहतुहै। अरु विशेष राजाको सेवक तौ सदा सर्व्वदा भयमान रहतुहै। कह्यो है द्रव्यपाय काने गर्व न कियो। संसारमें आय काने आपदा न भुक्ती। काकोमन स्त्रीके वश न भयो। कालकेहाथको न पर्‌यो राजाकाकोमित्रभयो। वेश्या काकी स्त्री भई। वैरी के फंद को न पर्‌यो। जब दमनकने ऐसी ऐसी उदासी लिये बातें कहीं तब संजीवक बोल्यो कि मित्र तुमपर ऐसी कहा गाढ़परी जो ऐसे उदास वचन कहतुहौ। तुम मोसों तो कहो। दमनक कही हितू मैं बड़ो अभागो हौं। जैसे कोऊ समुद्र माहिं बूड़त सांपको पाय न पकरि सकै न छांड़ि सकै तैसे हौंहूं एकबात है। ताहि न कहि सकौं न कहे बिनरहि सकौं। क्योंकि कहौं तो राजा रिसाय औ न कहौं तो मेरो धर्म्म जाय। ताते दुःखसमुद्र में पर्‌योहौं। संजीवक बोल्यो मित्र जो तिहारे मनमें है सो कहो इनकही भाई हौं कहतुहौं। यह बात अप्रकट राखियो अरु जो तिहारी बुद्धि में आवै सो कीजो। क्योंकि तुम ह्यां हमारी बाहते आये याते अपयशसों डरि आपनो परलोक सँवारबे को तुम्हैं सावधान किये देतुहौं। तुम चौकस रहियो। राजाकी आज तुमपर कुदृष्टि है। उननि मोसों कह्यो कि आज संजीवकको मारि सकल परिवारको तृप्तकरिहौं। यह बात सुन संजीवक ने अतिदुःख पायो। तब दमनक बोल्यो कि प्रीतम तुम दुःख जिनकरो अब जो बुद्धिमें आवै सो करो। बहुरि संजीवक कहा यह काहूने सांच कह्यो है जो कृपण के धन होय मेह ऊसरमें बर्षै सुन्दर स्त्री नीच सों रतिकरै राजा कुपात्र को बढ़ावै। इतनी कहि उनि निज मनमें बिचार्‌यो कि यह आपसे कहतुहौ कै राजाने ऐसो बिचार्‌योहै यों शोच पुनि मनहीं मन कहनिलाग्यो कि उज्ज्वल के सङ्ग मलिन मलिनता करि शोभा न पावै ज्यों काजरते नेत्र शोभा पावै पर काजर शोभा न पावै। ताते याकी कहा सामर्थ्य है जो यह आपते कहै। उनहीं कही होयगी। मैं तो सावधानी सों सेवाकरतुहौं। राजाने ऐसो

मेरो कहा अपराध देख्यो जो मनमैलो कियो। पुनि बूझ्यो कि याहूमें आश्चर्य नाहिं क्योंकि जैसे कोऊ देवताकी अति सेवा करै अरु वह वाहि थोरेही दोष में भ्रष्ट करि डारै तैसे राजाहू नेक दोषमें मारै। अब याको कछु उपाय नाहिं ऐसे संजीवकने आपने मन माहिं समुझि बूझि दमनकते कही भाई मैंने राजाको ऐसो कहा काम बिगार्‌यो है जो उनि ऐसी बिचारी। अब हौं वाकी सेवा न करौंगो क्योंकि राजसेवा करनो महाकठिन है। जो भलो कामकरै बुरो मानै सेवा करनो योग्य नाहीं। अरु राजा की प्रीति और लौं नाहीं रहति। कह्यो है असाधुको उपकार करनो औ मूर्खको उपदेश देनो वृथा है। पुनि जो चन्दनमें सर्प औ पानीमें सिवार आपते आप आवतिहै त्यौंसुखमें दुःखहू आय घटतुहै पुनि दमनक बोल्यो मित्र दुष्टजन प्रथम दूरते आवतु देख जो आदरकरि बैठाय हितसों प्रियवचनकहै सो न जानिये कि वह पाछेकहा दुष्टताकरै। कहतुहैं समुद्रतरिबेको जहाज अंधकारको दीपक गरमीको बीजना मातंगजको अंकुश ऐसेविधाताने सबके उपाय बनायेहैं। पर दुष्टजनके मनको कछुयत्न न करिसक्यो। बहुरि संजीवक कही भाई हौं धान पानीको खानहारोहोय। याकेवश क्यों रहौं। कह्यो है राजाके चित्तमें मित्रभेदपर्‌यो मिटतुनहीं। ज्यों स्फटिकको पात्रटूटि फेरि न जुरै त्यौं नरपतिको मनहू उचटि फेरि न मिलै। कहतुहैं राजाको क्रोध वज्रतुल्य है पर एकसमय वज्र सों बचै पै भूपाल के क्रोधसों कबहूं न बचै। ताते अब दीन होय मारखानो नीकोनाहीं वरन संग्राम करि मरनो भलो क्योंकि शूरतामें दोयबात। जीते तौ सुखभोगवै औ मरै तौ मुक्तिपावै। यासों या समय युद्धकरनोही उचितहै। फेरि दमनक बोल्यो अहो मित्र तुमते हौं कहेदेतुहौं कि जब वह कान पूंछ उठाय मुखपसारै ताबेर तुमते जो पराक्रम बनिआवै सो कीजो। वामें काहूभाँति कसर जिनकीजो। कह्योहै बलवन्त होय आपनो बल न प्रकाशै तौ निरादरपावै। जैसे तेजहीन अग्निको सब

कोउ उठावै तैसे निर्बल मनुष्यको सब सतावै। इतनो कहि दमनक बोल्यो भाई अबहीं यह बात मनमें राखो काम परे बूझो जायगी। ऐसे कहि दमनक संजीवककतें बिदाहोय करटकके ढिग गयो। तब उनि पूछ्यो कि तू कहा करि आयो। इनकही मैं दोउ-अनिमाहिं वैर कराय आयो। पुनि करटक कही यामें संदेह नाहीं। कह्यो है दुरजन कहा न करि सकै क्षमाते कोन पण्डितकहावै। पुनि कैसहू बुद्धिमान् होय पर असाधु की संगतिते बिगरैही बिगरै क्योंकि दुष्टके संगते जो न होय सो थोरो जैसे अग्नि जहाँ रहै तहाँई जरावै। ऐसे दोऊ बतराये पुनि दमनक पिंगलके निकट गयो। कर जोरि सम्मुख ठाढ़ो भयो अरु बोल्यो महाराज सावधान होय बैठो पशु युद्धकरबेको आवतुहै। ज्योंहीं सिंह सँभल बैठ्यो त्योंहीं बिजार क्रोधभरयो वा वनमें बैठ्यो। पुनि जिमि वाहि देखि सिंह उठिधायो तिमि यानेहू पहुँचिकै संगचलायो। अरु दोऊ पशु यथाशक्ति लरे। निदान सिंहके हाथते बर्द्द मारयो परयो तब सिंह पछितानि लाग्यो कि हाय मैं यह कहा कियो जो राज औ धनको लोभकरि बापुरे तृण अन्नखानवाले बिजार को मारि महापाप शिरलियो। या संसारमें धनके भागी अधिक हैं पर पाप बटावनिहारो कोऊ नाहिं। कह्यो है सिंहराजा सो जो गजराज को पछारै। पुनि दमनक बोल्यो महाराज यह कहा की रीतिहै जु तुम शत्रुको मारि पछितातु हो। राजधर्म में कह्यो है कि पिता भ्राता पुत्र मित्र जो राज लेनकी इच्छा करै ताहि नरपति बिनमारे न रहै। जो बडो धर्मी होय तौहू दया न करै। पुनि ज्यों संन्यासीको क्षमा भूषणहै त्योंहीं राजाको दूषण बहुरि नीति शास्त्र में कह्यो है दयावंत राजा सर्वभक्षी ब्राह्मण कामातुर स्त्री सेवक शत्रु दुष्ट मित्र असावधान अधिकारी औगुणनाशक आदि जितने हैं तिन्हैं तत्काल त्यागिये। पुनि ऐसेहू कह्यो है कि जैसी वेश्या तैसो राजा। कहूं लोभी कहूं दातार कहूं सांचो कहूं झूंठो कहूं कठिन कहूं कोमल कहूं हिंसक कहूं दयालु अरु सदा अधिक

धनंजनचाहै। या भांति दमनक नें सिंह राजाको समझाय बुझाय वाको शोक मिटाय राजपाटपरि बैठाय अरु पुनि आप मंत्री होय सब राजकाज करनि लाग्यो। इतनी कथा कहि विष्णुशर्म्माने राजपुत्रनिको आशीश दई कि महाराजकुमार तिहारे शत्रुनिको मित्रभेद होय अरु मित्रनिको कल्याण॥

अथ तृतीय कथा आरम्भ॥

विष्णुशर्म्मा जब और कथा को आरम्भ करनि लाग्यो तब राजपुत्रनि कही अहो गुरुदेव अब विग्रह सुनिबेकी लालसा हमको है सो कृपा करि सुनाइये। विष्णुशर्म्मा बोल्यो महाराजकुमार तुम शांतस्वभाव होय सुनो। हौं विग्रहकी कथा कहतुहौं एक हंस औ मोर बल बुद्धि राज प्रतापमें समानरहे। पर एक कागने विश्वासघात करि हंसको हरायो। अरु मोरको जितायो। राजकुमारनि कही यह कैसी कथा है। तब विष्णुशर्म्मा कहनि लाग्यो॥

कर्पूरद्वीपके माहिं पद्मकेलि नाम एक सरोवर है। काहू समय तहां के सब पक्षिन मिलि एक हिरण्यगर्भ नाम हंसको राजा कियो। सो हां राज्य करनि लाग्यो। कह्यो है जहां राजा न होय तहांकी प्रजा सुखसों न रहै। जैसे समुद्र में बिन केवट नाव न चलै तैसे संसारमेंहूं राजाबिन धर्म न निभै। राजा प्रजाकी नित नित अधिकाई चाहै निज पुत्रकी समान जानै। अरु जो राजा प्रजाको पालनकरि न बढावै सो जगत्में प्रतिष्ठाहू न पावै। आगे एक समय वह राजा हंस रत्नसिंहासन पर सभामाहिं बैठ्यो हो। तहां कौनहू द्वीपते एक दीर्घमुख नाम बगुला आयो औ दंडवत्करि हाथजोरि राजाहंसके सन्मुख ठाढो भयो। तब राजा ने वाहि आदरकरि बैठाय पूछ्यो कि अहो दीर्घमुख जा देशते तुम पधारे तहांके समाचार कहौ। उनि कही महाराज याहीबात के लिये तो हौं तिहारे ढिग आयो हौं। कि जम्बूद्वीपमें विन्ध्याचल

नाम एक बड़ो पर्वतहै। तहांके सब पक्षियन को राजा मयूरहै। सो वा ठाम बसतु है। तिन मोहिं वचननि में चतुरदेखि पूछ्यो कि तू कहांते आयो औ कोहै। तब मैं कही कर्पूरद्वीपते तो मैं आयो अरु ह्वांके महाराज हिरण्यगर्भको सेवकहौं। तिहारोदेश देखिबेको ह्यां आयो हौं। तब उनि पक्षियन कही कि तिहारे हमारे देश औ राजानिमें कौन भलोहै। पुनि मैं कही कि तुम कहाकहतु हो। अरे कर्पूरद्वीप तो स्वर्ग समान अरु आज राजा हंस दूसरो इन्द्रहै। या बुरे देशमें तुम क्यों परेहो। चलो हमारे देशमें बसो। जब यह बात मैं कही तद उनपखेरुअन मोपै अतिक्रोध कियो। कह्यो है कि जैसे सर्पको पयप्याये अधिक विषबढ़ै तैसे पण्डित को उपदेश मूर्ख के मन में न आवै बरन वह उलटो वाही को सतावै जो वानर को उपदेशदे बिचारे पक्षियन आपनो कियो आप पायो। राजा पूंछी यह कैसीकथाहै। तद बक कहनि लाग्यो॥

नर्मदा नदी के तीर एक पर्वत ताके तरे एक सेमल को रूख। वापैपक्षी आपने घौंसुआ बनाय सुखसों रह्योकरैं एक बेर वर्षा काल में भादौंकी अँधियारी रात्रि समय दामिनी दमकि दमकि घटा घिरिघिरि आई अरु बड़ी २ बूंदनि घनगरज्जि गरजि जलमूसलधार बर्षनलाग्यो। ताही काल एक वानर वा पहाड़ते भीजतुउतरि शीतको मार्‌यो थर २ कांपतु ताही रूखतरे आय बैठ्यो वाहि दुःखित देखि दयाकरि पक्षियनि कह्यो अरे वनचर तू देख तो सही कि हमनि अपनी चोंचसों तृणआनि घरकियो है। तोहिं तो भगवान् ने हाथ पायँ दये हैं। तैंने क्यों न घरबनायो। जो तैं घरबनायो होतो तो या समयमें सुखसों पायँपसारे सोतो यह सुनि वा मर्कट ने जान्यो कि ये पक्षी या समय निजघर में सुखसों बैठे हैं। ताही ते मो पण्डितको मूर्ख जानि उपदेशदेतु हैं। यह समझ वह हँसके बोल्यो अरे वर्षाबीते तुम मेरोकियो देखियो। इतनो कहि वह क्रोधकरि मष्टमारि बैठ्यो। इतेकमाहिं भोर भयो अरु मेह उघरिगयो। जब सूर्यदेवने प्रकाश कियो

तब वह वा रूखपर चढ़ि सब पक्षियन के अंडा भूमि में पटकि घोंसुआ खसोटके बोल्यो अरे मूढ़ पक्षियो जे पण्डित हैं ते कहा घर करबे को असमर्थ हैं। तिनको तो स्वभावही है कि घर नाहीं करतु। यह वाकी बात सुनि बापुरे पखेरू मौन साधि रहे। ताते हौं कहतु हौं कि मूर्खको उपदेश कबहूं न दीजे। पुनि राजा बोल्यो आगे कैसी भई सो कहौ। बगुला बहुरि कहन लाग्यो महाराज पुनि उनि पक्षियन मोसों रिसायकै कह्यो अरे तेरे हंसको राजा किनकियो। मैं कह्यो रे तेरे मयूरको किन राज्य दियो। या बातके सुने ते वे मोहिं मारनको उठे तब मैंहूं आपनो पराक्रम दिखायो। कह्यो है मनुष्यको और समय शिक्षाबूझिये पर जब शत्रु लरबेको आवै तब पराक्रमही करनो उचित है। जैसे नारी को लाज आभरण है तैसे रति समय ढिठाईहू आभूषणहै। राजा हंसकही जो आपनो अवसर न देखि क्रोधकरै सो अतिदुःखपावै। अरु ऐसेही जो आपनी सामर्थ्य न जानि चेष्टाकरै सोऊ ज्यों आपनी सामर्थ्य न जानि बाघकोचाम ओढ़ि एक गदहा मार्योगयो बक बोल्यो यह कैसी कथाहै। तहां राजा हंस कहतुहै॥

हस्तिनापुरमें एक बिलासनाम धोबी रहै। ताके घर एक गदहा वापै बोझ लादतु लादतु जब वाकी पीठपर चांदीपरी तब वह धुबिया गदहाको रात्रि के समय बाघको चाम उढ़ाय काहू यवकेखेतमें छोड़िआयो। वा खेतको रखवारो ताहि देखतही परायो। याही भाँति यह नित नित वाको खेत खाय २ आवै। तब वा रखवारेने नाहर मारबेको यत्नकियो औ वाही खेतकीपगारके निकट भूरी कामरीओढ़ि धनुषचढ़ाय आपहू काहू झुण्डतरेदबकि रह्यो। द्वै पहर रातके समय अँधेरे में गदहा आयो औयाकीभूरी कमरियाको देखि गदही जानि वह कामांधहोय रैंकतुधायो। पुनि रखवारेने जान्यो कि यह तौ गदहाहै पर बाघको चाम ओढ़ि आयो है। ऐसे कहि क्रोधकरि रखवारेने वाहि लौठियन लौठि

यत्न मारि गिरायो । वाको प्राण गयो तातें हौं कहतहौं कि आपनो वल विचारि काजकीजै ॥

इतनी कथा कहि पुनि राजाहंस बोल्यो आगे जो भई सो कहौ । बगुला कहनिलाग्यो महाराज उन पक्षियन मोसों कही अरे दुष्ट बगुला तू हमारे देशमें आय हमारेई राजाकी निन्दाकरतुहै । इतनो कहि उननि मोहिं चोंचनिसों मारयो अरु कह्यो अरे जैसे कुआंको दादुर कुआंही को सराहै तैसे तू है अरु तेरो राजा । यह सुदेश छुड़ाय तू हमको वा कुदेशमें जैवेको कहतुहै । ऐसेंहूं कह्यो है चेष्टाकरि बड़ो रूखसेइये । जो फल न मिलै तौ सीरी छाहँ बैठबेको तौहू मिलै । अरु ओछेकी संगतितें प्रभुता जैसे कलार के हाथ में दूधको बासन होय तौहू जो देखै सो कहै यामें मदिराहोगी । अरु बड़ेके नामतेहू बड़ाई पाइये जैसे चंद्रमा के नामतें शशा सुखीभये । यह सुनि मैं उनितें पूंछी यह कैसी कथा है । पुनि उनमेंतें एक पक्षी कहनि लाग्यो ॥

एक समय वर्षाकाल विनवरषे वनमें पानी की अतिखैंच भई तव हांके हाथियन अपने यूथपतिसों कही स्वामी हां विनपानी प्यासके मारे मरतुहैं । यह सुनि गजराज ने एक सरोवर पहाड़में वतायो । वाकेतीर शशा बहुतरहैं । जव गज वहां जल पीवन को गये इनके पायँनतरे बहुत से शशा चांपेगये । तब एक शिलीमुख नाम शशारह्यो वाने विचारयो कि जो या भांति ये हाथी इत आयेहैं तौ एकहू सजातीय हमारो यहां जीवतु न रहैगो । यह वात सुनि एक विजयनाम अतिवृद्ध शशाबोल्यो अहो तुम अव भय जिनकरो मैं या उपाधिको यत्नकरिहौं । इतनी कहि वह वहांतें उठिचल्यो । औ गैल में चलत चलत वाने मनमांहिं कह्यो कि हाथियन के निकट कैसें जैहौं । वेतौ छूवतमारैं । इतनो शोचि वह एक पर्वतपै चढ़ि दिखाई दियो अरु इन जव उनतें राम राम करी तव उनमें ते एकगज गर्वकरि वोल्यो अरे तू कोहै इनकही रे हौं चन्द्रदूतहौं सो तिहारे पास आयो हौं पुनि उनानि कही आ-

पने आवनको प्रयोजनकह्यो.इनकही ओहिं चन्द्रमहाराज ने यह कहि तुमपास पठायो है कि आज तुमनि आय हमारे या चन्द्रसागर में पानी पियो सो तो भली करी। पर तिहारे पायँनतरे हमारे शशाचापेगये याते हम तुमते अतिप्रसन्नभये क्योंकि हमारी ओर ते शशाही या सरवरके रखवारे हैं। मैं इनकी रक्षाकरतुहौं याहीते मेरो नाम लोग शशी कहतुहैं यह सुनि गजराजबोल्यो कि भाई तू यह सांच कहतु है। पुनि शशाने कह्यो कि यह धर्म दूत को न होय जो मिथ्याभाषै। कह्यो है दूत को कोऊ मारिबेकोहूं लैजाय पर वह झूंठ न बोलै। ऐसे सुनि गजराज भयमान होय बोल्यो कि आज हम इत अनजाने आयकढ़े पर बहुरि न आय हैं। पुनि शशाने गजपति सों कह्यो कि तुम निज मनमें कछु जनिडरौ। हौं तिहारो अपराध चंद्रदेवसों कहि क्षमाकरायहौं। ऐसे वाको सम्बोधन करि रात्रि भये गजराज को सरके तीर लैजाय चन्द्रमा को प्रतिबिम्ब दिखाय हाथजुरवाय आप पुकारिकै बोल्यो हे चन्द्र महाराज ये बापुरे गज तिहारे सरोवर पर अनजाने आय कढ़े हैं इनको जो अपराध भयो है सो आप क्षमाकीजे। पुनि इनते ऐसो कबहूं न होयगो। इतनो कहि वाने हाथियनको बिदाकियो। औ तिननिहूं जलमाहिं प्रतिबिम्ब देखि सत्यजान्यो कि चन्द्रमा सरोवर में आयो है। ताते हौं कहतुहौं कि बड़ेके नामही ते कार्य सिद्धहोय। यह सुनि महाराज पुनि मैं कही अरे हमारो राजा बड़ो प्रतापी है। यह सुनि वे पक्षी मोहिं पकरि राजा मयूर के निकट लेगये। मोसों दण्डवत्करवाय हाथजुरवाय वाके सन्मुख ठाढ़ोराखि तिनपक्षियन राजा सों कह्यो महाराज यह दुष्ट बगुला हमारेही नगर में रहि हमारीही निन्दा करतुहै। राजाकही अरे यह कोहै औ कहांते आयो है। पक्षियन उत्तर दियो महाराज यह कहतु है कि हौं कर्पूरद्वीप के हिरण्यगर्भ राजाको सेवकहौं औ वाही देशते आयोहौं। यह सुनि वा राजा को मन्त्रीगीध बोल्यो कि तेरे राजाको मन्त्री को है। मैंकही सर्वज्ञ नाम कछुआ

सोई सब राज काज में प्रधान है । गीधबोल्यो कि कह्यो है जो संदेशी कुलवन्त युद्ध विद्या में निपुण, धर्मात्मा, आज्ञाकारी, प्राचीन, प्रसिद्धपण्डित, गुणग्राहक, द्रव्यउपायक, उपकारी, हितकारी होय ताको राजा मंत्रीकरै । पुनि एकसुआ बोल्यो पृथ्वीनाथ या जम्बूद्वीपके माहिं कर्पूरद्वीप है अरु ह्वां आपकोई राज है । या बात सुनि वह राजा बोल्यो कि तू सांच कहतु है । सो हमारेही देश में है । कह्यो है कि राजा बालक उन्मत्त धनवन्त औ स्त्री ये पांचो अनपावली वस्तु लैनंकोहूं हठकरैं । पुनि मैं कही कि जो बातनही प्रभुताई पाइये तौ होहूं कहतुहौं कि हमारो राजा हिरण्यगर्भही सब जम्बूद्वीप को राजाहै । बहुरि कीरकही यह कैसे जानिये । पुनि मैं कह्यो युद्ध कियेही जानिहौ । फेरि वह राजा बोल्यो कि तू आपने राजा सों जाय कह हम आवतु हैं । तब मैं कही आपनो बसीठ पठाओ । राजा ने कह्यो कौन को पठाइये । मैं कही कि ऐसे कह्यो है जो स्वामिभक्त, गुणवान्, पवित्र, चतुर, ढीठ, व्यसनरहित, क्षमायुक्त, धीर, गम्भीर संदेशी पराये मनको जाननिहारो जाको उत्तर न फुरै ऐसोहोय सो दूतके योग्य है । ताही को भेजिये । राजाबोल्यो ऐसे तौ हमारे ह्यां बहुत हैं । पर कह्योहै ब्राह्मणको पठाइये क्योंकि विप्र सत्यवक्ता औ अहंकाररहित होतुहै । पुनि मैं कही कि महाराज प्राचीन लोगनि के मुख सुन्यो है कि निजस्वभाव कोऊ नाहीं तजतु जैसे कालकूट विषने महादेव को कण्ठपायो पर श्यामता न त्यागी । पुनि मैं कह्यो कि महाराज सुआ को पठाइये । तब राजा मयूरने सुग्गा ते कह्यो कि कीर तुम या बगुला के संगजाओ अरु राजा हंससे हमारो सँदेशो कहि आवो । शुकबोल्यो महाराजकी आज्ञा मूड़पै पर या दुष्टबककी गैल हौं न जैहौं । कह्यो है दुष्टजन के साथरहे साधुजनहूं दुःखपावै जैसे रावण के समीप रहि बापुरो समुद्र बांध्यागयो पुनि ज्यों कागके संगरहि हंस औ बटेर मारी गई राजा पूंछी यह कैसी कथा है तब शुक कहनिलाग्यो महाराज

उज्जैन नगरी की गैलमें एक बड़ो पीपल को रूख। तापर एक काग अरु हंसरहे। ग्रीष्मऋतुकी दुपहरी माहिं एकबटोही घाम को मार्यो वाकी छाँहतरे आय शस्त्र खोल शिरकँपायसोयो जब घरीचार पाछे वाके मुखपर घामआई तब हंस दयाकरि वाके मुखपर छाँहकरिबैठ्यो अरु काग दुष्टताकरि वाके मुँह पै बीटकै भाग्यो। त्योंहीं बटोही जाग्यो औ वाने हंसको तीरसे मार्यो। आगे एकसमय सबपक्षी मिलि गरुड़की यात्राको चले। तामें एकबटेरहू कागके साथचली। तहां गैलमें एक अहीर दहेंड़ीलिये जातरह्यो। सो दहेंड़ी काग जुठाय भग्यो अरु बापुरी बटेर ह्वां मारीगई ताते हौं कहतुहौं महाराज दुष्टको संग काहू भाँतिकरनो उचित नाहीं। पुनि मैं कही भाई सुआ तुम ऐसीबात क्यों कहतुहो। हमारे तो जैसे राजा तैसे तुम। महाराज इतनो सुनि वह प्रसन्न भयो। कह्यो है मूर्खको अपराध करि स्तुति कीजै तो वह प्रसन्नहोय जैसे एक खाती स्तुति किये जार सहित स्त्रीकी खाट माथे लै नाच्यो यह सुनि राजाहंस कही यह कैसी कथाहै। पुनि बगुला कहनि लाग्यो॥

श्रीनगरमें मंदबुद्धि नाम एक खातीरहै। सो आपनी नारी को व्यभिचारिणीजानै पर वाहि जारसमेत कबहूं न पावै। एक दिन वाने वाकेजारको पकरबेकेलिये वासों कह्यो कि आज हौं गावँजातुहौं। सुतीन चार दिनमें आयहौं। इतनो कहि वह बाहर जाय फेरि घरमें आय खटियातरे छिपिरह्यो। वाकी स्त्रीनें ताहि गावँगयो जानि निजजारको बुलायो अरु क्रीड़ाके समय कछु आहटपाय जान्यो कि यह मेरी परीक्षा लेनको खटियातरे लुक्यो है। यों जानि वह मनमें चिंततिभई। अरु जब जारकही रमति क्योंनाहीं तब वह बोली आज मेरे घरको धनी घरनाहीं। याते मेरे भाये आज गावँ सूनो बनखण्डसों लगतुहै। पुनि जार कही जो तेरो वासों ऐसोही स्नेह है तो वह तोहिं काहे छाँड़ि गयो। उनि कही अरे बावरे तू यह नाहीं जानतु सुनु। कह्यो है कि

स्वामी स्त्रीको चाहै कै न चाहै पर नारीको यह धर्महै जु पतिको एक पलहू न बिसारै अरु भर्तारकी मारगारी श्रृंगार जानै। सो धर्मको पावै औ कुलवंती सती कहावै। धनी घरमें रहै कै बाहर पापीहोय कै पुण्यात्मा पर नारी वाहि न बिसारै क्योंकि स्त्री को अलंकार भर्तार है। पतिहीन अतिसुन्दरीहू नीकी न लागै औ तू जारहै। सो तौ पानफूलके समान एक घरीको पाहुनो दैवके संयोग आनिमिल्यो कर्मकी रेख मेटी न जाय। बिधातासों काहूकी कछु न बसाय। अरु वह मेरो स्वामी हौं वाकी दासी। जौलौं वह तौलौं मेरोजीवहै। वाकेमरे हौं सतीहोऊंगी। कह्यो है जो सती होय सो प्रथम तौ आपनेकुकर्मते छूटै। दूजे कैसेहूं वाकोभर्तार दुष्कर्मी पापी होय तोहू जेते देह में रोमहैं तेते वर्ष वह निज स्वामीको साथ लै स्वर्गभोगकरै। औ जैसे गारडू सांपको मंत्र कीशक्तिकरि पातालते बुलावै तैसेही सहगामिनी अपनेपतिको नरकसों काढ़ि परमगति दिखावै। यह बात सुनि वह खाती आपने जीमाहिं कहनि लाग्यो धन्य मेरे भाग जु ऐसी नारीपाई कि आपतरै औ मोहिंतरावै। वह ऐसे बिचारि उछाहको मार्यो उन दोउअन समेत खाटमाथे लै नाच्यो। तातें हौं कहतुहौं कि मूर्ख दोष देखिहू स्तुतिकिये प्रसन्नहोय। पुनि राजाहंसकही आगे कैसी भई। तब बगुला कहनिलाग्यो महाराज उनि दूत बिदा कियो है। सो मेरेपाछे आवतुहै। यह जानि जो बूझिये सोकरौ। या बातको सुनि वा राजाको मंत्री चकवाबोल्यो कि धर्मावतार यह बगुला दुष्टहै। यह काहूको सिखायो आयोहै कह्योहै वैद्य रोगी चाहै पण्डित गुणग्राहक ढूंढ़ै राजा शूर सेवक खोजै अधिकारी ठाकुरको बिग्रह मनावै। पुनि राजाकही याबातको बिचार जो करनो उचितहोय सो करौ। मंत्री कही महाराज प्रथम एक जासूस पठाय उनको कटक औ बिचारजानिये क्योंकि राजाकी आँख जासूसहै। जा राजाके जासूसरूपी नेत्र नाहिं सो आंधरो है अरु जाके आछे जासूसहोयँ सो नरपति घरबैठ्यो सब संसार

की विभव देखै। कह्यो है तीर्थ आश्रम देवालय तौ शास्त्र ते जानिये औ गूढ़बात जासूसते। ताते महाराज जो जासूस जल थलमें जासके ताहि पठाइये। औ अवहीं यहबात गुप्तराखिये। क्योंकि जो मंत्र फूटै तौ आगलौ सावधान होय। याते हौं कहतु हौं कि नीको जासूस पठाइये युद्ध जीतहोय। राजा औ मन्त्री ऐसे बतलाय रहे हैं कि पवँरिया बोल्यो महाराज एक सुआ जम्बूद्वीपते आयोहै। सुपवँरि पै ठाढ़ोहै। वाहिं कहा आज्ञा होतीहै यह सुनि राजा ने चकवा की ओर देख्यो। तब चकवा बोल्यो महाराज पहले वाको डेरा दिवाओ। पाछे बूझी जायगी। इतनी बातके सुनतेही द्वारपाल वाहिं डेरा देनगयो। बहुरि राजाकही अहो विग्रह तौ उपज्यो। चकवा बोल्यो महाराज मंत्री को यह धर्मनाहीं जो स्वामी को लड़ावै कै भगावै। कह्यो है बिचार कै युक्ति सों बलकरै तौ थोरे पराक्रमहीते कार्यसिद्धहोय जैसे मनुष्य काठकी सांगते भारी पाथर उठावै तैसे नरपतिहू युक्ति किये जयपावै। पुनि कहतु है योंतो सबही शूरहैं पर और को बल देखि न डरै मन स्थिर राखै ताही को बलवान् कहिये। बहुरि जो समय पाय काम करै तौ वेगही सिद्धिहोय ज्यों वर्षाकाल की खेती अरु महत् के गुण स्वभाव ये हैं कि समय बिन दूरिते डरावै। अवसर पाय नेरे आय शूरातन करै आपदामें धीर्य्यराखै सब बात की सिद्धिमें उतावली न करै। कह्यो है। धीरो पानी पर्वत फोरै महाराज चित्रवर्ण राजा बड़ोबलीहै। बलवान् के सन्मुख युद्धकरनो योग्यनाहीं जो निर्बल सबल के सन्मुखहोय लड़ै तौ दीप पतंगकी भांतिहोय। कै जैसे कोऊ चैंटीको पाथरन मारे तैसे मार्योजाय। पुनि कह्यो है सन्मुख युद्ध करिबे को काल न होय तौ कछुआ कैसे पायँ सकेलि बैठिये। समय पाय नाग कैसो फन निकारिये क्योंकि समयजानि छोटोहू उपायकरै तौ बड़े को मारै। ज्योंवर्षाकाल पाय नदी को प्रवाह ठाढ़े रूखको गिरावै। त्योंसमयलहि सब काम हाथ आवैं याते सन्मुख लड़बे

को बिचार न करि गढ़ सवाँरिये। तौलौं वाके दूतको बिरमाय राखिये। कह्यो है कोट ऊपरको एक योधा सहस्र सों लरै। पुनि जा राजा के देशमाहिं गढ़नाहिं ताको राज्य शत्रु बेगही लेय। कोट बिन राजा को राज्य स्थिर न रहै। ताते महाराज अब कोट बनाइये। कह्यो है नदी के तीर गढ़ रचिये तरे खाईं खनाइये चारों ओर निविड़बन राखिये। औ पैठबे निकरबे। व। गैल भांति भांतिके अस्त्र शस्त्र यंत्र गोला भरिये। अरु अन्न रस धन जन को संचय सदा करिये। राजा बोल्यो गढ़ साजबे को काज कौन को देयँ। मन्त्री कही जो चतुरहोय ताको देउ। पुनि राजा कही या काज माहिं तो सारस निपुण है प्रधान कही वाही को दीजिये। बहुरि राजा ने सारस को बुलाय करि कह्यो कि तुम नीकीठौर देखि गढ़ रचौ। उनिकही महाराज मैं या सरोवर को अनेक दिन ते तकि राख्यो है कि याहि माहिं राखि गढ़ रचिये। तो भलो क्योंकि याके तीर अन्न अधिक होतुहै अरु अन्नही ते सब कछु होतुहै। कह्यो है रत्न औ कांचन सब वस्तुसों उत्तमहै पर मनुष्य को अन्न बिन न सरै। जैसे नोनबिन सब फीको तैसे अन्न बिन कछु न नीको। पुनि राजाने सारससों कह्यो तुम बेगि जाय गढ़ रचौ। इतेक माहिं पवँरिया आय बोल्यो कि धर्मावतार सिंहल-द्वीपते एक काग मेघवर्ण नाम आयो है। सो आपके दर्शन की अभिलाषा किये द्वारपै ठाढ़ो है। मोहिं कहा आज्ञा होति है। राजा कही काग दूरदर्शी होतु है। याते वाहि राखनो उचित है मन्त्री बोल्यो महाराज तुम भली कही पर मेरेजान याहि राखतो योग्य नाहीं क्योंकि यह थलको बासी औ हमारे शत्रु को साथी है। याते याको रहनो क्योंहू नीको नाहिं। कह्यो है जो राजा आपनो पन्थछांड़ि पराई चाल चलै सो राजा कूकर दमनक की भांति मरै। राजा पूंछी यह कैसी कथा है। तब मन्त्री कहनि लाग्यो॥

एकसमय काहू स्यार को नगर के निकट कूकरनि आनिघेरयो

सो भयमान होय भाग्यो औ गावँ में जाय एक लील के कुण्ड माहिं गिस्यो। जब नीलवारेने वाहि मस्योजानि वासों काढ़ि गैलमें डारि दियो तब वह शृगाल भयको मास्यो नगर की गली माहिं मृतक ह्वै रह्यो. तहां पनिहारियन वाहि पस्यो देखि आपसमें पूंछ्यो आली यह कौन जन्तुहै। काहूने कह्यो वीर यह स्यार है। पुनि एक उनमें ते बोली अरी याको कान काटि बालकके कंठमें बांधे तौ डाकिनी न लागै। दूजी, बोली बहिन याकी पूंछ काटि मोढ़ा के गरेमें डारै तौ भूत पिशाच न लागै। तीजी ने झट काटहीलये। तब चौथीने कह्यो याकेदांत तोरि छोहाराकी गूदी में राखै तौ कछु रोग न होय। यह बात सुनि वा स्यारने आपने मनमें कह्यो कि या गावँ के लोग बड़े पापी हैं। कान पूंछकाटि अब दांत तोस्यो चाहतु हैं। याते यहां ते भाजिये तौ बचिये। यह विचारि वह स्यार हांते पराय वनमें आय शोचनलाग्यो कि अब मेरो नीलवरणभयो। जामें आपनी प्रभुताहोय सो करौं। यह बिचारि वाने सब स्यारनिको आनि कह्यो कि आज याबनके देवताओं ने निजहाथनि औषधीनते अभिषेककरि मोहिं या बनको राजदयो है। तुम मेरोबरणदेख्यो। यह सुनि विनस्यारनि वाकोवरण देखिताकी बातमानि सबनि हाथजोरि कह्यो कि अब जो कुछ महाराजकी आज्ञाहोय सो करैं तब उनि कही तुम सब मेरे पासरहौ। पुनि वेऊ रहनिलागे। ऐसे जब उनि आपनेसजातीनमें आदर पायो तब औरहू बन के जीव बाघ चीताआदि सब आज्ञाकारीभये। पुनि उनि स्यार खेद दये। तब वे स्यार सबजुरि चिन्ताकरि कहनि लागे कि अब कहा करैं। बहुरि विनमेंते एक बूढ़ोजंबुक बोल्यो अरे तुम जिनपछिताओ। मैं याको भेदपायो है कि यह गांवमें तौ पूंछ कान कटाय आयो अरु ह्यांआय इन आपनोनाम राजाकूकर दमनकधरायो ये सिंह चीता अनजाने याकी सेवाकरतुहैं। ताते मैं एक उपाय विचास्यो है कि सांझसमय सब स्यार इकट्ठे होय याके सन्मुख

पुकारो। तब यहहू जातिको स्वभाव न छांडि उनमें बैठिबोलिहै। कह्यो है जो कूकरको राजहोय तौहू वह टूटीपनहीं चबाय निज जातिको स्वभाव न तजै। ऐसे बूढ़स्यारकी बात सुनि उनने वैसेही करी। जब राजाकूकर दसनक नाहर चीतानिमें बैठि बोल्यो तब उनने वाहिमारिखायो। तातें हौं कहतुहौं कि महाराज आपनो पन्थ कबहूं न छांडिये औ घरको भेद बातकोमर्म काहूसों न कहिये कह्यो है खोडरकी आग तरुको जरावै याते महाराज विदेशी को भेद कबहूं न बताइये न घरमें राखिये। पुनि राजा कही अहो बात तौ ऐसेही है पर दूरते आयो है। तातेवाहि बुलायके देखिये। जो राखिबे योग्यहोय तौ राखिये। नातौ बिदा करिये। चकवा कही महाराज अब तिहारो गढ़ साज्योगयो। चित्रबरण राजा के दूतको बुलाय बिदाकीजै। कह्यो है भूपाल और भूपालके बसीठते एकलौ न मिलै। तासों आपनी सभा के लोगनको बुलाय बैठारिये। तब सुआको बुलवाइये अरु वाके साथ कागकोहू। यह सुनि राजाने वैसेहीकरि विनदोउनको बुलाय आसनदै बैठायो। तब शीशउंचाय कीरबोल्यो अहो हिरण्यगर्भ राजाधिराज तुमको श्रीमहाराज राजाचित्रबरणने कह्यो है जो आपनो प्राणराख्योचाहौ तौ हमारी शरणआवो नातौ आपने रहनिको अन्त ठौरकरौ। यह बात सुनि राजा हंस क्रोध करि बोल्यो हैरेकोऊ जो या बसीठको मारै। इतनेसुनि वहकाग बोल्यो महाराज मोको आज्ञाहोय तौ यादुष्टको मारौं। चकवा कही धर्मावतार दूत राजाको मुखहै। ताते याको कछुदोष नाहीं जैसे व्हां सुनी तैसे ह्यां आनिकही। यह मिथ्या न भाषै अरु बसीठकेकहे कछुआपनी हानिनाहिं औ वाकीप्रभुतानाहिं तासों याको मारनो काहूभांति उचितनाहिं। कह्यो है जासभामें बूढो नहोय सो सभा न शोभै। सो बूढो नाहिं जो धर्मनजानै। वह धर्मनाहिं जहांसत्यनहोय। वह सत्यहूनाहिं जहांदया न उपजै। ऐसे समझायमंत्री ने राजाको क्रोध निवारणकियो। पुनि तोता

होते उठिचल्यो। तब मंत्री ने वाहि मनमें बैठायो औ वस्त्र अलङ्कारदिवाय राजतिलकरायो। जब वह आपने राजा के पासगयो तब राजा चित्रवरण ने वाते पूछी शुककहो वह देशकैसोहै सुआकही महाराज प्रहिले युद्धकी साज्ञाकरो। पाछे हौं कहतुहौं राजा बोल्यो हमारे लड़ाई को सबसामान इकठ्ठो है तुम कहौ। पुनि सुआ कहनि लाग्यो महाराज कर्पूरद्वीप सातवें स्वर्गसमानहै अरु मोपै वरन्यो नाहीं जातु यह सुनि राजाने आपने सब मंत्रिनको बुलायकैकह्यो अहो कीर कहतुहै कि राजा हंसते युद्धकरो। सो तुमते पूंछतुहौं कि अब कहाकरनो उचितहै अरु मेरोहू मनोरथ यह है कि युद्धकरौं। कह्योहै असंतोषी ब्राह्मण लाजवती वेश्या कुलवती निर्लज्ज औ राजा संतोषी होय तौ ये सब थोरेई दिनमाहिं नष्टहोयँ। यहसुनि राजाको मंत्री दूरदर्शी नामगीध बोल्यो महाराज आपने मंत्री मित्र कटकप्रजा आदि सब एकमत होयँ अरु शत्रुके मित्र मंत्री अरु प्रजामें विरुद्ध होय तौ युद्ध करिये। यहनीति है। राजा कही मेरो दल सैं सब देख्यो यह खानिवारो है पर काहू कामको नाहिं। याते तुसबेग ज्योतिषी बुलाय मुहूर्त देखौ गीधकही पृथ्वीनाथ शीघ्रहीयात्रा न बूझिये। कह्योहै शत्रुबिन विचारे वाकी भूमिमें जाइये तौ नान्हों हूबडेको जीतै। पुनि राजा कही जो परभूमि लियो चाहै सो कौन भांति ते लेइ। यह तुमकहौ। मंत्री बोल्यो महाराज उद्योग करे मनकामना पूर्णहोय। अरु बिन उद्योग कछू न होय जैसे औषधि खाये रोगजाय वाको नाम लिये न जाय। अब महाराजकी आज्ञा प्रमाण परभूमिलैबेकी रीति कहतुहौं जो राजनीतिमें कही है प्रथम तौ राजा आपने मंत्री योद्धा महाजन मुखियानको बुलाय सन्मानकरि साथलेय। अरु शस्त्रबस्त्र अलंकार धन गज घोड़ा निजलोगनको बांटै जो जाके योग्यहोय ताको तैसो सन्मान करै। पाछे कटक साथ लै चलै अरु जहां पर्वत बन डरकी ठावँ होय तहां सेनापति कटक इकठ्ठोकरि चलै। भले

भले शूर साथराखैं और रनिवास ठाकुर भंडार नान्हें लोग ज्यो-पारो बीचमाहिं । पुनि राजा औ मंत्री सब पै दृष्टि राखै औ बन-बासी पर्बतनिवासी लोग आगे धरलय । बहुरि जहां विषमभूमि होय कै बर्षाकाल होइ तौ राजा हाथीपर चढ़िचलै । कह्यो है गजकी देहमें आठशस्त्रहैं । चारपावँ द्वै दाँत एकशूंड औ माथो याते राजा हाथी अधिक राखै तौ भलो क्योंकि गयन्द चलतो कोटहै अरु जो घोड़ानिपै चढ़िलड़ै तिनतेंदेवताहू डरैं । औ पया-देनको बल सदाराखै । पुनि परभूमिमैं जाय राजा सदा सावधा-नरहै । काहूको बिश्वास कबहूं न करै योगेश्वर की नींदसोवै । अरु राजा आपने साथ द्रव्य राखै क्योंकि धन प्राणतुल्यहै । बिनधन प्रभुतानाहीं । लक्ष्मी पाय को न जूझै । मनुष्य द्रव्यके हेतुसेवाकरतुहैं । कह्यो है नर धनतेबड़ो औ धनहींते छोटोपुनि शत्रुको देशलूटि खसोटि कै उजारै क्योंकि ताते अरि दुचितो होय । अरु वाको अन्न रस ईंधन न्यार जो पावै सो लूटि ल्यावै । और गढ़गढ़ी सर कूप बापी फोरि नाखै बन उपबन बारी का-टिडारै । ऐसे अनेक अनेक भांति की पीड़ा शत्रुको उपजावै औ आपने लोगनिते सदा प्रसन्न होय बतलायो करै जाते लोगजा-नैं कि हमारो स्वामी हमसों संतुष्टहै । कह्यो है ठाकुरके सन्मान औ हितबचनते जैसो सेवककाजकरै तैसो धनदिये अरु कटुबचन ते न करै । पुनि जब सेवक काजकरि आवै तब वाहि प्रसाददेय अरु जो प्रसाद न देय तो वाकी जीविका दूनी करिदेय । औ यहू न होय तौ ताकोकमायो पैसा चुकायदेय । अरु जो स्वामी से-वकको महीनादेत आजकालिह करिटारै ताको किंकर उदास रहै औ समय पर कानदिय । ताते जो राजा शत्रुको जीत्यो चाहै सो दासनि औ सेवकनि को प्रसन्नराखै तौ जहांजाय तहांबिजय पावै अरु या बातको सुनि अरिके सेवक भूखे टूटेहोयँ ते आपते आप आयमिलैं तो लरनोहू नपरै । बहुरि रिपुकेजीतबेको एकबड़ो उपायकह्यो है कि वाकेभाई भानजे भतीजानसों भेद उपायकरि

तिनको आदरमान कीजै। अरु मंत्री प्रजाहूको अपनाय लीजै। औ जे लरैं तिनको नाश कीजै। अरु जे शरण गहैं तिनको भय मिटाय दीजै। अरिको देश उजारिये आपनो वसाइये शास्त्रमें कह्यो है याप्रकारते राजा चलै तो युद्ध जीतै। पुनि राजा बोल्यो मैं जान्यो। जाते आपनी जीत औ शत्रुकी हारहोयताकी यहरीति है। पर शास्त्र के पैंडते मनकी उमंगको पन्थ न्यारो है। मनकी उमंगमें जो शास्त्र बिचारै तो न बनै जैसे अन्धकार और तेज इकट्ठो न रहै। इतनो कहि राजाने ज्योतिषी बुलाय शुभमुहूर्त ठहराय भली लग्न में दिग्विजय यात्राकरी। तब राजा हंसके दूतने आय अपने राजासों कही कि महाराज राजा चित्रबरणने मलयाचलके हेठआय डेरा करयो। तुम अपने गढ़की रक्षाकरौ औ आपनो परायो चीन्हो। वाको मंत्री अति अति चतुर है। मैं वाकी बातसों जान्यो कि उनि हमारो गढ़ लैन को आपनो मित्र काग पठायो है। बहुरि राजा हंसको मन्त्री चकवा बोल्यो महाराज या कागको न राखिये। राजा कही जो यह काग वाको पठायो होतो तो वा सुवाको मानिन न उठतौ अरु उनि तोताके गये पाछे युद्धको मतो कियो है। यह बातैं प्रथम आयोहो। मंत्री बोल्यो महाराज तऊ नये आयेते डरिये। राजा कही अहो जो नयो आयो आपनो उपकारकरै ताहि मित्र जानिये। अरु बन्धु मित्रहोय आपने काम न आवै ताहि शत्रुकरि मानिये। जैसे बन की औषधी तुरतकी आई रोगीके रोगको दूरकरि सुखदेय तैसे कोऊ कोऊ मनुष्य नयोआयो उपकार करि यशलेय पुनि ज्यों शूद्रकराजाके वीरवर सेवकनें अल्पदिननिहीमें सहायताकरी। चकवा बोल्यो महाराज यह कैसी कथाहै। पुनि राजा कहतुहै॥

शूद्रकनाम एकराजा। वाकीक्रीडाको एक सरोवरतामें कर्पूरकेलि नाम राजा हंसहो। वाकी बेटीको नाम कर्पूरमंजरी। तापै आसक्तहोय मैं हारह्यौं। तहाँ वीरबरनाम एक राजपूत काहूदेशते उद्यमके लिये आय राजद्वारपै ठाढ़ोभयो। अरु उनि पौरियनते

कह्यो मोहिं राजाते सिलाओ। हौंसेवाकरनि के हेतु आयोहौं द्वारपाल यह बात राजासों जायकही। तब राजाने वाहि बुलायके पूछ्यो तुमदिनप्रति कहालेउगे। उनिकही चारसौतोलासुबरण। पुनि राजा बोल्यो और तिहारे साथको है। उनिकही द्वै हाथ तीजो खड्ग। राजा कही इतेकहमते न दियो जायगो। यह सुनि बीरबर जुहार करि चल्यौ तब मन्त्रीने राजासों कही महाराज चारि दिन तौ याहि सुबरण देराखिये औ याको पराक्रम देखिये इतेक योग्यहै कैनाहिं। मंत्रीकी बातमानि राजाने वाहिसोना दै राख्यो। वादिनकोकञ्चनलै वाने आपनेघरजाय आधो तौ ब्राह्मणनिको संकल्पकरिदियो अरु वाकोआधो भूखेभिखारीभिक्षुकन कोबाँटि दियो औ एकभाग निजभोजनार्थ राख्यो। याहीभांतिवह पुत्रपुत्री स्त्रीसहितहै रहनि लाग्यो। जबसांझहोय तब खांडोफरी लै राजसेवामेंजायउपस्थितहोय। एकदिन कृष्णचतुर्दशीकी आधीरातको घनघुमडिमेह मढ्यो। तासमय काहूनारीके रोवनको शब्दसुनि राजाबोल्यो कोऊहै। बीरबर कहीमहाराज कहाआज्ञा होतिहै। राजाकही देखतौको रोवतुहै। राजाकी आज्ञापाय बीरबरचल्यो। तब राजाने आपने मनमें बिचाऱ्यो कि मोहिं ऐसो न बूझिये जु या अँधेरी रैनमाहिं रजपूतको एकलो पठाऊं। ताते याके पाछे पाछे जायदेखौं तौ सही यह कहा करतुहै। याप्रकार राजा मनमें बिचारि ढालतरवार गहि वाके पाछे ह्वैलियो। आगे जाय बीरबर देखै तो एकनारी नवयोवना अति रूपवती सब आभरणपहिरे ठाढ़ी धायमारिमारि रोवतिहै। इन वासों पूंछी तू को है। उनिकही हौं राजलक्ष्मीहौं। पुनि इन कह्यो तू रोवतिकाहे। उनि कही मैं बहुतदिन या राजाकी भुजानिकी छाँहमें विश्राम कियो अरु अब या राजाको छांडि जाऊंगी। या दुःखते रोवतिहौं इन कही तू काहूभांतिहू रहै। उनिकही जो तूनिजपूतको बलिदेइ तौ हौंरहौं अरु यह राजा अनेकदिन अखण्डराज्यकरै पुनि बीरबर कही माता जौलौं मैं आपने घर ह्वै आऊं तौलौं तुम ह्यां

रहो। ऐसे कहि घरजाय बीरबर पुत्र औ स्त्री को जगाय लक्ष्मी के कहे बचन कहिबे लाग्यो। तो पुत्रीहू जागी। यह बात सुनि सब चुपरहे तद पुत्र बोल्यो धन्यभाग्य मेरो जु यह देह देवीके निमित्त लागै अरु स्वामीको काजसरै। यामें पिताजू विलंब जिन करौ क्योंकि कबहूं तौ या कायाको विनाश होय। ताते काहू के काज लागै सोतो भलोही है। कह्यो है जाको विद्या, धन, प्राण पराक्रम पराये कामआवै ताहीको संसारमें जन्म लेनो सुफलहै। पुनि बीरबरकी पत्नी बोली जो तुम यह कार्य न करौगे तो राजा के ऋणते कैसे उतरन होउगे। ऐसे बतराय सब देवी के मन्दिर पैगये अरु पूजाकरि हाथ जोरि इतनौ कह्योमाता हमारो राजा चिरंजीवि होय राज्यकरै। यह कहि पुत्रको मूड काटि बीरबर ने देवीको दयो अरु आपने मनमाहिं कह्यो कि राजा के ऋण ते तो उतरन भयो। पर अब निपूतोहोय जगत् में जीवनो उचित नाहिं। यह समुझि आपनोहू शीश काटिभवानीके आगूधरयो। उन दोउअनको मारयो देखि वाकी स्त्रीने बिचारयो कि संसारमें रांड निपूती ह्वै जीनो योग्य नाहीं। ऐसे ठानि वाहूने निजमाथो चढ़ायो। विन तीननिको मरयो देखि वाकी पुत्रीने विचारयोकि निगोडी नाठी ह्वै जगमें जीवनो भलोनाहिं यह समझि विनहू मस्तक काटि देवीके सन्मुख राख्यो। यह चरित्र देखि नरपति ने जीमाहिं बिचारयो कि मोसे जीव अनेकपृथ्वीमें उपजतु खपतु हैं पर ऐसेशूरनर होनेकठिनहैं। ताते अब याको कुटुम्बनाश करि मोहिं राज्यकरनोयोग्यनाहिं। यह शोचिसमझि ज्यों भूपालनिज मूड उतारनि लाग्यो त्योंही देवीने आय करगह्यो अरु कह्यो राजा तू साहस जिनकरै। अबतेरे राजमें भंग नाहिं। राजा कही माता मोहिं राज्यते कछु प्रयोजन नाहिं पुनि देवीबोली हौं तेरे धर्म औ सेवकके कर्मपर सन्तुष्ट भई। अबतू जोबर मांगै सोदेऊं। राजा कही मा जो तुम संतुष्टभई हौ तौ इन चारनको जीवदान देव। जब उन पाताल ते अमृत लाय विन चारन को जिवायो

तब राजा चुपचाप ह्वांते चलि निज मन्दिर में आयो। और बीर-बरहू उन तीनों को घरराखि आप राजा के समीप पहुंच्यो। नर-पतिने वाहि पूंछ्यो तुमगये हे तहां कहा देखिआये। पुनि कर जोरि उनकही महाराज एकनारी रोवतिही। जौलौं हौं वहांगयो तौलौं वह चुपरही। मैं वाहि न पायो। पुनि मैं बगदि आपके ढिग आयो। ऐसे सुनि राजाने मनमें कह्यो कि यह कोऊ बडो सिद्धपुरुष है। याकी स्तुति हौं कहांलौं करौं। कह्यो है दयावन्त दा-नीतपस्वी सत्यबादी औ शूर जो आपनी बडाई न करै तो वाहि सिद्धपुरुष जानिये। आगे राजाने प्रात भये पण्डितनकी सभा में बैठि रात्रिको सब वृत्तांतकह्यो अरु संतुष्टहोय बीरबरको कर-नाटक देशको राजदयो। तातेंहौं कहतुहौं सबनयेहूबुरे न होयँ। संसार में तीनप्रकार के मनुष्य होतु हैं उत्तम मध्यम अधम। बहुरि चक्रवा बोल्यो महाराज यह काज करिबे योग्य नाहिं। आगे महाराज की इच्छा। कह्यो है पराई रीस पण्डित चतुर कबहूं न करै अरु जो करै तो वैसेहोय जैसे एक क्षत्रीने आपनी तपस्यातें धनपायो औ वाकी रीसकरि एकनाऊनें निज प्राण गँवायो। नरपति कही यह कैसी कथा है। तब चकवाक कहनि लाग्यो। अयोध्यापुरी माहिं एक चूडाकरण नाम क्षत्री रहै। तिन धनके निमित्त अतिकष्ट करि श्रीमहादेवजूकी सेवाकरी। तब सदाशिवजीने वाकोस्वप्नमें दर्शनदैकह्यो अरेआज पाछलीरात्रि समय क्षौर होय स्नान करि लौठियाकरधरि आपनी पौरिमाहिं कपाटके पाछें लुकिरहियो। जब कोऊ भिक्षाको आवै तब वाहि लकुठियनमारि घरमाहिं लहियो। वह सुवर्णभरयो कलश ह्वै है। तातें तू जबलग जीवैगो तबलग सुखीरहैगो। यह बरपाय विन दूजें दिन नाऊको बुलाय वैसेही कियो जैसे भोलानाथने कह्यो हो जद वह भिखारी सुवर्ण घटभयो तद इनलै घरमें धरयो यह चरित्र देखि वा नाऊने बिचारयो कि धन पाइबेको जो यही रीति है तो हौंहूं क्यों न करों ऐसे समझि निज घर आय उनहूं

एक संन्यासी मारयो। तद वाहि राजाके सेवकनि पकरिलैजाय संन्यासी के पलटै मारयो। ताते हैं कहतुहौं कि और की रीस क-बहूं न करिये। पुनि राजा कही पाछली बात जिनकरो। आगे जो करनो होय सो करो। मलयापर्वतकेतरे राजा चित्रवरणको डेरा है अब कहाकरिये सो कहो। मंत्री बोल्यो महाराज हमहूं सुन्यो है कि वह लरिबेको आयो है। पर तुम कछु चिन्ता जिन करो। हम वाहि जीति हैं क्योंकि वाने आपने मंत्री को कह्यो नाहीं मान्यो कह्यो है कि जो शत्रु लोभी मूढ़ आलसी कायर झूंठो औ अधीरहोय अरु धन राखि न जाने काहूको कह्यो न माने ताहि विन कष्ट मारिये। महाराज जौलौं वह हमारो गढ़ नगर कटक औ घाट बाट न देखै तौलौं वाके मारबे को सेना प-ठाइये। ऐसे औरहूं ठौर कह्यो है कि दूरको आयो थक्यो भख्यो प्यासो भयवान् असावधान रात्रिको जाग्यो औ पर्वत तरे बस्यो होय ऐसे शत्रु को दौरिमारिये। याते उचितहै कि अबहीं हमारो सेनापति वाके दलको जायमारे तो भलो। यह बात मंत्रीते सु-नत प्रमाण राजाने सेनापतिको टेरि आज्ञादई कि तुम याही समय राजा चित्रवरणकी सेनाको जायमारो। उन वैसेही करी। जब चित्रबरणके योधा अनेक मारेगये तब वह चिंताकरनिला-ग्यो। पुनि वाको मंत्री गीध बोल्यो अब काहे चिंताकरतुहो। ब-हुरि राजाकही बाबाजू अब काहूभांति हमारीसेनाकी रक्षाकरो ऐसे भयवान् राजाको देखि गीधबोल्यो महाराज कह्योहै कि ग-र्व्वते लक्ष्मीटरै बुढ़ापो पौरुषहरै चतुर संदेह मिटावै अभ्यासकरै विद्याआवै न्यायप्रताप बढ़ावै विनयते अर्थपावै अरु मूर्ख राजा होय तोपण्डितनकी सभाते शोभा। जैसे नदीकेतीर रूखहरयो रहै तैसे अच्छीसभाते राजाको मनहू डहडह्योरहै इतनो कहि पुनि गीधबोल्यो महाराज तुमने आपनो कटक देखि गर्व्वकरि साहसकियो अरु मेरोकह्यो न मान्यो ताअनीतिको यहफलहै। कह्योहै जो राजा मंत्रचूकै तौ ताको नीतिको दोषहै जैसे कुपथ्य

ते रोगहोय रोगलेमरै तैसे धनतेगर्व्वहोय औ गर्व्वते दुःख। पुनि निर्बुद्धीको शास्त्र यों ज्यों आँधरेके हाथ आरसी। यहसमुझि हम हूं मौन गहिरहे। इतेक बातें सुनि राजाने हाथ जोरि गीध सों कही बाबाजू मोते अपराधभयो। क्षमाकीजै अरु अब काहू भांति जो कटकबच्यो है ताहि साथले निज घरकी वाटलीजै। पुनि गीध कही महाराज ऐसो कह्योहै कि राजा गुरु ब्राह्मण बालक वृद्ध औ रोगी इनपै ज्यों क्रोध उपजै त्योंही जाय। ताते तुम डरो जिन धीर्यधरो। कह्यो है मंत्री ताहीको कहिये जो बिगरेकार्य सुधारै औ वैद्य सो जो सन्निपात निवारै। याते तुम कछु चिंता मति करो। हौं तिहारे प्रतापते वाको गढ़तोरि कटक समेत आनन्द सों घरले चलिहौं राजा बोल्यो थोरो कटकरह्यो। अब गढ़ कैसे विजय करिहौ गीधकही महाराज जो संग्राम जीत्यो चाहो तो विलम्ब जिनकरो। आजही चलि वाको कोट छेकिये। यहबात सुनतही बगुला ने राजा हंसते जाय कही कि महाराज राजा चित्रबरण थोरेही कटक ते तिहारो गढ़ छेक्योचाहत है। यहबात मैं वाके मंत्री ते सुनिआयोहौं। यहबात सुनि राजहंस ने आपने मंत्रीसों कह्यो कि अब कहाकरिये। चकवा बोल्यो महाराज आपनो कटक देखो यामें कौनभलो है औ कौन बुरो। भलोहोय ताहि धन वस्त्र घोड़ा हाथी शस्त्रदीजै औ बुरो होय ताहि गढ़ कटक ते बाहरकीजै। कह्योहै जु राजा एकसमय तो दामको लाखकरिमानै अरु एककाल लाखको दामकरिजानै तो वा राजाको लक्ष्मी न छांडै। पुनि यज्ञ दान विवाह आपत्ति औ शत्रु मारिबे में जो धन उठावतु है सोई स्वार्थक है अरु सूबे थोरे देन ते डरि सबही गँवावै। राजा बोल्यो तुमको ऐसी कहा की आपदा है। मंत्री कही महाराज कह्यो है जु लक्ष्मी रिसाय तो सबरो धनजाय। ताते दान कीजिये जो धर्मके आधीन है लक्ष्मी रहै बहुरि राजनीति में हूं कह्योहै कि विग्रहके समय राजा आपने योधन को समाधानकरै जो जैसो ताको

तैसो । क्योंकि जे उत्तम, प्रवीण, कुलीन, शीलवन्त, शूरवीर, धीर, नीके पोषेहोयँ ते पांच पांचसोंते लरैं । अरु कुलीन, अप्रवीण, अधम, अधीर, कायर, निर्लज्जहोयँ ते पांचसों पान्चते पराय । महाराज पुनि जा राजाको मंत्री असावधान होय ताकोहू राज न रहै अरु जो राजा आपनो परायो न जानै मंत्रीकी प्रतीति न मानै सेवकको सुखदुःख न गनै सो राजाकबहू निश्चिन्त न रहै । ओ जो राजा आपनोपरायो बूझै सेवकको दुःख सुख बिचारै ताके लिये सेवक धन, तन, प्राण दे सहायताकरै । राजा ओ मंत्री ऐसे बतराय रहे हे कि ताहीसमय मेघबरण काग आय जुहारकरि बोल्यो महाराज शत्रु युद्ध करिबे को गढ़के बार आयो है । मोहिं आज्ञाहोय तो बाहर निकसि संग्रामकरौं अरु आपके लौनते उतरन होऊँ । मंत्री कही बनते न निकस्यो सिंह अरु स्यार समानहै । याते गढ़ते न निकसिये कह्योहै जो राजा आप ठाढ़ोरहि युद्धदेखै तो कायर सिंह समानहोय लरै । ताते अबहीं कोटके बारजाय युद्धकरनो योग्य नाहिं । इधर तो राजा ओ मंत्री ऐसेबतराय रहेहे । अरु उत चित्रबरण राजाने दूजेदिन गीधसों कह्यो कि बाबाजू जो प्रतिज्ञाकरीही ताको निर्वाहकरो । गीध बोल्यो सुनो महाराज । आगरेके थोड़े योद्धाहोयँ के राजा सूखे ओ मंत्री कायरहोय तो गढ़ उतावलो टूटै । सो तो वहां एकौगति नाहिं । ताते ह्वांकेलोगनिते भेद उपायकरिये कैधरोनाखि अन्न रसरोकि सबमिलि साहसकरैं तो गढ़पावैं । कह्योहै जैसोबलहोय तैसो यत्नकरिये । इतनो कहि पुनि मंत्रीने राजाके कानमें कह्यो कि महाराज कछु चिन्ता जिनकरो हमारो काग वाके गढ़में है । सो कामकरिहै । आगे प्रातहोत राजा चित्रबरण सबसेनाले गढ़ की पौरिजाय लाग्यो । उत सरयपाय कागलायलगाय गढ़लियो लियो करि पुकारयो । तब तहांके जीवनके पगछूटे । वे सब दौरि पानीमें पैठे ओ राजाहंससुकुमार ताते पराय न सक्यो । तब एक सर्वमित्रनाम कूकड़ो राजा चित्रबरणको सेनापति । तिन आय

हंसको छेक्यो। तब सारस वाके सम्मुख होनि लाग्यो। तहां हंस बोल्यो तुम मेरेनिमित्त जिनजूझो। हौं ह्यांरहौं। तुम मेरे पुत्र चूड़ामणिको लैजाय राज्यकरो। सारस कही महाराज आप ऐसी बात जिनकहो। जौलौं चन्द्र सूर्य तौलौं तुम अखण्डराज्यकरो। हौं आपके प्रताप सौं गढ़में सब शत्रुन मारि बिछावतुहौं। कह्यो है क्षमावन्त, दाता, गुणगाहक, सुखदायक, धर्मात्माठाकुर कहां पाइये। राजाकही भक्तिवंत निष्कपट चतुर सेवकहू कहां पाइये पुनि सारसबोल्यो महाराज संग्राम तजि तो भाजिये जो मृत्यु न होय। अरु जो निदान मृत्युहीहै तो आपनो यश मलीन करि काहे मरिये। बहुरि जो या अनित्य शरीर सों जगत् में नित्य यश पाइये तो याते कहा उत्तम है। यामें तुम तो हमारे स्वामीहीं हो। राजाकही यह तुम भली विचारी। हमहू ऐसोही करिहैं। सारसबोल्यो महाराज आप ऐसो बिचार जिनकरो क्योंकि स्वामीके देहछांड़े प्रजा अनाथहोय अरु सेवकको तो यह धर्महीं है कि जौलौंबनै तौलौं स्वामी के राखिबेको यत्नकरै। स्वामीके उदयते याको उदय अरु अस्तते अस्त। इतनीबात कहत कहत जब कुक्कुटने राजा हंसको आयगह्यो तब सारसने वासों छुड़ाय पीठपर चढ़ाय नीरमें जायछोड़्यो अरु आप आय अनेकन को मारि गढ़माहिं जूझिमर्‌यो पुनिआय राजा चित्रवरण ने सब गढ़की मायालई अरुबन्दीजन के पायँनकी बेरी हथकरी काट दई। इतनी कथासुनि राजपुत्रनि विष्णुशर्म्मा ते कह्यो अहो गुरुदेव राजाहंसके सेवकनिमें वह बड़ोकोउ हो जिन राजाको बचाय आप प्राणदियो विष्णुशर्म्माबोल्यो महाराजकुमार सुनो। उन बड़ो कार्य कियो। देखो एक तो संसार में यशपायो दूजे स्वर्ग। कह्यो है जो सेवक स्वामीके लिये रणमें प्राणदेइ सो परमगति पावै औ जो साथ छोंड़ि भाजै वह नरकमें पड़ै औ जगत् माहिं कलंकी होय॥

अथ चतुर्थकथा आरम्भ॥

विष्णुशर्म्मा बोल्यो महाराजकुमार तुमनि विग्रह तो सुन्यो। अवहौं संधिकथा कहतुहौं कि जब दोऊराजा संग्रामकरि सेना कटायरहे तब गीध अरु चकवाने जाभांति उनको मिलायो ताई रीति सब कथा कहतुहौं। राजपुत्रनि कही अहो गुरुदेव हमनी-के चित्तदे सुनतुहैं। आप आज्ञा कीजै। पुनि विष्णुशर्म्मा कह-निलाग्यो कि जद राजाहंस ने चकवासों पूंछ्यो कि तुम यह जानतुहौ गढ़में आग हमारे लोगनिलगाई कै शत्रुके। तद चकवा बोल्यो महाराज तिहारो मेघवर्ण कागदीसतुनाहीं। ताते जान्यो जातुहै कि होय न होय यह वाहीको कामहै। इतनी बात सुनि राजा चिन्ता करि कहनि लाग्यो कि मैं जान्यो यहकाम मेरेही अभागते विगस्यो। यामाहिं कछु तिहारोदोषनाहिं। मेरेकपालही को दोषहै। मंत्रीकही महाराज औरहूठौर ऐसे कह्योहै कि जब देवकोपतुहै तब मनुष्य पर आपदा आवतुहै। अरुकर्मके वशहोय अनीति करै हितूनको कहो न मानै जैसे एक कछुआने आपने हितूनको कह्यो न मानि काठतेगिरि दुःखउठायो। तैसे कष्टपावै राजाबोल्यो यह कैसी कथाहै। तहां चकवा कहनिलाग्यो॥

मगधदेशमें फुल्लोत्पलनाम सरोवर। तहांविकट संकटनाम द्वै राजहंस रहैं। तिनको मित्र एककम्बुग्रीव कछुआहू वहां रहै। एकदिन तहां धीवरआये अरु आपसमें बैठि बतराये कि आज रात्रिको यहां बसि माछरी कछुआ पकरि हैं। यह सुनि कमठ ने हंसनिसों कही मित्रतुम धीवरकी बात सुनी। अब हौं यहां न रहि हौं और सरोवरमें जैहौं। हंसनि कही अबहीं रहौ। आगेउपाय करि हैं। कछुआ बोल्यो बंधु तुम जो कही कि आगेउपायकरि हैं सो आगेकी बात नाहिं। कह्योहै आपदा बिनआये उपायकरै तो सुखपावै और न करै तो दुःखउठावै जैसे यद्भविष्यमाछरीने दुःख पायो। हंसनिकही यह कैसी कथाहै बहुरि कमठ कहतुहै॥

पहिले या सरोवरपर एकबार धीवर आयोहो। तब यहां तीन माछरी रहतिहीं। एक अनागत विधाता दूजी उत्पन्नमति तीजी यद्भविष्य। जब धीवर आयो तब अनागत विधाताने कह्यो अब यहां रहनो उचितनाहीं। इतनो कहि व्रह और सरोवर में गई। दूसरीबोली जब कार्य आयपरिहै तब उपाय करिहौं। कह्योहै जो उपजी बातको उपायकरै सो चतुर जैसे एकबनियांकी बेटीने पतिके देखत जारको चूम्बादे सिराकियो। तीसरीने पूंछ्यो यह कैसी कथाहै पुनि उत्पन्नमति कहतिहै॥

बिक्रमपुर में समुद्रदत्तनाम बनियां। ताकी स्त्रीको नाम रत्नमंजरी। सो आपने सेवकसों रहै। कह्योहै स्त्रीके कौनबड़ो कौन छोटो। अपने कामसौं काम। आगे एकदिन वह आपने सेवक को मुख चूमतही। वाहीसमय वाके स्वामीने आयदेख्यो। तब उनि दौरि पतिसों कही साहजू या सेवकबजमारेको घरमाहिं जिनराखो। या दईमार्‍यो चोरहै। अबहीं याने घीचुरायखायो मैं याको मुहँसूंघ्यो। सुघृतकी गंधआवतिहै। यहबात सुनि सेवकरूठ्यो अरु कहन लाग्यो कि जाघरकी धनियानी मुखसूंघै तहां रहनो भलो नाहीं। पुनि समुद्रदत्तने उनदोउनको मनायो। ताते हौंकहतिहौं कि आपत्तिसमय जाकी बुद्धिफुरै सोई चतुर। बहुरि यद्भविष्य बोली जो भावै सो होय। चिन्ताकोकरै। आगे धीवरनेआय जारवा सरोवरमें नाख्यो अरु वे दोऊ बझीं। तब उत्पन्न मति मृतक ह्वै रही। वाको मर्‍योजानि धीवरने जारते बाहर काढ़िराख्यो। पुनि अवसरपाय वह पानीमाहिं जायगिरी यद्भविष्यको भावीको भरोसोहो। सो धीवरके वशपरी। ताते हौंकहतुहौं जो अनागत विधाताकी भाँति उत्पातते पहिलेभाजै सोभलो। बहुरि हंसनिकही तुम कैसे चलिहो। उनिकहा मित्र तुम दोऊ एकैलकड़ी दोऊघांते पकड़ो औ हौं बीचते गहौं। तब लैउड़ो। पुनि हंसबोले बन्धु तुम नीकीकही। पर हमारे जान जैसे बगुलाके उपायतें बालकपन लखायो तैसे तुमहूं करतुहौ।

कमठ कही यह कैसी कथा है। तहां हंस कहनि लाग्यो॥

उत्तरदिशाकी गैलमें कावेरीनदी के तीर गन्धमादनपर्वतपै एकरूख। तापर एकबगुलारहै। वाकेनीचे बांबीतामें कारोनाग। जब वह बक अण्डादेइ तब सांप रूखपरचढ़ि खायलेइ। एक दिन वह चिन्ताकरि रह्योहो कि काहू बूढ़े बगुलाने वासों पूछ्यो कि रे तू ऐसो दुचितो क्यों है। इनवासों सबभेद कह्यो तब उनि कह्यो कि अरे तू एकउपायकर कि बहुतसी माछरी ल्याव औ न्योरेके बिलते लै सांपकी बांबीलौं पांतिसी लगाव। जब वह मछरी खातखात आयहै तब वा सर्पहूकोखायहै। यहबात सुनि उनि वैसेहीकरी और न्योरेने आय नागकोखायो पर साथहीपेड़ पै चढ़ि वाके अण्डाहू खाये। ताते हौं कहतुहौं कि ऐसोयत्नजिन करो जामें आपनो विनाशहोय। जो तुम लकड़ीपकरि लटकि चलौ औ कोऊ कछूकहै वा वेर तुम रिसायके उत्तरदेउ। औ मुहँते लकड़ी छूटै औ नीचे गिरो तो हम कहाकरैं सो कहो। उनिकहीहौं। कहा बावरोहौं जुबोलिहौं। इननिकही भाई तुम जानों। इतनो कहि वे दोऊ हंस वाको वहीभांति लैउड़े कछुआको लौठिया में लटकतदेखि अहेरी बोले। देखो रे या कछुआको। द्वैपक्षी लिये जातुहै। एक बोल्यो जो यह गिरिपरै तो भूजिखाऊं। दूजेने कही मैं घरलैजाऊं। यह सुनि कछुआसों रह्यो न गयो। तब क्रोधकरि बोल्यो तुम पथराखाउ इतनीकहत लकड़ीते छूटि तरेगिर्‌यो। अहेरियन मारि भक्षण कियो ताते हौं कहतुहौं जो मन्त्री को कह्यो न मानै सो दुःखपावै। आगे एक बगुला आयो। तब चकवा बोल्यो। महाराज यह वही बगुला है जाहि पहिले पठायो हो। यह कहतु है गढ़में आग मेघवरण लागने लगाइ अरु वह गीधको पठायो आयो हो। बहुरि राजा हंसकही शत्रुके उपकार औ प्रीति की प्रतीति कबहूं न करिये। जो करिये तो जैसे रूखको सोवनहारो गिरिकै पछिताय तैसे पछिताइये। ब-हुरिबगुला बोल्यो महाराज ह्यांते जब मेघवरणगयो तब चित्र-

बरणने कह्यो अब मेघबरणको कर्पूरद्वीपको राजदीजै अरु याको दुःखदूर कीजे । कह्यो है जो सेवक कष्टपाय स्वामीको कार्यकरि आवै ताको तवहीं भलोकीजै । मंत्रीकही महाराज यह उचित नाहिं । याहि और कछुदेउ अरु मेरी बात सुनिलेउ । कह्यो है जाको जितनो मान ताको तितनो दान । नीचको उपकारकरनो औ बारूमाहिं घीडारनो समानहै । पुनि जो नीचको बढ़ाइयेतो मुनीश्वरकी भांतिहोय । राजाकही यहकैसी कथा है । तब गीध कहनि लाग्यो गौतमऋषिके तपोवनमाहिं महातपी नाम एक मुनिरहै । ताके आश्रम में कागके मुखते छूटि मूसाको शिशु गिरयो । वाहि देखि दयाकरि मुनिले आपने निकटराखि कन खवाय बड़ोकियो तब एक बिलाव वाके खैवेकीघात में आयो करै । यह देखि मुनिने मंत्रकरि वाको बिलावकियो । फेरि एक श्वान आवनलाग्यो । बहुरि वाने वाहि श्वानकियो । पुनि एक सिंहआयोकरै । तब तिन ताहि सिंह बनायो । पर निजमनमाहिं मूसाही करिजानै । यहचरित्र देखि गाँवके लोग कहनिलागे देखौरे यह मूसाते सिंहभयो । सो या मुनिको प्रसादहै । याबात को सुनि वा सिंहने निज मन में बिचारयो कि जौलौं यहमुनि रहैगो तौलौं सब लोग मोहिं ऐसेही कहतरहैंगे । ताते यामुनि मारखाऊं तो यहकलंकछूटै । ऐसे वह जीमें ठानिमुनिकेखानको चल्यो तद मुनिने वाकी अन्तरगतिजानि पुनिवाहिमूसाकोमूसा बनायो ताते हौंकहतुहौं कि महाराज नीचको ऊंचपद कबहूं न दीजै । यह बात सहज नाहिं सुनो । जैसे एक बगुला ने मछली खातखात नये मांस खानकी इच्छाकरि आपनो गरोकटायो कहूं तैसे न होय राजाकही यह कैसी कथाहै । पुनि गीध कहतु है ॥

मालवदेशमें पद्मगर्भ नाम सरोवर । तहां एक बूढ़ो बगुला असमर्थ आपको उद्वेगो सो जनाय कह्यो करै । वाहिदूरतेदेखि एक केकड़ाने पूंछ्यो कि भाई तू दुःखी क्योंहै अरु अहार छो-ड़ा उदास ह्वै काहे बैठिरह्यो है । उन कही बन्धु मेरो जीवन तो

माछरीतें। सो धीवर कहतुहै कि काल्हि सकारें आय या सरोवर की सब माछरी मारिहौं। या दुःखते मैंआजहीते आहार तज्यो। यह सुनि वा तड़ागकी माछरियन आपसमें कह्यो कि या समय बगुला हमारोहितू सो जानतुहै अरु अब याहीसों आपनो बचावहू दीखतुहै। कह्योहै जो उपकारकरै तो शत्रुहूते संधि करिये क्योंकि उपकार कैसो मित्राई को कारणहै। आगे माछरियन बगुलासों कह्यो कि तुम काहू भांति हमें राखिलेउ। उन कहा तिहारे राखिवेको एक उपाय है कि जो मैं तुम्हें और सरोवरमें लैजाऊं तो बचो। उननि कही सोई करो। पुनि वह बगुला एक माछरी मुखमें लैजाय और वाहि खाय आवै बहुरि लैजाय। ऐसेही सब माछरी खाईं। तब एक कैंकड़ानेहू बगुलासों कह्यो मोहूं को लै चल। यह नयोमांस खानको मनोरथ करि वाहूको लैचल्यो अरु जहां बैठि माछरी खायही तहां लैजाय धर्यो। माछरीनके काँटे ह्यां परे देख कैंकड़ाने बिचार्यो कि मृत्युतो दीखतुहै। पर ऐसो कह्यो है जोलौं डरिये तोलौं भय अरु जब भयआयो तब मरिये कैमारिये। क्योंकि जूझमरिये तो मनमें पछितावो न रहै। ऐसेबिचारि उन बलकरि बगुलाको गरो काटिडार्यो। बकमर्यो। ताते हौं कहतुहौं कि अपूर्व बात करनो कबहूं न बिचारिये। खोटो खुटाई नाहिं तजत। पुनि चित्रवर्ण कही अहो मेरे मन में ऐसो आयो है कि मेघवर्णको ह्यांको राजदीजे। तो घर बैठे आछे पदार्थलीजे गीधकही महाराज अनभई बातको बिचारि जो सुख माने सो दुःखपावै जैसे कुम्हारके भांड़ेफोरि ब्राह्मणने दुःखपायो। राजाकही यह कैसी कथाहै। तहां गीध कहतुहै॥

कोटरनगर में एक देवशर्मा नाम ब्राह्मण रहै। तिन मेषकी संक्रांतिमें काहूयजमानते एक करवा सातूको भर्यो पायो। सो लैकरि रात्रिको काहू कुम्हारके घररह्यो अरु करवा वाके बासननि पर धर्यो। तब निज मनमाहिं बिचारन लाग्यो कि या सातूको बेंचि सातदमड़ी पाऊंगो ताको कछु और ल्याऊंगो। वाहि बेंचि

और और बेंचि और। या भांति जब धन बढ़ैगो तब नारियर सुपारी लै बड़ो ब्योपार करि धनबढ़ाय चारि बिवाह करिहौं कह्यो है ब्राह्मण चारि बिवाहकरै औ चारोंवर्ण ब्याहै क्षत्री तीन वैश्य द्वै शूद्र एकब्याहै। पुनि जब वे स्त्री आपसमें लरिहैं तब हौं जाको अवगुण देखिहौं ताके मारबेको ऐसे लौठिया घालूंगो यह कहि जो लौठिया घाली त्यों सतुआके करवासमेत उन कुम्हारकेभांड़े फोरे। बहुरि कहनिलाग्यो कि हाय मेरोकियो करायो घरगयो। आगे भांड़े फूटे देखि कुम्हारने वाके सबकपरा खोंस वाहि तिरस्कार करि घरते निकारि दियो। ताते हौं कहतुहौं कि आगे को मनोरथ करै सो दुःख पावै। पुनि हँसकरि राजाने गीधसों पूंछी कि अब कहा करनो उचितहै सो कहौ। गीधबोल्यो महाराज जो मंत्र राजाचूकै तो मंत्री मूर्खकहावै जैसे सांकरी गलीमें हाथी न चलै तब महावत मूढ़कहावै। ताते हौं कहतुहौं कि गढ़तो तिहारे पुण्य प्रताप ते औ हमारे उपाय सों हाथ आयो अरु तिहारी जीतहू जगतने जानी। पर अब आपने देशको चलौ तौ भलो। ना तौ बर्षाकाल मूड़परआयो औ बैरी बराबरकोहै। याते जो अब अटकिहौ तौ पराई भूमिमेंते निकसनो कठिनहैहै। ताते मेरे जान राजा हिरण्यगर्भते सुखसों मिलि हलमल करि निजदेश को पधारिये। कह्योहै जो मंत्री धर्मराखै सो राजा को सुहाती अनसुहाती कहै औ राजाहू बिचारै अनबिचारै प्रमाणकरै। ऐसो मंत्री राजाको हितकारी जानिये। पुनि कह्योहै जो आपने समानहोय तासों प्रीतिकरिये क्योंकि लरनो खांड़ेकी धारहै। यह दोऊओर लकतुहै। पुनि युद्धमें जूझिबे के समय मित्र धन जन कीर्ति औ अपनपौ शत्रुके सन्मुख मृत्युके हाथ दोनों होतुहै। पुनि राजाकही जो यहबात ऐसेहीहो तौ तुम प्रथमही क्यों न कही जो घरही बैठेरहते। मंत्री बोल्यो महाराज हमारो बचन तुम आदिअन्तलों न मान्यो। मेरोबिचार विग्रहकरनि कौनहौ क्योंकि राजाहिरण्यगर्भके गुण प्रीति करिबेयोग्यहैं वासों बैर न बूझिये।

कह्यो है जो सत्यवन्त, बलवन्त, धर्मात्मा, प्रतिष्ठित औ अनेक संग्राम जीत्योहोय के जाके भाई वन्धु अधिक होयँ ताते युद्ध न करिये क्योंकि सत्यवन्त आपनो वोल निबाहै। बलवन्तपै कछु बल न चले। धर्मात्मा जीत्यो न जाय आपत्ति में वाको धर्म सहाय होय प्रतिष्ठित के नामहीते लोग परायँ। जिन अनेक युद्ध जीतेहोयँ ताकी धाकही सों सबडरजायँ औ जाके भाईबन्धु अधिकहोयँ वह कबहूं न हारे। याते हौंकहतुहौं कि महाराज अब संधिकरिये क्योंकि ये सबगुण राजा हिरण्यगर्भ में हैं। इतनी बात सुनि राजा हंसके दूतने आपने राजाते ज्योंकी त्यों जाय कही। तब चकवाने दूतसों कह्यो कि भाई यह तो तुम अति अंगलकी बात सुनाई। पुनि जाय समाचार ल्यावो दूतगयो। तब राजा हंसने चकवासों पूंछी कि तुम काहेको मंगलमान्यो सो कहो। मंत्रीकही कि महाराज कह्यो है इतनेनते सन्धि न करिये बालक, वृद्ध, रोगी, लोभी, कायर, वैरागी, देव गुरुनिन्दक। क्योंकि बालकको तेजअतिअल्प। ताते दंड औ प्रमाद न करिसकै याते वाको साथ कोऊ न देइ। बूढ़ो औ रोगी उछाह करिहीनरहै ताहि सहजही मारिये। लोभी अन्तसंधिकरै यहजानि वाके संग कोऊ न लरै। कायर आपही रणतेभाजै। वैरागी सबते उदासरहै। काहूबातमें मत न देइ। सो आपहीहारै। देव गुरुनिन्दक अधर्मते आपहीआप नष्ट होय। ताते ऐसेरिपुको युद्धकरि मारिये। पुनि कह्योहै जो राजा विद्यावान्होय शस्त्रविद्याजानै देशकालपहिचानै आपनो परायो मानै गुण अवगुण मनआनै प्रभुतासहितरहै जहां जैसो उचित तहां तैसोकहै नीति करि सांचभाषै न्याव में काहूकी कान न करै मंत्र सदा गुप्तराखै सो राजा समुद्रान्त पृथ्वीको राज्य भोगै। इतनो कहि बहुरि चकवा बोल्यो महाराज जोहू गीध मंत्री ने संधि करिवेको कही पर राजा चित्रवर्ण अति अभिमानी है। वह वाको कह्यो न मानि है। कह्यो है कि भय विन प्रीति न होय अरु संधिकिये दोउओर कुशलहै। यासों मेरे मनमें

एकबातआईहै सोहोयतौभलो कि सिंहलद्वीपकोराजासारसमेरो परमसित्रहै। महाबल वाकोनामहै। ताकोहौंलिखौं कि वह चित्र-वर्णके जम्बूद्वीपपै जाय सड़राय अरु ह्यां तुम आपनीसेनाको जोरि वाकी सेनाको पीर उपजावो। दिन रात उठत बैठत नि-करत पैठत दबाओ तौ जयपावो। कह्यो है दोऊ ताते होयँ मिलैं लोहकी भांति राजाकहीनीकोजानो सो करौ। तब चकवाने वि-चित्रनाम बगुलाको पत्रदै सिंहलद्वीप पठायो अरु वहां प्राती पावत प्रमाण सारस चढ़िधायो। आगे गीधमंत्री ने राजाचित्रवर्ण सों कह्यो कि महाराज यह मेघवर्ण काग गढ़में अनेक दिन रह्यो। याहिपूंछो जुराजा हंस प्रीतिकरवेयोग्यहै कैनाहिं। तब राजाने कागसोंकह्यो कि अहो राजाहंस औ वाको मंत्री कैसो है। कागबोल्यो महाराज राजाहंस साक्षात् युधिष्ठिर है अरु मंत्री चक्रवाक की समान चतुर दूजो पृथ्वी में नाहिं राजा कही तैं वाहि कैसे डहकायो अरु ह्यां कौनप्रकार रहनपायो कागबोल्योकि महाराज राजा जाकी प्रतीतकरै ताहि डहकावनो कितकबातहै जैसे जाकी गोदमें सोवै औ सोईमारै तो सोवनवारेको कहा ब-साय। चकवाने मोहिं देखतही पहिचान्योहो। पर राजा हंसने मंत्रीको कह्यो न मान्यो। ताहीते मैं वाहिठग्यो अरु ह्यां रहनि पायो महाराज राजाहंस बड़ोसाहसी औ सत्यबादी है कह्यो है जो आपसत्यवक्ताहोय सो और कोहू आपसो जानै जैसे एक स-त्यबक्ता ब्राह्मणने औरकीबात सत्यमानि बोकराखोये राजाकही यह कैसी कथाहै तब काग कहनिलाग्यो॥

गौतमारण्य में एक ब्राह्मण यज्ञके निमित्त बोकरा माथेलिये आवतुहो। वाहि तीनि ठगनिदेखि बोकरालैनको आपसमेंमतो कियो अरु वे तीनों साधुको वेषबनाय तीनठौर जाय बैठे। जब वह ब्राह्मण पहिले साधुके निकटगयो तब उनकह्यो अरे ब्राह्मण यह कूकर माथेधरि काहे लियेजातुहै। इनकही कूकर नाहिं। यज्ञको बोकराहै। यह सुनि वह साधु चुपरह्यो। आगे दूसरे के

पासगयो। पुनि उनहूं कह्यो रे देवता मूड़पै श्वान क्यों चढ़ायो। इतनो सुनि इन बुरोमानि नाहिं शीशते उतारि देख्यो अरु संदेहकरतु चल्यो कि जो देखतु है सो याहि कूकरकहतुहै पर मेरी दृष्टिमें तो बोकरा जनातुहै। ऐसे शोचत शोचत वह तीजेके निकटजाय पहुंच्यो। तद उनहूं कह्यो अहो विप्र कूकरा शिरते डारि दे। तैं यह कहा अनर्थ कियो जो श्वान मूड़पै धरिलियो। यह बात वाके मुखते सुनत प्रमाण वाहि कूकरजानि विप्रने माथेते पटक आपनो पंथलियो अरु विननि बोकराले आपनो मनोरथ पूरोकियो। ताते हौं कहतुहौं कि दुष्ट के वचनते साधुहू की बुद्धि चलै। बहुरि जैसे चित्रकरण ऊंटको सिंहनें मारिखायो। राजा पूंछी यह कैसी कथाहे। पुनि बायस कहतुहै॥

एकवनमें मदोत्कटनाम सिंह। ताके तीन सेवक। एक तेंदुआ दूजो काग तीसरो स्यार। विन तीननि एकदिन वा बन में ऊंट देख्यो। तब उननि वाहि पूंछ्यो तू कहांते आयो। उनकही मैं साथ भूलिआयो हौं। यहसुनि विन तीननि वाहि लैजाय सिंहसों मिलायो। सिंहहूनेवाहि अभयदानदै राख्यो अरु चित्रकरण नाम दियो। पुनि वह सबन के साथ हिलमिल रहनि लाग्यो। कितेकदिन पाछें बर्षाकालमें कईएक दिनकी झरीलागी औ वा समय अहार न जुरयो। तब विन तीननि आपस माहिं कह्यो कि भाई अब कोऊ ऐसो उपाय करिये जु सिंह ऊंटहिमारै तौ अहार खैबे को मिलै। तेंदुआ बोल्यो मित्र याहितो सिंहने अभयदान दियो है। सो कैसे मारिहैं। काक कही अहो समय पाय राजाहू पापकरतु हैं जैसें भूखी नागिनि आपन अंडाखाय भूख्यो कहा न करै कह्यो है मतवारो असावधान रोगी वृद्ध अधीर कामी क्रोधी लोभी भूख्यो डर्यो आदि ये सब अधर्म को न जानैं न मानैं। ऐसे बतराय वे सिंहके निकटगये अरु हाथजोरि सन्मुख ठाढ़ेरहे। तब उनि पूंछी कछु खैबेको पायो। इननि कही महाराज बहुत यत्न कियो पर कछु हाथ ना आयो। सिंह कही अब

कैसें बचिहैं । बहुरि कागकही महाराज आप हाथ आयो अहार छोड़तुहो । ताते औरहू ठौर नहीं मिलत । सिंह बोल्यो सो कह । इनक्षुक कानसें कही या चित्रकरण को मारिखाओ । उनि कही याहि मैं अभयदान दियो ताहि कैसेमारौं । कह्योहै भूमि सुवर्ण अन्न आदि दान बड़ेदानहैं । पर शरणागत को राखिवो इनते अधिक फल देतुहै । बहुरि काग कही महाराज तुम जिनमारो । हम ऐसो उपायकरिहैं जु वह आपही जीवदान करि निज शिर तुम को देहै । यहसुनिसिंहचुपरह्यो । तब कागनेवाकोमनोरथजानि कपट करि । चित्रकरण सों कह्यो कि तोहिंतो राजाने अभय दान दियो है परन्तु यासमय तुम विनते अहारकी मनुहारकरो । तो राजा तुमते अति प्रसन्न होयगो ऐसे वाहि फुसलाय सिंह पास लैजाय उनतीननि हाथ जोरि कह्यो महाराज यह चित्रकरण कहतु है कि अहार तो कहूं नाहिं मिलतु औ तुम अनेक दिनके भूखेहो । तिहारो दुख मोपै नाहिं देख्यो जातु । तातें तुम मोहिं मारखाओ हूं कह्यो है राजाते प्रजाकी रक्षाहै प्रजा को मूल प्रजापति है अरु मूलरहै तो डार पात फूल फल आपहीते होयँ पुनि सिंह कही अरे जल मरिये सो भलो पर ऐसो कर्म न करिये तब स्यार बोल्यो महाराज ऐसेही कह्यो है तबतौ चित्रकरणहूने सिंहकी दृढ़ताजानि मनुहारकरि कह्यो महाराज आप मेरो शरीरखाओ । इतनीवात वाके मुखते सुनतहीसिंहनेवाहि दौरि मार्‍यो अरु सबनि मिल भक्षण कियो । महाराज ताते हौं कहतुहौं कि दुष्टके उपाय औ उपदेशसों साधुहूकी मनसा डिगै । बहुरि राजा चित्रवरण बोल्यो अहो मेघवरण तुम इतेकदिनशत्रुनि माहिं कैसे रहे अरु कौन भांति उनते तुमते प्रीतिनिभी वायसबोल्यो महाराज कह्यो है कि स्वामी के कार्य शत्रुहू को माथे चढ़ाइये औ गिराइये ऐसे जैसे नदीपाय धोय धोय रूखको गिरावै । पुनि जो सुबुद्धी होय सोऊ आपने प्रयोजनके निमित्त वैरीहू को माथे चढ़ाय । निज कार्य साधै जैसे बूढ़े सर्पने शिर

खढ़ाय मेंडुक खाये। राजा कही यह कैसी कथाहै। तब काक कहतुहै काहूबनमें एक अतिबूढ़ो मन्दविष नाम नाग रहै। सो आहार को फिर न सकै। ताते सरोवर के तीरपस्योरहै। काहू दिन एकदादुरने वाहिदेखि दूरतेकह्यो अहोतुम जो आहार नाहिं खोजतु परेई रहतुहौ सो कहाहै उनकही हौं कहां जाऊं औ मों अभागकोकोबूझतुहै। इतनी सुनि विन याहि आचार्यजांनिकह्यो कि तुम अपनी अवस्था कहो। तब सर्प कहनि लाग्यो॥

या ब्रह्मपुरी में कौडिन्यनाम ब्राह्मण। वाको बीसवर्ष को पुत्र पढ़यो गुन्यो। मैं अपने अभाग्य ते ताहि डस्यो तब कौडिन्य सुशील नाम पुत्रको मस्यो देखि शोक सों घूमि भूमिपै गिस्यो। पुनि वाके भाई बंधु और गांवके लोग सब आयजुरे। कह्योहै सुख दुःख समय असमय शुभ अशुभमें जे इष्ट मित्र बन्धु होयँ ते सुधिलेइँ। आगे एक कपिलदेवनाम ब्राह्मणने आययाहि समझाय बुझायकै कहयो अरे कौडिन्य तू अति मूर्ख है जो अब खेद करतुहै। क्योंकि संसारकी तो यही रीतिहै इत उपज्यो उत मस्यो। ताते याको शोक कहा। देखो सेनासहित युधिष्ठिर से पुरुष न रहे। तौ औरकी कहाचली। बहुरि देहधारी को मृत्यु ऐसे लगी रहती है कि जैसे सम्पत्तिमें विपत्ति प्राप्तिमेंहानि संयोगमें वियोग ज्ञानमें ग्लानि पुनि यह देह छिन २ योंघटतिहै ज्योंजल में काचो घट घटे। कहयो है शरीर यौबन रूप द्रव्य ठकुराई मित्राई और एकठौर को बास ये सब अनित्यहैं। याते जो ज्ञानी चतुर पण्डितहोय सो इनके गयेको शोच न करै अरु सुनों जैसे नदीके प्रबाहमें जहां तहांके काठआय मिलतुहैं तैसे या संसार के जीवहैं इनते जेतौ सनेहकीजे तेतौ दुःखहोय। क्योंकि जगमें सदाकाहूको साथ नाहीं निबहत। अरु जो आपनीही देहसाथ न देय तौ औरकी कहाचली कहयो है माया किये यों दुःखबढ़ै ज्यों कुपथ्य किये रोग। पुनि काल ऐसे चल्योजातहै जैसे नदी को जल। यासों या संसारकी माया छांड़िदीजै अरु साधु की

संगाल कीजे संगति साधुकी सब सुखसों अधिक सुखहेतु है ॥

दो० तीरथ व्रत जग देवता लाल मंत्र द्रुम खेत।
काल पाय फल देत हैं साधु सदा फल देत ॥

अरु मित्र सुनों। जैसे वर्षाकालमें वालके बन्धन ढीले ह्वै जात हैं तैसे वृद्धअवस्थामें या शरीरके। इतनीबात कहि पुनि कौडिन्य सों कपिलदेवने कह्यो भाई अब दुःख जिनकरो। आपने प्राण राखिवेको उपायकरो। यहसुनि कौंडिन्य उठिबोल्यो बन्धु अब यह गृहरूपकूपमें न रहिहों बनमें जैहों। पुनि कपिलदेवकही भाई अनुरागीको बनहूमें दोष औ उदासीको घरहीमें मोक्षकह्यो है। जो जन फलकी वासनाछोड़ि विष्णुभजनकरै ताहि बन और घर समानहै। अरु कौनहू आश्रममें रहि दुःखसहि धर्म कर्म दान तप व्रत यज्ञकरै औ सब जीवपै दयाराखै ताहीको तपस्वी जानिये। पुनि जोप्राणराखिवेको आहारसंतानकोमैथुनकरै और सत्यवचन भाषै सोदुःखरूपी समुद्रकोतरै। कह्यो है आत्मारूपीनदीके संगम पै पुण्यतीर्थ सत्यजल शीलकरार दयातरंग तामें जो स्नानकरि अन्तःकरण शुद्धकरै सो जन्म मरण व्याधितें छूटै। यहसंसार सार नाहीं। मनुष्यदुःखको सुखकरिमानतहैं। जैसेबोझको बहनिहारो मोटपाय सुखमाने तैसे मनुष्यगति है। बहुरि कौडिन्य बोल्यो भाई तुम सांच कहतुहो। यह बात ऐसेहीहै। इतनो कहि विन लांबीसांसलै मोहिंतो यह शापदियो कि तू मेंडुकनको बाहनहो-उ। अरु वानेआप गृहस्थाश्रम छांड़ि संन्यासधर्म लियो। तातें अब मैं वाको दियोशाप भुगतवेको आयोहों। यहबातसुनि दादु-रने आपने राजासों जायकही। तव जलकुंद नाम मेंडुकन को राजा बाहर आयो। पुनि नागने वाहि प्रणामकरि मूड़पै चढ़ा-यो अरु तालके चहुंधा लै फिर्यो। दूसरे दिन जब वह आय चढ़्यो तब वह चल न सक्यो। पुनि दादुर बोल्यो उतावलो चल। सांपकही स्वामी मोपै मारेभूखके चल्यो नाहींजात। उन कह्यो तू मेरी आज्ञातें सेना के मेंडुक खायो कर। बहुरि सांपने

हाथजोरि कह्यो महाराज तुम मेरी बड़ी सहायताकरी। यौंकहि पुनि खानि लाग्यो कितेक दिन में सब मेडुकनको खाय उनि जलकुन्दहूको खायो। तातें हौं कहतुहौं कि जो चतुरहोय सो आपनो कार्य्य साधबेके लिये शत्रुहूको माथे चढ़ावतुहै। महाराज ऐसेही मैं हूं राजा हिरण्यगर्भसों प्रतीतबढ़ाय गृहमेंरह्यो आगे राजा चित्रवरणने गीधसों कही कि बाबाजू अब राजा हंस हमारो होयरहै तो वाको बलाइये। नातो आपने लोग। यहबात राजा चित्रवरण मंत्रीते कहनि न पायो हो कि एकदूतने आयकह्यो महाराज सिंहलद्वीप को राजासारस तिहारेदेशपै चढ़िआयोहै। जो नगर बचायो चाहौ तो बेग सुधि लेउ। नातो रहनो कठिन है। यह सुनि राजा मौनगहिरह्यो अरु गीधमंत्रीने मनमें कह्यो कि होय न होय यह चकवाको कामहै। पुनि राजा मयूर क्रोधकरि बोल्यो कि यह कायरहै। चलो प्रथम वाहीको खेदकाढ़ैं। गीध कही महाराज शरत्कालके मेघकी भांति वृथा न गाजिये बलकरि दिखलाइये। नीतितो यों है कि एकही बेरि दिशि २ के लोगनि सों बैर न करिये। कह्यो है अनेक चैंटीहू मिलैं तो गजकोमारैं। तातें महाराज मेरेजान तो राजाहंसतें बिन प्रीति किये ह्यांतें निभनौंहू कठिन होयगो क्योंकि चलतही शत्रु पीछो करि है। यातें विचार करि कार्य करो। बिन बिचार्यो कामकिये पाछे पछितावो होतुहै जैसें बिना बिचारें न्योर मारि ब्राह्मणी पछताई। राजाकही यह कैसी कथाहै तब गीधकहतु है॥

उज्जैन नगरी में एक माधवनाम ब्राह्मण। ताकी स्त्री ने पुत्रजायो। सुएक दिन वह ब्राह्मणी पुत्रकी रखवारी ब्राह्मणको राखि आप नदी न्हैबेको गई। अरु ताही समय पण्डित को राजा को बुलावो आयो तब वाने बिचार्यो कि जो हौं न जाऊंगो तो राजा जो दान देइगो सो और कोऊ लैजायगो। कह्यो है लेनदेन के कार्य्यमें उतावल न करि ये तो वह अवसर बीते हाथ न आवै औ जो जाऊं तो बालक कौनको दैजाऊं यह बिचारि वहब्राह्मणजाके

नेरे एकबहुतदिनकोपोष्यो न्योरहो ताहि वाछोहराके निकटरख-
वारी राखि आप राजाकेहयांगयो । आगे न्योराकेनिकट एकसर्प
आयो।ताहिन्योरानेमारिखायो । जबब्राह्मणीआई तब न्योर दौरि
वाकेपायँनपै गिर्यो । उनयाको मुंहलोहू भर्यो देखि निजमन
मेंजान्यो कि इनचांडालने मेरोपूतमारिखायो यहसमझब्राह्मणी
ने न्योरेको मारिडार्यो । पुनि आगूजाय देखे तो छोहराखेलतु
है अरु वाके निकट सांप मर्योपर्योहै । तब वह पछतायके बोली
कि हाय मैं पापिन यह कहा कर्म कियो जो बिनदेखे भाले बा-
पुरेन्योरको जीव लियो ताते हौं कहतुहौं कि महाराज बिन बि-
चारे कबहूं कछु कार्य न कीजे । अरु काम क्रोध लोभ मोह तजि
दीजे । क्योंकि इन्हीं दोषन ते राजापृथु जनमेजय रावण औ कु-
म्भकर्ण मारेगये अरु देखो शत्रुभाव छांड़ि परशुराम औ अंबरीष
ने जितेन्द्रियहोय अनेक दिन राज्य कियो ताते हौं कहतु हौं
कि महाराज जो मेरो कह्यो मानो तो वा राजा ते प्रीति करि
चलौ । कह्यो है प्रथम तो पराई भूमि माहिंजाय डेरा करनौ
कठिन अरु किये पाछे उठावनो अतिकठिनहै । यासों कार्यसाधि-
बेको चार उपाय कहे हैं साम दाम दंड भेद । पर इनमें साम उपाय
सों बेगकाम सिद्ध होतु है । राजाकही प्रीति उतावली कैसेहोय ।
गीधबोल्यो बेगही होय । कह्यो है साधु देखतही मिले औ मूर्ख
कछु न समुझे । जो ब्रह्माहू वाहि चितावे तौहू न जाने न माने ।
अरु महाराज राजाहंस तो बड़ौ साधुहै औ वाको मंत्री सर्वज्ञ
नाम चकवा अतिचतुरहै मैं काकके कहेते उनकी करणी औ
करतूत जानी । कह्यो है जाहि न देख्यो होय ताके गुण औ कर्म
सुनि २ के वाहि पिछानिये राजाकही अनेकबात करिबेते कहा
प्रयोजन । अब जो उचित होय सो करो । या बातके कहतही
गीधराजाते आज्ञाले गढ़मेंगयो अरु आपने आवनको समाचार
चकवासों कहि पठायो । वाने सुनतही आपने राजाको जायसु-
नायो । तब राजा हंसने चकवासों कह्यो कि अब जो गीध के

पाछे और कटकआवे तो कहाकरिये । चकवाबोल्यो महाराज यह शंकाकरिबेकी ठामनाहिं क्योंकि यह गीध बड़ो पुण्यात्माहै । याते कछु चिन्तानाहिं । कह्यो है बिन भयकीठौर सन्देहकरनो कुबुद्धि को कामहै । इतनी कहि चकवाने जाय गीधको ल्याय राजाहंस सों गढ़केद्वार आगे लिवायो । तब राजा हंसने गीध को आदरदै बैठायो पुनि गीध बोल्यो महाराज यह गढ़ आपको है । जाहि दियो चाहो ताहि देउ । हंसकही यहबात ऐसीहीहै । बहुरि चकवाबोल्यो सुनो । हमारो तुम्हारो एकही है । पर अब कछु अधिक कहिबेको प्रयोजननाहिं । गीध बोल्यो महाराज नीतिशास्त्र में कह्यो है कि लोभी को धन दै भलो मनाइये उग्र होय ताकी कर जोरि स्तुति गाइये । मूर्ख को कह्यो राखिये पण्डित ते सत्य भाषिये । देवताकी निष्कपट पूजा कीजै । मित्रबंधुको अति आदरदीजै । सेवक औ स्त्रीको दानसानते वशकरिये । तो या कठिनसंसारमें सुखसों दिनभरिये । ताते हौं कहतुहौं कि जो उचितहोय सो अब करिये । चकवा बोल्यो जो संधि की रीतिहै सो कहो । अधिकबात कहिबे ते कहा काम । पुनि राजाहंसने कह्यो कि सन्धिके कितेक प्रकार हैं सो कहो गीध बोल्यो धर्मावतार हौं कहतुहौं । आप चित्तदै सुनिये । कह्यो कि जब बलवान् पै अतिबलवन्त चढ़िआवै अरु वापर याको कछु बल न चलै तब संधि उपायकरै । संधिके नाम भूपाल, उपहार, सन्तान, संगति, उपन्यास, प्रतिकार, संयोग, पुरुषांतर, अदृष्ट, जीवन, आत्मा, उपग्रह, परक्रिया, उच्छिन्न, परभूषण । अरु ये सन्धि गतिहैं । समानताते द्वै राजा मिलैं सो भूपालसंधिकहावै । दान दै प्रीतिकरै ताहि उपहारसन्धि कहतुहैं । दासीदै मिलै वाहि संतानसन्धि कहतुहैं पांच सातमिल बीचमेंपरि प्रीतिकरावैं ताहि संगतिसन्धि कहि गावैं । द्वै राजा एकही कार्य्य करि आपसमाहिं हित राखैं सो उपन्याससन्धि । अब हम इनको कार्य सारैं पाछे ये हमारे कार्य आयहैं । ऐसे बिचारि जो मिलै सो प्रति-

कारसन्धि । एकही शत्रुपर द्वै नरपति चढ़ैं अरु पैंड़ेमें मिलैं वह संयोगसन्धि । आपने योधानको साथले मिलै वाहि पुरुषांतरसंधि कहैं । तुम काहि मारो हम तिहारे ह्वै रहैं यों कहिमिले सो अदृष्ट संधि । भूमिदै प्रीतिकरै वहजीवत्तसन्धि । प्राण राखिबेको सर्वस्व देय ताहि आत्मसंधि कहैं । आपनो कटक सेवाको पठावै सो उपग्रह सन्धि । द्वै राजा आपसमें बैरभाव राखैं पुनि काहू शत्रुकेधेरे में आय दोऊ मिलजाय़ँ सो परक्रियासन्धि । सारभूमिदै मिलै वह उच्छिन्नसंधि । जो द्रव्य उपजैगो सो तुमको दैहैं पर निकट जिन आवो ऐसेकहिमिलै वाहि परभूषणसंधि कहिये । इतेक बातें कहि गीधबोल्यो महाराज ये सब संधि कहीं । पर या समय उपहारसंधिहीभलीहै क्योंकि जो बलवंत आपनो देशछाँड़ि गाँठिकोधनखाय आवै सो बिनभेंटलिये न जाय । तातें बिनदिये संधि न होय । अब धनदीजै और उपहारसंधि कीजै । चकवा बोल्यो सुनौ यह आपनो वह परायो ऐसो जे विचारतुहैं ते अधम जन हैं । अरु उत्तम जननिको तो ऐसो विचार नाहिं । वे तो सब सृष्टिहीं को कुटुम्ब जानतुहैं । कह्यो है जे पुरुष परस्त्रीको माता करिमानैं औ दूजे के धनको माटी समान जान पुनि सब जीवन को जीव आपनो सो गनै तेई या जगत् में पण्डित औ धर्मात्मा हैं । बहुरि गीध कही तुम यह कहा कहतुहो । सुनौं मेरेजान जिन संसार में आय या छिनभंग देहको धर्म छांड्यो तिन सर्वस्व गँवायो । कहतुहैं कि जैसे जलमाहिं पवनचलै चन्द्रको प्रतिबिम्ब चंचलरहतु है तैसेही प्राणीको मन सदा अस्थिर रहतु है । तातें या मनुष्यको उचितहै कि देहकी मायाछांड़ि आपने कल्याणको कार्य विचारै अरु सदा सर्वदा सज्जननिकी संगतिकरै क्योंकि वासों धर्म औ सुख दोऊमिलैं । यासों हौं कहतुहौं जो मेरो कह्योमानै तो ऐसेहीकरो । कह्यो है सहस्र अश्वमेधको समान सत्यहै पर जोखिये तो सत्यही अधिकहोय । यातें हौं कहतुहौं कि अब दोऊ नरपति सत्यबीचदै मिलो अरु उपहारसंधि करो तो अतिउत्तमहै क्योंकि

यामें सांपमरै न लाठीटूटै । चकवा बोल्यो तुम नीकी बात कही । यह सुनतही राजा हंसनें रत्न वस्त्र अलंकार द्रव्य दूरदर्शी गीध को दियो । अरु बिनहू लै प्रसन्न ह्वै सर्वज्ञ चकवा को साथकरि राजाहंससों बिदाहोय आपने कटकको प्रस्थानकियो । ह्वांजाय ह्वांको सब वृत्तान्त सुनायो औ चकवाको राजा चित्रबरण ते अतिआदर मानसों मिलायो । तब राजाहूने बड़ेमानसों पान औ प्रसाददै चकवाको बिदाकियो । इत चकवा राजा हंसके निकट आयो अरु उत गीधने चित्रबरणको टेरसुनायो कि महाराज तिहारी सब मनकी वांछापूजी । अब कुशलक्षेम आपनेदेश चलो । यह सुनि राजामयूर वहां ते चल्यो अरु आनन्दते आपनी राजधानी में पहुँच्यो । दोऊराजाआय आपनेदेशमें सुखसों राज्यकरनिलागे । इतनीकथा कथ विष्णुशर्मा बोल्यो महाराजकुमार अब जोकछु तुम्हें सुनिबेकी इच्छाहोय सोकहो । राजपुत्रनिकही अहो गुरुदेव हमने तिहारे प्रसादते राजनीति के सब अंगजाने सुख पायो अज्ञान नशायो मनको खेदगँवायो मानो नयो जन्मभयो ॥

अथ पञ्चमकथा प्रारम्भ ॥

विष्णुशर्मा बोल्यो सुनिये महाराजकुमार । याकथाके पढ़ेसुने ते मनुष्य कठिनताके समुद्रको ऐसेतरै जैसे बानर आपनी बुद्धि सों तर्यो । अरु जो कपट सों कार्य लियो चाहै औ अधूरे काम माहिं मनोरथ कहिदेय सो ऐसे ठगायो जाय जैसे मगरमच्छ ठगायोगयो । राजपुत्रनिकही यह कैसी कथाहै । तब विष्णुशर्मा कहनिलाग्यो ॥

समुद्रके तीर काहूठौर एक जामुनको पेड़ सफल । तापै रक्तमुखनाम एकवानररहै काहूसमय सागरकी लहरको मार्यो एक बिकरालनाम मगरमच्छ वहांआयो अरु वृक्षतरे कोमल बालू में जाय बैठ्यो । तब मर्कटने वासें कही अहो तू आज मेरो पाहुनोहै याते मैं जम्बुफल देतुहौं । तू मन भरि भोजनकर । कह्यो

है हितूहोय कै अनहितू पंडित होय कै मूर्ख भोजन समय आवै तासों अतिथिधर्म कीजै॥

दो० आवै भोजन के समय शत्रु चोर चण्डाल।
अतिथि जानि पूजाकरै जगमें परम उदार॥

आगे वह मगर फलखाय संतुष्टभयो। पुनि नितआवै नित जाय भली २ बातैं कहै सुनै। फलखाय अरु पाके २ फल आपनी स्त्रीहूकेलिये लैजाय। एकदिन वाने पूछो अहो कंत ये अमृतफल तुम कहांते ल्यावतुहौ। इनकही मेरो एक परममित्र रक्तमुखनाम बानर है। सो मोहिं प्रीति सहित ये फल देतुहै। पुनि वहबोली जो ये अमृतफल नित खातुहै ताको करेजा अमृत सम होयगो। तातें तू वाकोकरेजा मोहिं ल्यायदे। मैं वाहिखाय तृतहोय तोसों क्रीड़ा करोंगी मगर कही एक तो वह मेरो परम मित्र दूजे फलको दाता ताहि मैं कैसे मारिहौं। कह्यो है संसार में द्वैप्रकारके भाई होतुहैं। एकतो मा जायो दूजो मुख गायो। पर आपने सहोदर भाई ते वाहि अधिक जानिये। बहुरि वह बोली सुन। अबलों तो मेरो कह्यो तैं कबहूं न उल्लंघ्योहो पर आज तैं न मान्यो तातें मैं जान्यों कि जाहि तू वानर कहतुहै सो नाहिं वह वानरी है तातें तू आसक्त भयोहै। वाही के अनुराग ते दिनभर वहां रहतु है। सो मैं जान्यो। याही ते तू मेरे पास आय वाही की बातैं नित हँसि २ कह्यो करतु है औ रात्रि को सोवत समय तेरो अंग शिथिल रहतु है। मैं अब बूझी तेरो मन और नारी सो लाग्यो है। अधिक कहा कहौं। जबलौं अपनी सौत को करेजा न खाऊंगी। तबलौं अन्न पानी न करोंगी अरु प्राण दै मरोंगी। यह सुनि डरि मगर दीन है बोल्यो प्यारी हौं तेरे पायँ परतुहौं। तू जिन रिसाय। यों सुनि वाहि आधीन भयो जानि आँखिन में आंसूभरि बोली अरधूर्त कंत आजलौंतो तैं मेरे अनेक मनोरथ साधे पर अब तू औरसों स्नेह करि मेरो निरादर करतुहै। यातें तेरो पायँनको परिबोदूनों

उरदाहतुहै। अरु जो तेरो प्रेम वासों नाहीं तो क्यों न मेरोनेम पूरो करै। पुनि वह निजमनमें कहनि लाग्यो कि साधुजन सांच कहतुहैं॥

दो० पाहनरेखरु तरुणिहठ कुक्कुट क्रोध सुभाय।
नीलरंगसम ना मिटै कीजेहु कोटि उपाय॥

तातें मोहिं याके मनोरथको यत्नकरनो बन्यों। यह बिचार ह्वांते उठि बानरके पासजाय मगर अनमनोह्वै बैठिरह्यो। पुनिमर्कटने वाहि उद्वेगी देखि कह्यो अहो आज कहाहै जो तुम कछु भाषत नाहिं अरु चिंतितहोय बैठिरहेहो मगर बोल्यो मित्र आज तेरी भाभीने मोसों निठुर वचन कहि कह्यो कि तू कृतघ्नी है अरु काहूके उपकारको न मानतुहै न जानतुहै। क्योंकि ऐसे उपकारीको तू एकबेरहू आपने घर नाहिं ल्यावतु। पुनि निर्लज्ज होय वाके घर काहे खायखाय आवतु है। अब अधिक कहाकहौं जो तू मेरे उपकारी देवरको न ल्यावेगो तो मोंकोहू जीवतु न पावैगो। मित्र यातें मैं तो ह्वांते उदासहोय इत तेरे लैनको आयो औ उत उन तेरे कारण कंचनरत्नते घर सँवार पाटम्बरछाय बिछाय नानाभांतिके पक्वान व्यंजन बनाय राखेहोयँगे अरु पौरि पर बैठि बापुरी उत्कंठितबाट जोवति होयगी। बानर कही अहो मित्र भाभीने यह बात तो तुमते सांचही कही क्योंकि ऐसे औरहू ठौर कह्यो है मित्रताके छः लक्षणहैं दैनो लेनो निज दुःख सुखकहिबो वाको सुनिबो वाकेघरजीमनों आपनेगेहजिमावनों ये बातें प्रीतिमें आवश्यक चाहिये। पर हम बनबासी तुम जलनिवासी। तातें मेरो जैबो तो ह्वां नाहींबनतु। पै तुम कृपाकरि भाभीको ह्यां लैआवो तो मैं वाके पायँपरि अशीशलेउँ। मगर कही बन्धु हमारो गेह जलमाहिं नाहिं। जैसे समुद्रके कांठे इत तुम रहतुहो तैसे उत हम अरु जो तुम न जावोगे तो हमारोगृह कैसे पवित्र होयगो। यातें तुम मेरी पीठपर चढ़िलेउ। मैं तुम्हैं सुखसों लैचलों बहुरि बानर कही भाई जो ऐसाहै तो अब बिलंब

जित्तकरो बेगही चलो। यह कहि वाकी पीठपर चढ़ि बैठ्यो अरु वह लैनीरमें पैठ्यो। पुनि ओंड़में जाय वेगन्दलनि लाग्यो तब बानर बोल्यो भाईधीरे चलो पानी की तरंग मोहिं ठेलेदेति हैं यह सुनि मगरने निजमनमें बिचार्यो कि अबतो यह बंदरा मेरीपीठतें तिल भरहू नाहीं खिसकसकतु। तातें हौं आपनो मनोरथ क्यों न कहौं जो यह अंतसमय जान आपनो इष्टदेवभजै। ऐसे जीमें ठानि उनि बनचरसों कही मित्रहौं स्त्रीके कहे विश्वासघात करि तोहिं मारिबेको लिये जातुहौं। तुम आपनो इष्टदेव भजो अरु जगकी मायातजो बानरकही भाई मैं भाभीको ऐसो कहा अपराधकियो जो तुम मोहिं मारनिको साथलियो मगरबोल्यो अहो तुम नित अमृतफल खातुहो। यातें तिहारो करेजा अमृतसमान होयगो। यह जानि उन खैबेको मनोरथ कियो है अरु वाके मनोरथ पूजबे को मैं हूं शिरपाप लियोहै। कह्यो है अग्निसाखदै जाको करगहिये ताको मनभायो कार्य करिये। यह पुरुषको धर्म है या बात को सुनि रक्तमुख बानरने वाकी मूर्खता देखि उक्ति युक्ति सों वाके मनोरथपर मनोहर वचनसुनाय कि मित्र जो तेरो ऐसोही बिचारहो तो तैं मोतें हांहीं क्यों न कह्यो जो मैं आपनो करेजा जम्बुतरुमें न राखि आवतो। वह तो मोपै भाभीके पायँ लागिबे की बड़ीभेंटही कह्यो है। राजद्वार देवद्वार गुरुद्वार सूने हाथ जैबो उचितनाहीं। पर हौं तो हृदय शून्य होय या अगाध जल में तेरी गैल चल्यो आयो अरु सुनि सबप्राणीको भय होतु है क्योंकि भयको निवास देहमें करेजाहै। याहीतें जीव शोचकरि चलतुहैं। आगले पायँको ठौरकरि पाछिलो पगउठावतुहैं। औ हम बनचर धरती पगहू न धरैं। ताहीतें हमारोनामब्रह्माने शाखामृग धर्योहै। सो आपने कुलधर्ममों भयको निवास जो करेजा ताहि निकारि रूखके खोड़र में धरि निर्भयह्वै डार २ दौरि २ कूदि २ फिरतुहौं। अरु अबहीं तेरेसंग आवत जामुनके खोड़रमें यतनसोंधरिआयो। बिनहृदय तेरेसाथनिर्भय ह्वै उठिधायो। यद्यपि

हमारो हृदय बिधाताने संसार की रीतिते बनायो है पर वह हमारे काहूकामको नाहिं। अरु तुम सोई चाहतुहो याते उत्तम कहा जो तिहारे कार्य आवै। कह्यो है॥

दो० धनदैके जिय राखिये जियदै रखिये लाज।
धन दै जी दै लाज दै एकप्रीति के काज॥

इतनी बातके सुनतेही मगर आनन्दसों बोल्यो अहो प्रीतम जो ऐसीबातहैतो आपनो करेजा मोहिंदै जु वा दुष्टपत्नीको हठर-है अरु तेरो जीवबचै मोहिं मित्रद्रोहको पाप न लागै। इतनो कहिपाछेफिर्यो। पुनि वे दोऊ आप अपनो इष्टसुमिरणलागे। कह्योहै अधर्मीको मनोरथ इष्टदेव भजेहू निष्फलहोय। आगे बानर आपने पुण्यप्रताप सों तीरपै जाय मगर की पीठतेउतरि लांघि २ डगैं भरि जम्बूवृक्षपर जायबैठ्यो औ मनमेंकहनि लाग्यो कि मैं आज नयो जन्मपायो जु या दुष्टके हाथते बचिआयो कह्योहै कि जाको विश्वासजीमें न आवै ताको विश्वास कबहूं न कीजै। पात्रकुपात्र बिचारिये। जाको जैसो स्वभाव होयतासोंतैसेही नि-बाहिये अरु दुष्टके मीठेवचननि पर न जाइये क्योंकि वह अपनी घातहीसों कहै।यहतो ऐसे विचार रह्यो है।तामेंमगरबोल्यो भाई बैठिकाहे रह्यो।वहकरेजा मोहिंदेमैंतेरीभाभीकोजायदेउँ।बानर कह्योमित्र अथाह जलमें गयेते भ्रमभयो है। तातेमेंपैबोल्योनाहीं जात। मगर कही बन्धु पुरुषको कह्योहै कि श्रमजीत परमार्थ पुरुषार्थ करै। यहसुनि बानररिसायकै बोल्यो अरे मूर्ख विश्वास घाती तोहिं अरु तेरी मतिको धिक्कारहै क्योंकि काहूके हैकरे जाहू होतुहैं अब तू यहां ते जा फेर जिन आवनो कह्योहैजासों एकबेर जीवबचाइये पुनिवाहि कबहूं नपतियाइये अरु जो वाको बहुरि विश्वास करै तो निदान अनेक दुःख भरि निःसन्देह मरै ये बातें बानरते सुनि मगर चिंताकरि कहनि लाग्यो कि मैं अभागे यह कहा कियो जुकामबिनभये अपनोकपटयाकेआगेकहिदियो। अब काहूभांति याते विश्वास उपजाय पुनि याहिदांवमेंल्याऊंतो

भलो। ऐसे मन में ठानि हँसकै बोल्यो कि हे मित्र तेरीभाभीको तो या बातसे कुछ प्रयोजन नहो। पर हौंहँसीकी रीति तेरीप्रीति कीपरीक्षालेतुहों। तुममनमें कछु जिनल्याओ औ मेरी गैलआ-ओ। कपिकही अरे दुष्ट जलचर तू ह्यांतेजा। हौंआवनकोनाहिं ऐसे गंगदत्तहूने कह्योहो प्रियदर्शनतेकहो कि फेरगंगदत्त कुआमें आवनकोनाहिं। मगर कही यह कैसी कथाहै। पुनि मर्कट कह-निलाग्यो काहूएककुआमें गंगदत्तनाममेंडुकमेंडुकनको राजारहै वाकोकुटुम्बतेबैरभयो। तब वह अरहटकी मालपैबैठिकूपते बाहर आय बिचारनलाग्यो कि अबकौनउपायतेबैरियनमारिनिष्कंटक राज्यकरों। यहबिचारकरतुहो कि वाने एककारो नागबिलमेंपैठत देख्यो अरु याहिवह प्यारो लाग्यो।तब बोल्यो कि यासोंप्रीतिकरि शत्रुन को नाशकरों। कहयोहै कि रिपु मारिबेको अतिबलवंतश-त्रुसों स्नेहकरिये औ शशाके मारिबेको बाघको बलधरिये थोरो पराक्रम कबहूं न करिये। नातो अवश्य हारिये। ऐसे जीमेंठानि सर्पके बिलद्वारपै जाय पुकारयो अहो प्रियदर्शन मेरो तुमको प्र-णामहै बाहरआओ। यह सुनि वा सांपने निज मनमें बिचारयो कि जो मोहिं बुलावतुहै सोमेरो सजातीय तो नाहिं क्योंकिसर्प को शब्द नाहीं औ न काहूसों मित्राई। याते प्रथम याहिभीतर बैठेही जानिलीजै तब बाहरपांयदीजै। कह्यो है जाको शील स्वभाव न जानिये तासों बेगही न मिलबैठिये। यह बृहस्पति को बचनहै। अरु जो मैं तुरन्तही बिन समझे बिलते बाहर नि-करौं तो न जानिये कि कोऊ बैरी मंत्र बादी पकरै। ताते याहि जान्यो चाहिये। यों बिचार ह्वांईते बोल्यो अरे तूकोहै जोमोहिं टेरतुहै। इन कही हों गंगदत्त नाम मेंडुक मेंडुकनको राजाहौं। तोसों मेरी सहायता होगी। याते मित्राई करन आयोहौं। सर्प कही अहो यह अनमिल संगहै। तृण अग्निकी कैसीमित्राईपर अब तू मेरेघर आयो याते मैं कहाकहौं। कहयो है जासोंअपनी मृत्युजानिये ताके नेरे सपनेहू न जाइये। पै तैं ऐसी कहा बि-

यारी। गंगदत्त कही अहो यहतो सांचहै अरु हम तुम जन्महीके बैरीहैं पर हौं शत्रुको दबायो निरादर ह्वै तुम पास आयो। कह्यो है पगमें कांटो चुभै तो सुआसों काढ़िये अरु शत्रुसों जब अपनो विनाशजानिये तब सबलशत्रुको आसरोगहि प्राणधनराखिये। पुनि नागबोल्यो तोसों शत्रुताकौनसों है। इनकहीकुटुम्बसों। उन पूंछ्यो तेरो निवास कूप तड़ाग बापी कहांहै। इनकह्यो पाथरनते बंधे कुआंमें रहतुहौं। सांप बोल्यो तौतों न बनी क्योंकि तहा मोसों न गयो जायगो। कह्यो अतिमीठो भोजन होय तोहू पेटभरखाइये अधिक लोभ न करिये। लोभकरे बिगारहोय दुःखपावे। पुनि गंगदत्त कही अहो ऐसो कह्यो है कि भेदीमिले कठिन ठौरहू सुगमह्वैजातुहै जैसे घरको भेदी लंकाखोई अब मैं तुमते हौं को सारो भेद कहतुहौं। तुम चित्तदै सुनों। वा कुआं के ऊपर रहट चलतुहै ताकी माल ते लागि नीचे जाय एक खवाल में बैठि तुम हमारे शत्रुनि निश्चिंतताई सों खाओ अरु चैनसों बैठि मंगलगाओ। हौं तुमसे आचार्यको अपनी गाढ़ में कछु समझही लिये जातुहौं। तासों तुम काहू भांतिकी चिन्ता जिन करो बेगचलकै मेरीराजधानी की रक्षाकरो। इतनी सुनिसर्पने बिचारयो कि यहकोऊ मेरेभागते मोहिं आपने कुलको अंगार आय मिल्यो है अरु मोहिं तो याठौर आहारहू नाहीं जुरतु। याते वा ठौर याके संग जाऊँ तो बिनश्रम बैठ्यो आहारपाऊँ। कह्यो है कि जब देहको बलघटे अरु कोऊ सहायकनहोय तब पण्डितहोय सो अपनीजीविकावृत्ति बिचारै। ऐसे सर्पने निजमनमें ठानि गंगदत्त सों कही आजते तू मेरो मित्र भयो। अब ह्वां लैचल जाहि कहैगो ताहिखाउंगो। या रीत सों बातें बचन कहि नाग बिलतेबाहर आयो। पुनि दोऊबतरायकूप पै आय रहटकी मालमें लागि वा माहिंधँसे औ खवाल बीच बसे। आगे गंगदत्तने आपनेशत्रु चीन्ह २ बताये। उन बीन २ खाये। जब उनमें ते कोऊ न रह्यो तब सर्पने गंगदत्तसों कह्यो

कि मित्र मैंने तेरो कैसोकाम करदियो जुशत्रुनिमारि निष्कंटक राज्य कियो। गंगदत्त बोल्यो भाई जैसे भले मित्र कार्य करतुहैं तैसे तुम कीनों अरु मोहिं सुखदीनों। पर अब याही रहटकी माल लागि आपने धामपधारो। नागकही हितू यह कहाकहतु है। तैं मेरोघर छुड़ायो मोको ह्यां लैआयो ह्यां औरही मेरो सजाती आनि रह्यो होइगो। सो मोहिं विलमें काहे बडनदेयगो। ह्वांसों तैं मोहिं आन्यो आपनों करिठान्यो। अब मेरे आहारकी चिंताकरनातो हमसों तुमसों न बनिहै। कह्योहै आहारे व्यवहारे लज्जानकारे। यह बात सुनिगंगदत्तको उत्तरनआयो। तब निज मनमें पछतायो कि मैं मूर्ख यह कहाकियो। जु आपनोंघर दिखालै दिखाय दियो। अब यह विरोधके बचन कहतुहै। कह्योहै कि सर्वस जातो जानिये तो आधोदीजै बांट। तातें याके खैबेको आपनी बगरके मेंडुकतें एकएक नितदीजै। ऐसे मनमें ठहराय बोल्यो भाई तुम आपने आहारको मेरी बाखलतें एक दादुर नितलेहु अरु जैसे आपनेघर रहियतुहो तैसे रहौ वह वाहीं भांति रहनि लाग्यो। एकदिन गंगदत्त को पुत्र शुभदत्तनामवाके आहारमेंआयो। तब गंगदत्त रोवत २ आपनी स्त्री के सम्मुख धायो। उन कह्योरे कुटुम्बके मारनहारे अब क्यों रोवतुहै। तोहिं तो कुटुम्बको पाप लाग्यो पर अब निज प्राण राखिबेकोयत्न कर। यहबात सुनि गंगदत्त ने आपने किये को बहुतपरेखोकियो। आगे जब केवल गंगदत्तही रह्यो तब प्रियदर्शनने विचारयो कि यासों मोसों बोलबचनहै तातें यातें भोजन मांगों। जब यह कहैगो अब तौ हौंही रह्यो तब याहि छलकरिखाऊंगो। सर्पने ऐसे मनमें ठानि गंगदत्त सों कही रे प्रीतम अबतो यहां मेंडुक नाहिं अरु मोहिं भूख लागीहै। गंगदत्तबोल्यो हे प्रीतम अबतो हमतुम हैं भाईहीरहे पर आज्ञा करौ तो दूजो व्याह करौं औ प्रजा बसाय कुटुम्बते घरभरों। तुम मेरी राजधानी की चिंता करो औ मैं तिहारे आहारकी कहोतो अबहीं जाय तालके

मेंडुकन बुलायल्याऊं अरु फेरि ज्यों को त्यों नगर बसाऊं। सपि कही बन्धु यहतो तुमनीकी बिचारी यातेतौ तिहारी राजधानी रहै अरु मेरी जीविकाहू चलै। सुन अबलों तू मेरो भाई हो पर आजसों तू मेरे पिताकी समानहै। इतनों सुनि गंगदत्त रहट की माललागि कुआंके बाहर आय निज मनमें कहनि लाग्यो कि मैं आजकालके गालतेनिकरिआयो सोमानों नयो जन्मपायो। ऐसे कहि एकसरवरमें जायरह्यो अरु ह्वांनागने कितेक बेरलौं याकी बाटजोई। निदान घबरायके बोल्यो कि मैं अभागे यह कहा कियो जुवाहि जीवतुजान दियो। सब दादुरकुआंके खाये पर जबलग गंगदत्त मेरी डाढ़तरे न आयो तबलौं हौं नेकहू न अघायो। ऐसे कहि कूपमाहिं एकगोह रहतही। इन तासों कह्यो हे प्यारी तू मेरी संतुष्टताको कार्यकरै तो हौं तोसों एकबात कहौं। वह बोली कह। याने कह्यो कि गंगदत्त तालमें मेंडुक लेनगयो है। ताहि जाय कह कि दादुरलै बेगचल अरु वे न चलैं तो तूहीचल। तेरे देखेही वाकीभूख जैहै। कह्योहै भूख प्याससही जाय पर मित्रको वियोग न सह्योजाय। पुनि कहियो कि उनमोसों कह्योहै जु-मोहिं भूख्यो जान मनमें कछु भय न करै। जो मैं वासों द्रोह करौं तो मेरे सब कियेकर्म धोबीकी नांदमेंपरैं। इतनोंकहि सांपने गोहको बिदाकियो। वह कूपते निकरि गंगदत्तके पासजाय नागको संदेशो सुनाय बोली कि उन कह्योहै। अब दोऊ मित्र बैठि धर्मचर्चा करिहैं। खैबेको शोच जिनकरो पूरणवारो कन कीरी औ मनकुंजरकों देतुहै। गोहते सब बात सुनि गंगदत्त बोल्यो हे प्रिये कह्यो है भूख्यो कौन पाप न करै। नीचजीव नि-र्दई होतुहैं। ताते तू प्रियदर्शन ते जाय कह कि अब गंगदत्त कु-आंमें आवनको नाहिं। ऐसे कहि उन गोहको बिदाकियो। इतनी कथाकहि बानरने मगरसों कह्यो अरे दुष्ट जलचर तू यहांते जा हौं गंगदत्तकी भांति फेर तेरे घर जानको नाहिं। पुनि मगरकही मित्र तुम्हैं ऐसो करनो योग्य नाहिं। सुनों जो तुम मेरो कृतघ्न

दोष दूर न करिहौ तो मैं तिहारे बार उपवास करि मरिहौं । बा-
नर बोल्यो रे मूढ़ तू केतऊ कर पर मैं लंबकरण गदहाकी भांति
फेर न जाऊंगो । मगर कही यह कैसी कथाहै तहां बानर क-
हतुहै ॥

काहू बनमें एककरालकेशनाम सिंह । अरु ताको सेवकधूस-
रनाम स्यार रहै । सु काहूसमय वह सिंह गजसों लस्यो । वाके
शरीरमें चोटलागी ऐसी कि वाते एकडगहू न चल्योजाय । यातें
वाहि आहार न जुस्यो । तब जंबुकबोल्यो कि स्वामी मेरो तो
मारे भूखके प्राणजातुहै अरु तिहारी सौं यहगतिहै जुडगभरहू
नाहीं चल्योजात । मैं सेवा कैसेकरों । सिंहकही अरे तू कहूंकोऊ
जीव जायदेख जो मेरी यहदशाहै तौहू ताहि मारिहौं । यहसुनि
स्यार ह्वांते चलि गावँके निकटआयदेखै तो एकताल के तीरल-
म्बकरणनाम गदहा चरतुहै । वाहिदेखि याने कह्यो मामातोहिं
मेरो प्रणामहै । आज अनेक दिन पाछे मैं तिहारो दर्शन पायो
अरु सबदुःख पापगवाँयो । यों कहि वह धूर्त्त पुनि बोल्यो मामा
अबकै तोहिं अति दुर्बल देखतुहौं सुकहाहै । उन कही अहो
भगिनीसुत कहाकरौं । यह धोबिया बड़ो निर्दई है । मोपै बहुत
भारलादतुहै अरु एकमूठी हू अनाजनाहीं देतु । हौं धूरमिश्रित
रूखे सूखे तृणखाय रहतुहौं । तुमहीं बिचारो ताते देह कैसे
पुष्टहोय । स्यारकही मामा जो तू ऐसी विपत्तिमें है तो मेरेसाथ
चल । मैंतोहिं आछी ठौरलैजाऊं । तहांनदीके तीर मरकतमणि
के वर्ण हरी हरी दूबचरो और आनन्दते बिचरो । अरु हमतुमतहां
बैठि आछीआछी बातैंकरैं औ रहैं लम्बकरण बोल्यो अहो भगि-
नीसुत यहतो भली बातकही पर तुम बनबासी हम नगरनिवा-
सी तिहारी जीविका मांसते हमारी तृण नाजते । याते हमारो
तिहारो मेलकैसे बनै अरु वहभली ठाम हमारे कौन कार्यकी ।
स्यार कही मामा ऐसे जिनकहौ । वा ठौर तुम मेरी भुजान के
वलते रहौ । ह्यांकाहूभांतिको दुःख भयनाहीं । औरहू गदही

अनेक आपनी जीविका के लये रहति हैं मोपाहीं। औ ते आई हीं तब अति दुर्बल ह्वैरहीहीं। ताते महा कुरूप दीसातिहीं। मेरे आश्रममें आय उननि सुखपायो आहार भुक्तौ खायो। तासों वे पुष्टहोय चम्पाबर्णी ह्वैरही हैं अरु वे कामकी सत।ईमोसों निशंक आपनो मनोरथ आयआय कहतिहैं औ तामें आज प्रात ही एक मामी ने मोते आयकही कि तेरो मामा सपनेमें मेरोपति भयो है। ताहिल्याय मोसों मिलायदै। याते तुमवेगचलो। नातो वाहि कोऊ और लैजायगो। यहबात सुनि कामातुरहोय लम्बकरण बोल्यो अहो भानजे जो ऐसी बातहै तो आगहोय तोहू मैं चलौंगो कह्योहै स्त्रीमें द्वैगुण एक अमृत औ दूजो विष। संयोग अमृत औ वियोग विष। पुनि जाको नाम लिये मनुष्य प्रसन्न होय ताको मिलन सुखतो अधिकही होयगो। आगे वह स्यार गदहाको फुसलाय लैगयो। औ सिंह गदहाको देखतेही धायो। तब यह भयमानेह्वै परायो औ वाके हाथ तो न आयो पर नाहरके हाथकी चोट याके शरीरमें लागी। सिंह अछताय पछतायबैठरह्यो तब जम्बुक बोल्यो कि तुम यह कहा कियो जु गदहाछांड़िदियो बस देख्यो तेरो पराक्रम। जो याहीको न मारसक्यो तो हाथी कैसे मारैगो। नाहरकही अरे एकतो मेरी देह निर्बल दूजेवाको आवनो मैं न जान्यो। याते वह निकरगयो। नातोहाथीखेइमारों पुनि स्यारबोल्यो भलो जो भयो सोभयो। वाहि जानि देउ। अब हौंवाहि फिर ल्यावतु हौं। तुम सावधानहोय बैठो। सिंह कही अरे जोमोहिं देखिगयो है सो फेर कैसे आवेगो स्यारबोल्योतुम आपनें पराक्रमकी बात कहो। वाहि ल्यावनको हौं जानों। यह बातसुनि सिंह सचेत ह्वै ऐंठि बैठ्यो। औ स्यार तहांतेचलिनगर में पैठ्यो। गदहाके ढिग जाय हँसिकै बोल्यो अरे मामा तूवहांते क्यों बगदि आयो। उनि कही अहो भागिनीसुत तू मोहिं भली ठौरलैगयो जुमैं नीठनीठ मीचके हाथ ते बचिआयो। वह कौन जंतुहो जाके हाथकी चोटमेरे शरीर में वज्रसमलागी। स्यारने

मृतकराय के कह्यो मामा वहतो सामीहीं। तोको आवत देखि अनुरागते आतुर होय आलिंगन करिबेको उठीही। पर तूनपुंसक ज़ो भाज्यो सुवह सकुच करि वहांहीं बैठगई। कह्यो है जब स्त्री क्रीडासमयढीठहोय ढिठाईकरै अरु वाके भर्ता सों कछुकार्य नसरै वह आपनी ढिठाईते आपलज्जितहोय। अब वाने मोसोंकह्योहै कि जाके शरीरमें मेरो हाथ लायो मैं ताहीको बरिहौं ना तौ लंघन करि करि मरिहौं। तूही ताके मनमें बस्यो है। तेरेही बिरहसों वह बापुरी दुःख पावति है याते हौं कहतुहौं। कि तू बेग चलि वाकोमनोरथ पूरोकर। न जानिये जो बिरहब्यथातेवाको जीव निकरिजाय तौ तोहिं स्त्रीहत्याको पापलागै कह्योहै बालक, स्त्री, गो, ब्राह्मणकी हत्याते महानरक भोगनों होतुहै। औ भगवान् ने संसार में नारीबडीबस्तुबनाई है ताहीते सबको प्रियहै॥

दो० नारी नारी सबकहैं नारी नर की खान।
अन्तकाल में देखिये नारीही में प्रान॥

अरु जे स्वर्ग की इच्छाकरि नारी को तजतुहैं तिनको कामदेवपीडा देतुहै। देखो कोऊ नग्नहोय छारमें लोटतुहै। कोऊ आपनेहाथ आपनो शिर खसोटतु है। कोऊजटाराखि पंचाग्नि माहिं बैठि जरतुहै। कोऊ कपाली आसनमारिऔ ऊर्ध्वबाहुहोय दुःखभरतु है। पुनि कह्यो है नारी सबसुखकी जरहै इतनोकहि बहुरि स्यारबोल्यो कि मामाहौं तिहारोहितूहोयकहतुहौं क्योंकि तिहारे सुखते हमैं सुखहै औ दुःखते दुःख। आगे गदहा स्यार को उपदेश सुनि कामांधहोय हर्षि पुनि वाकेसाथचल्यो। कह्यो है कि जब मनुष्य कर्मके बशहोय तब खोटी बातको जानकैहू न मानै। बिनकिये न रहै। पुनि ज्यों खरवहांगयो त्योंहीं सिंहने मारलियो। आगे सिंह स्यारको गदहाके ढिगराखिआप नदीनहैवे गयो। जौलौं वहस्नान, ध्यान, पूजा, तर्पणकरिआवैतौलौं स्यार चंडालने क्षुधाकेमारे गदहाकेकान नैनऔहियालै भक्षण कियो। सिंहआनि देखै तौ वाको हृदय औ नेत्रकर्णनाहिं। तब

उनि स्यारसों कह्यो अरे यह तैं कहांकियो जो आंख कान औ हियो ताको काढ़ि खाय लियो। तेरो जूंठो मैं कैसे खाऊं। स्यार कही स्वामी ऐसो जिनकहो या जीवके कान आंख हियो होत नाहीं। क्योंकि कानहोते तौ तिहारोनाम इन या बनमें सुन्यों होतो। अरु नेत्रहोते तौ तुम्हैं देखि फेरि न आवतो। औ हियो होतो तौ तिहारे करकी चोटखाय फेर न भूलिजातो यहबात स्यारते सुनि सिंह ने गदहा बांटिखायो इतनी कहि बानर बोल्यो अरे जलचर हौं लम्बकर्णनाहिं जु तेरेसाथ अबआऊं। क्योंकि तैं प्रथमही मोसों कपट कियो। बहुरि युधिष्ठिर कुम्हारकी भांति सबभेद कहिदियो मगर कही यह कैसी कथाहै। तहां बानर कहतु है॥

एकसमय काहू देशमें अति बर्षाभई। ताते कालपरयो। तब वहां के कितेक रजपूत कहूं चाकरी को चले तिनकेसाथ युधिष्ठिर नाम एक कुम्हारहू ह्वैलियो। वाके माथेमें घावहो कितेक दिनमें काहू और देशमाहिं जाय एक राजाके यहां चाकर भये। कुम्हार के लिलार को घाव देखि राजाने अपने जीमें बिचारयो कि यह कोऊ बड़ो शूरहै जु याने सन्मुख चोट खाईहै। याते राजा वाहि वाके सब साथियनते अधिकमानै। एकदिन वह नरपति आपने सब सुभटन सहित सभामेंबैठ्यो हो कि वाने यासों पूंछ्यो अहो रावत यह घाव तुम मस्तकपर कौनसी लड़ाई में खायो। इनकही महाराज मेरोनाम युधिष्ठिर है। याते हौं झूंठनाहीं बोलत मैं रजपूत नाहीं। जातिको कुम्हारहौं। अरु यह घाव मैंने रणमें नाहींखायो। याको भेद कहतहौं सुनो कि मेरे पिताके ब्याहको उछाह हो। तहां मैंहूं आपनी मंडली में आँगपी घरमें दौरयो। सुउखटपरयो। एक ठिकरा मूड़में पैठ्यो। ताको यह चिह्नहै। इतनी बात सुनतही राजा रिसकरि बोल्यो इन मोहिं धोखो दियो अरु याके लिये मैंने इन राजपूतनको अपमान कियो अब याहि धकाहि काढ़ो कुम्हार कही महाराज ऐसे जिनकीजे। बरन युद्ध में मेरी परीक्षालीजे। राजा बोल्यो अरे सब गुण संयुक्त कुलमें तू जनस्यो नाहिं। ऐसे

स्यारशिशु को सिंहनीनेहूं कह्यो हो। कुम्हार कही यह कैसी कथा है। तब राजा कहनलाग्यो॥

काहू बनमें एक सिंह औ सिंहनी रहैं सु सिंहनीने द्वै शिशु जाये। तद वाको पति वाके लिये अनेक अनेक भाँतिके जीव औ जन्तुमारिल्यावै। एकदिन वह सारो दिवस फिर्‍यो। पै वाकेहाथ कोऊ जन्तु न आयो। जब सूर्य्य अस्तभयो तब निराशहो घरको आवन लाग्यो। तहां गैल में एक स्यारकोसुत तुरतको जायो इन पायो। ताहि यत्नसौं मुखमें राखि सिंहनीके ढिग जीवतल्यायो। वाहि देखि बाघिनी बोली हे नाथ कहा आज और जन्तु न पायो। सिंह कही भद्रे सिगरो दिनभटक्यो पर कछु हाथ न आयो। अवहीं डगरमें आवत यह हाथपर्‍यो। सु याहि बालकजानि मैं नाहिंमार्‍यो। तेरे पथ्यके लिये ल्यायो हौं। सिंहनी बोली स्वामी यातें मेरो पेटहू न भरैगो। वृथा याहि क्यों मारौं कह्यो है बाला बाल ब्राह्मण ये तीनों अबध्यहैं। विशेष अपने घर आवै ताहि तौ कबहूं न मारिये। बाघ बोल्यो जो तैं ऐसी विचारी तौ यह कैसे जियेगो। उनकही याहि मैं आपनो दूधप्याय जिवाऊंगी। जैसे मेरे ये द्वै हैं तैसे तीसरो यहहू रहै। ऐसे कहि वह वाहि दूधपियावनलागी। आगे जद वे बड़ेभये तौ वे तिनजाने इकठेरहैं। अरु स्यारशिशु तिनमें बड़ोभाई कहावै। एक दिन वा बनमें हाथी आयो तब सिंह शिशु बोल्यो अहो यह गज आपने कुलको वैरीहै। चलो याहि खेदमारैं। यह सुनि स्यारशिशु इतनो कहिभज्यो कि भाई याके सन्मुख कहाजात हौ। वाके साथ सिंहशिशुहू भजे अरु वे तीनों घरआये। कह्योहै कि युद्धसमय आगे शूरहोय तौ वाहि देखि औरनको हूं शूरताहोय। अरु एक कायर संग्राम छोड़भजै तौ वाकेसंग सबभजैं। आगे सिंहशिशुन आय मातासौं कही कि मा यह हाथी देखिपरायो अरु याके पाछे हमहूं। अपनी निन्दा सुनि स्यारको शिशु उनके मारिबे को उठ्यो। तब सिंहनी बोली ये तोते छोटे हैं। तू इनते बड़ो है। याते तोहिं इनपै क्रोध करनो

उचित नाहिं। उन कही ये मेरी निन्दा करतु हैं सो कहा हौं इनते कुल वर्ण पराक्रम में घाटहौं कै हाथी नाहीं मार जानत। यह सुनि सिंहनी ने वापै दयाकरि वाहि एकान्त लैजाय कह्यो कि पूत तू सुंदर औ बलवान्है पर वा कुलमें जनम्यो नाहिं जु हाथी मारै अरे तू तौ स्यारहै मैं तोहिं दयाकरि आपनो दूध प्याय जिवायो है सु ये तोहिं जानत नाहिं। अरु अब इन ते तोते विरुद्ध भयो। ये तोहिं बिनमारे न रहैंगे। याते हौं कहति हौं कि तू अब आपने सजातियन में जायरह। नातौ जीवत न बचैगो। इतनो सुनि वह ह्वांते उठि पूंछदबाय आपने सजातीनमें जायमिल्यो। यह प्रसंगकहि राजाने कुम्हारसौं कह्यो कि सुन। तू वा कुलमें उपज्योनाहिं कि लोहकी आंच झेलै। पुनि सभाते उठायदियो। तातेहौं कहतुहौं रे मूर्ख जलचर तैंहू युधिष्ठिरकी भांति कपट कहिदियो सु यह कहाकियो। नीतितौ यों है कि जहां सांचबोलेते कार्यबिगरै औ झूंठते सुधरै तहां सांचसों झूंठही भलो। कह्योहै जु मिथ्याकहे काहूको जीवबचै औ आपनो माहात्म्यरहै तौ राखिये। द्वैठौर झूंठ बोलिबेको दोषनाहिं। अरु विनबोले कार्यसरै तौ कबहू न बोलिये। औ हरकाममें चपलताकरि विन स्वारथ न बोलि उठिये। देखो बगुला मुनि धर्म साधे निजकार्यकरै औ चपलहोय सुआबोलि बन्ध में परै। इतनोकहि पुनि बानर बोल्यो अरे मूढ़ तैं स्त्रीके संतोष के लिये ऐसो अधर्म बिचारचो कि मोहिं मारनको उपस्थित भयो। कह्यो है नारीको मनभायो सहज में होय तौ करिये अरु वाके कहे मूर्खहोय निजधर्म न बिसारिये। क्योंकि स्त्रीजन अपस्वार्थी होतिहैं। विनकी प्रतीति कबहूं न कीजे जैसे एक ब्राह्मण प्रतीति करि पछतायो तैसे पछतावनो होय मगर पूंछी यह कैसी कथा है। तहां वानर कहनिलाग्यो काहू गांव में एक ब्राह्मणरहै। ताकी नारी अतिसुन्दर चन्द्रमुखी चम्पकबर्णी मृगनैनी पिकबैनी गजगौनी कटिकेहरी अरु जाके कर पद कोमलकमलसे नारंगी

सम कुच और श्यामघटाकी समान दांत हीराकीसी पांति ओंठ बिम्बाफलजान भौंह धनुषमान । पुनि कीरकीसी नाक कपोत कैसो कंठ और कर्त्तारने वाहि ऐसी सँवारी कि मानों सांचेकीसी ढारी । वाके रूपकी ईर्षा सब कुटुम्बकी नारी खायोकरैं । जब यह चरित्र वाके पतिने देख्यो तब वह घरकी माया छोंड़ वाके-आधीनहोय वाहि साथलै परदेशको चल्यो । कितेक दूरजाय वाकी स्त्रीने कह्यो हे स्वामी मोहिं प्यासलगीहै । उन कही प्रिये तू ह्यां बैठ हौं जल खोजिलाऊं यहकहि वह तो पानी शोधनगयो औ ह्यां प्यासकेमारे याको प्राण निकरिरह्यो । वह आय याहि मरी देखि अतिबिलाप करनलाग्यो तब आकाशवाणी भई कि अरे याकी तौ आयु पूरीभई । पर जो तेरो यासों अधिक स्नेहहै तौ तू आपनी आयुबल याहि दै । ऐसे सुनि विप्रने हाथ पाँयधोय आचमनकरि पवित्रहोय आधीबैसवाहिदई । वह झट उठिबैठती भई । जलपीय दोऊ आगे चले । औ काहूगाँवके निकट जाय एक मालीकी बारीमाहिं उतरे । जब ब्राह्मण गाँवमें सीधोलेन गयो तब ब्राह्मणी बारी में फिरनलागी । तहां देखै तौ एक पंगु कुआंपै बैठ्यो गायगाय रहटको बर्द्ध हांकि रह्योहै । वाको गान सुनि ब्राह्मणी रीझि ताके निकट जाय कहनि लागी अरे मेरोमन तासों अटक्यो । मेरो मनोरथ पूरोकर । उनकही अरीघरगई हौं पंगु । तू मोहिं कहा करैगी । इनकही दईमारे निगोड़े तोहिं या बात सों कहा काम । जो मैं कहौं सो तू कर । अरु जो तू मेरो कह्यो न करैगो तौ मैं तोहिं हत्यादूंगी यह सुनि वाने वाकोमनोरथ पूरोकियो तब ब्राह्मणी प्रसन्नहोय बोली आजते यह जीव तेरो दियोहै । आगे सीधोले विप्रआयो । अरु रसोई करि जब स्त्री पुरुष भोजनको बैठे तब ब्राह्मणीने पंगुहूको जिमायो । पुनि जब हांते चलिबेकोभये तब ब्राह्मणीने अपनेपतिसों कह्यो कि हे स्वामी जाबेर तू मोहिंछांड़ि सीधोलैन नगरमें जातुहै वासमयहौं अकेली रहतिहौं । याते यह लूलोमालीको टहलुआहै औ आछोगावतु

है याहि संगलीजे तो मेरेनिकट रह्योकरेगो। उनकही प्रिये एक तो गैलसें आपनी देह निबाहनी कठिन हैं दूजे या पंगुको कैसे ले चलेंगे। इन कही स्वामी एकपिटारो आनिदेउ। तामें राखि याहि हौं निजमूड़पै आछीभांति लै चलिहौं। तुम या बात की चिन्ता जिनकरो यह सुनि उनपिटारो आनिदियो। इन वाहिमें राखि शिरधरिलियो आगे एकवनमें जाय ब्राह्मणीने निज मन माहिं विचार्यो कि यह ब्राह्मण जबलौं रहैगो तबलौं हौं या पंगु सों निर्भयहोय भोग न करसकौंगी। ऐसे बिचारि समयपाय विप्र को कूपमें डारि पंगुको पिटारो शिरलेज्यों एकनगरमें बढ़ी त्यों राजाके सेवक याहि पकरि नगरपतिपै लैगये। उन पिटारो खुलवाय पंगुको देखि कह्यो यह को है इन कह्यो महाराज यह मेरोपतिहै। याके शत्रुनके भयते आपने मूड़पै लिये डोलतिहौं। अब तिहारी शरण आनिलईहै। जैसो जानो तैसोकरो। राजा कही तू मेरे नगरमें रहि। हौं तेरी आजीविका करेदेतुहौं। तेरो शत्रुआवै तो मोसे कहियो। इतनोकहि राजाने गाँव २ में वाकी चुंगीकरदई। वह वाहिलै वहां सुखसों रहनलागी। आगे दईके योग कोऊ बनजारो वा वनमें आय निकस्यो तानें वा ब्राह्मण को कुआँसों काढ़्यो। कह्यो है जु आयु न पूरीहोय तौ बाय बैरी अग्नि जलहूके मुखते बचै पुनि वह ब्राह्मण वाही नगरमें आयो जहां ब्राह्मणीही। जब ब्राह्मणीने अपनोपति देख्यो तब उनराजा सों जायकह्यो महाराज मेरेस्वामीको रिपुआयो। यहसुनि राजा ने वाहि पकरि मँगायो अरुकह्यो रे विप्र तू याहि क्यों दुःखदेतुहै औ कहामांगतुहै ऐसी बात राजाके मुखतेसुनि ब्राह्मणने निजमन में बिचार्यो कि जो इनहीं मेरी ममता त्यागी तो मोकोहू याकी प्रीति तजनी उचितहै। क्योंकि मनटूटोफिर न मिलै जौं फाटिककी पात्र। ऐसे बिचारि ब्राह्मणने राजासों कही कि पृथ्वीनाथ हौं यातें न कछु मांगौं न कहौं पर मेरी यापै आधीआयुहै सो दिवायदेव। राजा ब्राह्मणकी बात झूठसमझ चुपह्वैरह्यो अरु ब्राह्मणी आगलोभेद

न जान बोलउठी कि धर्मावतार जाभांति यहकहे तारीतिसों याकी आयुबलदेउँ। बहुरि विप्र बोल्यो हाथ पाँयधोय आचमनकर पवित्रहोय ऐसेकह कि मैं तेरी आयुलईही सो पाछीदई उनवैसे ही कह्यो। औ कहतही वाको प्राणघटते निकरिगयो राजासभासहित देखिभयचकरह्यो। पुनि वाको भेद पूंछ्यो तब ब्राह्मणने सबभेद कह्यो। या बातके सुनतेही राजाने ब्राह्मणको बिदाकियो अरु आप नियम लियो कि नारी की बात कबहूं सांची न मानिये। ताते हौं कहतहौं अरे मूर्ख जलचर स्त्रीकी बातको बिश्वास कबहूं न करिये कह्यो है जो नारीके बशपरै सो कहा न करै जैसे राजाभोज औ पांड़े बररुचि कियो।मगर पूंछी यह कैसीकथाहै तहांबानरकहतुहै॥

एकसमय रात्रिको राजा भोजकी रानी राजासों रिसानी तब उन अनेक उपाय मनायबेको किये पर वाने याकी बात क्यों हूं न मानी औ कह्यो जो तुम घोड़ाबनि मोहिं चढ़ाय आंगनमें ले फिरो अरु हौं ऐंड़कारि चाबुक चटकाऊँ तौ तिहारो गायोगाऊं। उन सुनि वैसेही करि आपनो मनोरथ साध्यो। औ वाही रात्रि पांड़ेकी पँड़ियाँइनिहूं रूठी। तब पाँड़ेने कही तू काहूभांतिहू हठ छोड़ै। उनिकही तुम मेरो अपराधी हौ। याते तोहिं भद्रकरों तो मेरो क्रोधमिटै। कह्योहै जो अतिचतुरहोय सो रसरीति समझ प्रीतिके बशपरै। आगे पांड़ेने दाढ़ी मूंछ औ मूड़मुड़वायो औ वाको गायो गायो। भोरभये जब राजा सभामें आय बैठ्यो तब पाँड़ेने जाय आशीशदई। उन याहिदेखि हँसके कही अहो बिप्र बिनपर्व भद्र कहांभये। इन बिद्याके बल रातकी बात बिचार कह्यो। महाराज जहां मनुष्य घोड़े की भांति हींसे तहां विन पर्वहू मुंडनहोय। यह सुनि राजा मौनगहिरह्यो। तातें हौं कहतहौं अरे दुष्ट जलचर जैसे राजा औ पांड़ेने कियो तैसे तुहूं कामांधहोय स्त्रीके वशभयो वे दोऊ ऐसे बतराय रहेहे कि वाहीसमय एक जलचरने आय मगर सों कही भाई तेरी स्त्री मारेक्रोध के मरबेको ह्वैरही है अरु घरमें तेरे एक और मगर आयरह्यो है

यह सुनि मगर दुःखपाय बोल्यो हाय मैं अभागे यह कहा कियो जु ऐसी दुष्टपत्नी के कहे आपनों धर्म कर्म खोयदियो पुनि उनि वानरसों कह्यो कि मित्र तू मेरो अपराध क्षमाकर क्योंकि मैं अब या दुःखते प्राण छांड़िहौं। बानर बोल्यो अरे मूर्ख तेरे घरमें बिगार होनो तौ युक्त होही। पर तोहिं ऐसी दुष्टस्त्री के गये उछाह करनो योग्यहै। क्योंकि कह्यो है कि कलहकारिणी नारी औ बिष विपत्तिकी जरहै। याते जो आपनी आत्माको सुखचाहै सो वासों बिरक्तरहै तौही भलो। वाके मनमाने सो कहै औ करै। नारीन के चरित्र भांति भांतिके हैं। ते कहांलौं कहौं पर तू येतीही बात में जानियो कि जे चतुर औ सज्ञानहैं ते तिनके आधीन कबहूं न होयँगे। मगर कही अहो मोते द्वै चूकभई। ताहीते इत मित्राई गई। औ उत स्त्री जैसे एक नारीको जारभयो न भर्त्तार। बानर कही यह कैसी कथाहै। तहां मगर कहतुहै ॥

एक किसानकी स्त्री तरुणि औ वह बूढ़ौ फूस। ताते वाको मनोरथ पूजि न सकै यह नितप्रति परपुरुष हेर्‌यो करै औ काम के मारे याको मन धाम में न लागै उदास रहै। एक दिन कोऊ पराये वित्तचित्तको चोर याहि आनिमिल्यो वासों इनकही हे शुभलक्षण मेरो पति बूढ़ो ह्वै रह्यो है जो तू मेरो जारहोय तो मैं घरकी द्रव्यलै तेरेसंगचलौं। उन कही तैं नीकी बिचारी। भलो मैं होउँगो। इन कही तौ तू सकारे आइयो। हौं तेरेसाथ चलौंगी। आगे भोरभयो वह आयो औ वाहि वित्त समेतलै नगरके बाहरको पायो। कोस एक जाय मनमें विचार करनि लाग्यो कि यह एक तौ यौवनवती दूजे याहि परपुरुषकी इच्छाहै कदाचित् जैसे यह मोहिं मिली तैसे काहू और सों मिलजाय तो फेर मैं कहा करौंगो यह विचारि एक नदीके तीर जायबोल्यो भद्रे प्रथम नदी पार वित्त बस्त्र धरिआऊँ। पाछे पीठपर चढ़ाय तोहिं लैजाऊँगो वाने या बात के सुनतही बसन आभूषण की गठरी दई। इन लै पारहोय आपनी बाटलई सो लई। व्यभिचारिणी

नदीतीर पछताय नीचोनार किये बैठरहीही कि एक स्यारनी मांसको लोथरा लिये तहां आई। अरु एक माछरीहू पानीते निकरि रेतपर बैठीही। वाहि देखि स्यारनी लोथराधरि माछरी पकरबेको दौरी। इत मांस चील्ह लैगई औ उत माछरी याहिदेखि जलमें कूदी। जब स्यारनी निराशहोय चील्हकीओर तकनि लागी तब व्यभिचारिणी बोली कि दोऊगँवाय अब कहादेखति है। उन कही एकतो हौं चतुर अरु मोहूं ते दूनी तू जु तेरो सर्वस्व गयो औ न जारभयो न भर्तार। इतनी कथाकहि मगर बोल्यो भाई मेरीहू वही दशाहै पर अब कौन उपायकरौं नीति में तो कार्य साधबेको चार उपाय कहे हैं साम, दाम, दण्ड, भेद अब इनमें ते मोहिं जो करनो योग्यहोय सो कहौ। वानरकही अरे मूढ़को उपदेश कबहूं न दीजै। बहुरि मगर बोल्यो मित्र हौं शोक समुद्र में बूड़तहौं तू मोहिं काढ़। तोहिं यश धर्म होयगो। कह्यो है जो मूर्ख कार्य बिगारै तोहू चतुर सुधारिलेय। मैं मूढ़ तू चतुर ताते जामें मेरो भलोहोय सो युक्तिबताय। वाकी दीनतादेखि बनचर बोल्यो भाई तू आपने घरजा औ सजाती सों युद्धकर। क्योंकि जो जीतिहै तौ घरपाय है औ मरिहै तो स्वर्ग। कह्योहै उत्तमजनसों सामउपाय कीजै। मनुहारकरि कार्यलीजै। अरु अतिबलवान् को धनदै दाम उपाय करि आपनो कार्य सँवारिये पुनि दुष्टते दंडउपायकै अपनपौ राखिये। बहुरि समान सों भेद उपाय करि वाहि छलबल करि मारि नाखिये जैसे एक स्यारने कियो। मगर कही यह कैसी कथा है पुनि बानर कहतुहै॥

काहू स्यारने बनमें एक मरयो हाथी पायो पर वाको कठिन चाम मांत काट्यो न गयो। त्योंहीं एक सिंह आयो। यह देखतही वाके सन्मुख उठिधायो औ हाथ जोर बोल्यो स्वामी या गजको आप अंगीकार कीजै उन कही हौं काहूको मार्यो खातु नाहीं मेरो यह धर्महै याते यह मैं तोहीं को दियो। इतनी कहि वह चल्यो गयो। पुनि एक तेंदुआ आयो। वाहि देखि स्यारने जीमें बिचार्यो

कि यह दुष्ट है याको भेद उपाय करिढराइये। ऐसे मनमें ठानि यह वाके सन्मुख जाय गुमानसों हितू होय बोल्यो अहो यहां कहां आवतुहो। यह गज सिंह मारि मोहिं याकी रखवारी राखिकै गंगान्हायगयो है। ज्योंहीं बघेला ने याकी बातसुनी अरु वाके चरण चिह्न देखे त्योंहीं पीठदई। इतेकमें एक चीताआयो। ताहि निहारि जंबुकने बिचारयो जु यासों हाथी को चामफड़वालीजै तो भलो। ऐसे बिचारि इन चीतासों कह्यो अहो भगिनीसुत मैं तोहिं अनेक दिन पाछे देख्यो जो भूख्यो है तो यह गज सिंह मारि नदीन्हैबे को गयो है जौलौं वह आवे तौलौं कलेवा करि चल्योजा। उन कही मामाहौं आपनोमांस राखो तो लाखसिंह को मारयो गजकैसे खाऊं। तब स्यार बोल्यो अरे हौंयाको रखवारोहौं औ तेरे आड़े ठाढ़ौरहतुहौंतूखा। जब सिंह आवेगोमैंपुकारोंगो तब तू भाग जैयो। उन याकीबातमानिज्यों हीं वाकी खालफारि कछु मांस मुखमेंलियो त्योंहींस्यारपुकारयो अरेभाग सिंहआयो। यह सुनतप्रमाण वह उठिदौरयो। याभांति स्यारनेवासों दाम उपायकरि निजकार्यसाध्यो। आगेसजातीनसों दण्डउपायकरि युद्धकियो। अरु वह हाथीकाहूकों न खान दियो तातेंहौं कहतुहौं कि साम दाम दण्डभेद चार उपायकहेहैं। पर जैसो जहां बूझिये तैसो तहां करिये। बहुरि मगर कहीहौं विदेश जैहौं। बंदरबोल्यो॥

अरे एक चित्रांगदनाम कूकरपरदेश में जाय काहूगृहस्थ के घरपैठ्यो। औआछोआछोखाय जब बाहरआयो तब वा गावँके श्वानानि वाहिघरआतिमारदई पुनि इनदुःखपाय निजनगरकी बाटलई अरु घरआयो। तदयाके कुटुंबने पूंछ्यो कि बिदेश जैबे की अवस्था कहो जुवहां कैसेरहे। इनकही परदेश में और तो सबभलो परसजाती देख नाहिं सकतु। जो कोऊमोसों पूंछे तो मेरे जानवरते निकसनो उचितक्योंहू नाहीं। अरे मगर तातेंहौं कहतुहौं कि तेरी दुष्टपत्नी तो गई पै तू अबहीं सकामहै। याते

नयो ब्याहकर। कह्यो है कुआंकोनीर बड़कीछांह तुरतबिलोयो घी खीरको भोजन बाल स्त्री ये सबप्राणको पोषतुहैं। अरु अवस्था प्रमाणकार्यकीजै तो दोष नाहीं। बानरते यह उपदेश सुनि मगर निजघरगयो औ उन नयाविवाह कियो घर माड्यो सब दुःखछांड्यो आनन्दसों रहनि लाग्यो। इतनी कथा संपूर्णकरि विष्णुशर्माने राजपुत्रनको अशीशदई कि तिहारीजयहोय औ शत्रुनकीहार। यह सुनि राजपुत्रनहू वस्त्रआभूषण द्रव्यमँगाय भेंटधरि पायँलाग गुरूको बिदाकियो अरु आप नीतिमार्ग सों निज राजकाज करनि लागे॥

कठिन शब्दों का कोष ॥

ना०=नाम, वि० नाम=विशेषनाम, पु०=पुल्लिंग, स्त्री०=स्त्रीलिंग, वि०=विशेषण, अ०=अव्यय, स० नाम=सर्वनाम, गु० वा०=गुणवाचक ॥

(अ)

अवदीच, वि० ना० पु० उपनाम
अजर, वि० पु० जो बूढ़ा न होय
अमर, वि० पु० जो मरै नहीं
अयोग्य, वि० जो लायक न होय
अनित्य, वि० जो हमेशह न रहे
अनमिल, गु० वा० जो मिला न होय
अशक्ति, गु० वा० जिस्में वल न होय
अजानवाहु, गु० वा० जिनकी भुजागांठ तक लागै
अन्तर, वि० फ़रक़, भेद
अप्रिय, गु० वा० जो प्यारा न होय
असन्तोपी, गु० वा० जिस्को सवरनहोय
असाहसी, गु० वा० जिस्में साहसनहोय
अनपावनी, गु० वा० स्त्री० जो किसीने न पाई होय
अधवर, वि० अधूरा, वीचोवीच
असाधु, गु० वा० जो अच्छा न होय
अवज्ञा, गु० वा० अनादर
अहार, वि० ना० पु० भोजन
अकुलीन, गु० वा० जो कुलमें कमहोय
असमय, गु० वा० वक्त खराव
अल्प, वि० थोड़ा
अहंकार, गु० वा० घमण्ड
अपमान, गु० वा० वेइज्जत, निरादर
अनत, गु० वा० दूसरी जगह

अस्त्र, वि० ना० पु० हथियार
अभिलाषा, वि० ना० स्त्री० इच्छा, मनसा
असावधान, गु० वा० वेहोश, वेखवर
अखण्ड, गु० वा० जिस्के टुकड़ेनहोयँ
अथ, अ० इसके पीछे
अनागत, गु० वा० नहीं आया
असमर्थ, गु० वा० वेज़ोर, नाताक़त
अनभई, वि० जो कभी नहीं हुई होय
अनर्थ, गु० वा० बुरा, वेवाजिव
अभयदान, क्रि० वि० डर छुड़ादेना
अधीर, गु० वा० मूर्ख, जिसमेंधीरनहोय
अभागे, गु० वा० कम्बख्त बुरेनसीव के आदमी को कहते हैं
अम्वरीच, वि० वा० पु० राजा अम्बरीप का नाम है
अधम, गु० वा० नीच
अस्थिर, गु० वा० नहीं ठहरा हुआ
अश्वमेध, वि० नाम पु० यज्ञका नाम है जिसमें घोड़े का वलिदानहोय
अतिथिधर्म, गु० वा० महिमानी
अहो, अ० विस्मयादि वोधक
अवध्य, गु० वा० जो मारा न जाय
अगरौ, गु० वा० पहिला
अटपटाना, क्रि० भुलाजाना, कठिनता
अदृष्टनर, गु० वा० छिपाहुआ मनुष्य
अनअवसर, वि० वेमौक़ा
अनसावना गु० वा० उखेतानों

अनगैरी, दूसरे घरको, गैरशख्स
अनहित, गु० वा० जिसके मित्रनहोय अर्थात् वे मुहब्बत
अप्रवीण, गु० वा० जो चतुर न होय
अभाग्य, गु० वा० बुरानसीब
अविवेकता, वि० अज्ञानता
असन्तान, जिसके औलाद न होय
अप्रकट, जो ज़ाहिर न होय

[आ]

आसरो, क्रि० वि० सहारा
आपदा, ना० स्त्री० आपत्य, दुःख
आगम, ना० पु० कानूनशास्त्र, क़ायदा
आश्रम, ना० पु० स्थान
आदित्य ना० पु० सूर्य्यकानाम
आलिंगन, क्रि० मिलना
आत्मद्रोही, वि० जो अपना बुराचाहे
आभरण, ना० गहना जेवर
आभरण, क्रि० ढकना
आगता स्वागता, गु० वा० आये हुये का आदर करना
आलस्य, गु० वा० अलसाजाना, सुस्ती
आहट, ना० शब्द होना
आचार्य्य, ना० महंत कर्मकरानेवाला
आकाशवाणी, ना० जो आसमान से शब्द निकले
आत्मामिष, प्राणरक्षाके निमित्त सर्व-स्वदेना
आपस्वार्थी, गु० वा० मतलबी, खुदग़र्ज़ी
आधार, क्रि० वि० सहारा
आगलो, गु० वा० आगेका, पहिलेका

[इ]

इतेक, स० ना० इतना
इन्द्रियन, ना० वा० इन्द्रियां
इकल्लो, भा० वा० अकेला
इहिं, स० ना० यह

[ई]

ईंदुर, ना० वा० चूहा

(उ)

उजागर, ना० पु० प्रकाशकरना
उच्चपद, गु० वा० ऊंचादर्जा
उपाधि, ना० झगड़ा
उदयाचल, वि० ना० पु० पर्वतकाना
उर, वि० ना० पु० हृदय
उपकारार्थ, गु० वा० विरानेकामकेलि
उलट, क्रि० लौटना, पलटना
उपायक, गु० वा० तदबीरकरनेवाला
उन्मत्त, गु० वा० मतवाला
उपस्थित, गु० वा० मौजूद
उपन्यास, क्रि० वा० रखना
उपग्रह, क्रि० वा० लेना
उच्छिन्न, गु० वा० कटा
उत, अ० उधर
उतावली, गु० वा० जल्दी
उत्कंठित, क्रि० वा० जिसकोचाहहोय
उत्पन्नमति, गु० वा० बुद्धिमान्
उत्साह, ना० वा० पु० आनन्द
उदोत, क्रि० वा० उदय होना
उपहार, ना० वा० भेंट
उल्लंघनो, क्रि० वा० नांघना

[ऋ]

ऋण, ना० वा० उधार

[ए]

एकान्त, ना० अकेला
एकमति, गु० वा० एक सलाह

[ओ]

ओछी, गु० कम

[औ]

औगुण गु० वा० बुराई, दोष
औषध, ना० वा० दवाई

[क]

कृपानिधान, गु० वा० मेहरबान
कवि, ना० वा० शायर
कपार, ना० वा० माथा
कांचन, ना० वा० सोना
कुपात्र, गु० वा० बुरा
कीट, ना० वा० कीड़ा
काव्य, ना० वा० शायरी
कलह, ना० वा० झगड़ा
कपोत, ना० वा० कबूतर
कौतुक, ना० वा० खेल
कंकण, ना० वा० हाथका गहना
कंटक, ना० वा० पु० कांटा
कुशल, गु० वा० अच्छा
काष्ठा, ना० वा० नियम, दिशा
कनक, ना० वा० सोना, सुवर्ण
कथ, क्रि० वा० कहकर
कुदृष्टि, गु० वा० बुरीनज़र
कामातुर, स० ना० कामी
कामान्ध, स० ना० काममेंअन्धाहो रहाहो
क्रीड़ा, ना० वा० खेल
कलंक, ना० वा० ऐब
कदाचित्, अ० कभी, अगर
कंदर्पकेतु, त्रि० ना० मनुष्य का नाम है
कटु, गु० वा० कड़ुवा
कुबेला, गु० वा० बुरासमय
कूकड़ो, ना० वा० कुत्ता
कौशुंबी ना० वा० नगर का नाम है

[ख]

खटकति, क्रि० वा० खटकता
खोड़र, ना० वा० बिलको कहते है
खनानो, क्रि० वा० खोदना
खवानो, ना० वा० खिलाना

[ग]

गजमुख, ना० वा० देवका नाम है
गणईश, वि० ना० देवका नाम है
ग्रन्थ, ना० वा० पुस्तकोंको कहते हैं
गीलकृत, ना० वा० उपनाम है
गुणनिधान गु० वा० गुणकी जगह
गुप्त, वि० छिपा, पोशीदह
गृहकूप, त्रि० ना० घरका कुआं
गूढ़, गु० वा० कठिन
गांठ, ना० वा० गिरह
गवांर, ना० जोगांवमेंरहे, निर्बुद्धिहो
गृध्रकूट, ना० वा० पहाड़ का नाम है
गम्भीर, गु० वा० गहरा
गयन्द, ना० वा० गैन्द
गृहस्थाश्रम, ना० वा० गृहस्थी
गन्धमादन, ना० वा० पर्वतका नामहै
गम्य, गु० वा० जानेके योग्य
गर्दभ, ना० गधा
गार, ना० वा० गड़हा
गारुड़, ना० वा० जोसर्पोंका मंत्र जाने
गुननो, क्रि० वि० विचारकरना
गुरुभाई, गु० वा० जो अपने गुरुका लड़का शिष्य होय
गुह्य, गु० वा० छिपाहुआ
गृहछिद्र, गु० वा० घरकाभेद
गौतमारण्य, गौतमऋषिकावन

[घ]

घात, ना० वा० मौक़ामारना
घृत, ना० वा० घी
घटनो, क्रि० वा० कमहोना
घालनी, क्रि० वा० मिलाना
घुमड़नी, क्रि० वा० फिर आना
घुसायन, क्रि० वा० घुसना
घोसुआ, ना० वा० घोंसला

[च]

चतुर, वि० होशियार
चिन्ता, ना० वा० फ़िक्र
चित्रग्रीव, ना० वा० एककबूतरकानाम
चिचायकरि, क्रि० वि० चौंचौंकर
चेष्टा, ना० वा० सूरत, नज़र
चिरंजीवि० आशीर्वाद, हमेशा रहे
चांद्रायण, ना० वा० एकमहीनेकाव्रत
चन्द्रभागा, ना० वा० नामहै नदीका
चम्पावर्णी, गु० वा० चम्पाकासावदन
चपलाई, गु० वा० तेज़ी
चाणक, ना० वा० ग्रन्थका नामहै
चिचानौं, ना० वा० चीची करना
चित्रांगद, ना० वा० गन्धर्वका नामहै कूकरका नाम
चूड़ाकरण, ना० वा० मुंडननाम
चारुदन्त, गु० वा० सुन्दरदांत

[छ]

छांड़े, क्रि० वा० छोड़ना
छोनानि, ना० वा० बच्चे
छलछिद्र, ना० वा० कपट
छिन्न, गु० वा० कटा
छैगुण, गु० वा० छैगुना
छांड़नो, क्रि० वा० छोड़ना
छानो, क्रि० वा० याचना

[ज]

जड़, वि० पु० मूर्ख
जन्म, ना० वा० जनम
योग, ना० वा० फ़क़ीरी
ज्योतिष, ना० वा० एकविद्याकानाम
जलचर, ना० वा० जलकाजीव
याचक, गु० वा० मांगनेवाला
जम्बु, ना० वा० गीदड़
जम्बुकेत, ना० वा० एकजानवरकानाम
जलकुण्ड, वि० ना० तालाब

[झ]

झलना, क्रि० वा० टसहना

[ट]

टेलर, वि० ना० पु० साहिबकानामहै
टरतनटारे, क्रि० वा० हटायेन हटे
टेरनो, क्रि० वा० बुलाना
टिटोर, क्रि० वा० टटोलना, टटीरीकानर

[ठ]

ठाम, ना० वा० जगह
ठिठको, क्रि० वा० रुकना
ठानि, क्रि० वि० विचारकर

[ड]

डोकरा, भा० वा० बूढ़ा
डरन्यो, क्रि० वा० डरना
डहडहेउ, गु० वा० हराभरा

[ढ]

ढारनो, क्रि० वा० ढालना
ढिग, गु० वा० पास

[त]

तेजस्वी, गु० वा० प्रतापी
तृपावन्त, गु० वा० प्यासा
तृण, ना० वा० तिनुका
तद, अ० तब
तरुण, गु० वा० जवान
त्यागत, क्रि० वा० छोड़ना
तुंग, गु० वा० ऊंचा
तरंग, ना० वा० लहर
तुष्ट, गु० वा० सन्तोषी
तिरस्कार, गु० वा० अनादर
तत्काल, अ० उस समय
तपोवन, गु० वा० तपकी जगह
तितेक, स० वा० तितने

तिस, स० ना० तिन्ने
तुंगवल, गु० वा० ऊँचाईकावल
तुल्य, ना० वा० बराबर

[थ]

थांभ, क्रि० वा० रोकना
थमानो, क्रि० वा० थमाना, देना

[द]

दाता, गु० वा० देनेवाला
दाहक, गु० जलानेवाला
दयासागर, गु० वा० दयाकासमुद्र
देनहारी, गु० वा० देनेवाली
दृढ़, गु० वा० मज़बूत
दरसे, क्रि० वा० देखे
दुराचारी, गु० वदचलन
दलदल, ना० वा० कीचड़
दुरदिन, गु० वा० मेहवर्षनेका दिन
द्रव्यहीन, गु० वा० दरिद्री
दामिनी, ना० वा० विजली
दमक, क्रि० वा० चमकना
दूरदर्शी, गु० वा० दूरन्देश
दिग्विजय, दिशाओंका जीतना
दण्डकारण्य, ना० वा० दण्डकवन
दपटनो, क्रि० वा० धमकना, दण्डकरनो
दिनकटी, क्रि० वा० दिन काटना
दुर्दन्त, गु० वा० वड़ेदांत

[ध]

धीमान् गु० वा० बुद्धिमान्
धर्मार्थ, वि० धर्मकाकाम
धूर्त, गु० वा० मूर्ख, ज़िद्दी
धनाढ्य, गु० वा० धनवान्
धनान्ध, गु० वा० धनसे अन्धाहोरहा हो, अभिमानी
धरानो, क्रि० वा० धरवाना
धर्मारण्य, ना० वा० धर्मस्थान्
धवनि, ना० वा० धौंकनी
धूसर, ना० वा० धूम्रवर्ण

[न]

निपट, गु० वा० विलकुल
निपुण, गु० वा० प्रवीण, चतुर
नवौनवौ, गु० वा० नया नया
नीतिमार्ग, गु० वा० नीतिका रास्ता
नान्हें, गु० वा० छोटा
निरन्तर, स० ना० जल्दी
नख, ना० वा० नह
निन्दा, ना० वा० वुराई
निमित्त०, ना० वा० वास्ते
नितप्रति, ना० वा० हररोज़ अ०
निदान, अ० आख़िर
नरपति, ना० वा० राजा
नासिका, ना० वा० नाक
निश्चिन्त, वि० छुट्टी पाया, वेचिन्त
निकट, गु० वा० पास
निन्दक, क्रि० वि० वुराईकरनेवाला
नग्नता, भा० वा० नंगापन
नरनाह, ना० वा० राजा, सर्दार
नरेन्द्र, ना० वा० राजा
नाखनो, क्रि० वा० डाला
नाठा, वि० जिस्के कोई न होय
निकटवर्ती, वि० पास रहनेवाला
निरादर, गु० वा० जिस्का आदर न होय
निर्लोभ, गु० वा० जिस्के लोभ न होय
नाठे, गु० वा० विगड़ जाना
न्योर, गु० वा० विनती
नरहटी, ना० वा० गर्दन

(प)

प्रतापी, गु० वा० तेजस्वी
प्रजापालक, गु० वा० प्रजाका पालनेवाला, राजा

प्रवीण, गु० वा० चतुर
प्रथम, गु० वा० सं० पहिला
प्रतिष्ठा, ना० वा० इज़्ज़त
प्रवेश, क्रि० वा० घुसना, पैठना
पात्र, ना० वा० बर्तन
प्रकार, अ० तरह
प्रीति, ना० वा० सनेह
पुण्यवान्, गु० वा० पुण्यकरनेवाला
प्रकाशे, जो दीखे
प्रभुता, भा० वा० हुकूमत
पुरुषार्थ, ना० वा० ताक़त
प्रेरे, क्रि० वा० आज्ञाकरना
पुहुप, ना० वा० फूल
परसे, क्रि० वा० छुओ
परम, अ० ज्यादा
पथिक, ना० वा० मुसाफ़िर
प्रातःस्नान, ना० वा० सवेरेकानहाना
प्रतीति, ना० वा० निश्चय
पाखंडी, ना० वा० जो पाखण्डकरै
पथ्य, ना० वा० औषध वा परहेज़
प्रयोग, ना० वा० नियम
पराक्रम, ना० वा० ताक़त
प्रभाकर, ना० वा० सूर्य्य
पालन, क्रि० वि० परवरिश
पवित्र, गु० वा० साफ़, मुतवर्रिक
परमार्थ, ना० वा० जो दूसरे के लिये उपकार
परम्परा, गु० वा० हमेशः से
प्रमाण, ना० वा० अन्दाज़
प्रार्थना, ना० वा० विनती
परिश्रम, ना० वा० मेहनत
प्रधान, गु० वा० मुख्य अफ्सर
पगार, ना० वा० महल
प्रतिबिम्ब, ना० वा० परछाहीं
प्राचीन, ना० वा० पुराना
पौरियन, ना० वा० द्वारपर रहनेवाले
पत्नी, ना० वा० स्त्री
परक्रिया, समास दूसरे की क्रिया
पुष्ट, गु० वा० मोटा
पण्डियान, ना० वा० पंडित की स्त्री
पद्मकेलि, ना० वा० कमलोंका खेल
परदूषण, स० दूसरे का ऐब
पुरुषान्तर, अपने योधाओं को साथ लेकर मिले इससन्धिको कहते हैं
प्रतीकार, ना० वा० बदला

[फ]

फड़वानो, फड़वाना
फुरनो, क्रि० वा० सत्यहोना
फुल्लोत्पल, यो० वा० फूलाहुआकमल

[ब]

ब्रजभाषा, ना० वा० ब्रजकी बोली
बखानत, क्रि० वा० बखान करना
ब्योहार, ना० वा० व्यवहार
विद्यारूपी, गु० वा० इल्मकी सूरत
वृद्ध, ना० वा० बूढ़ा
विग्रह, ना० वा० लड़ाई
बांझ, ना० वा० जिस स्त्रीके संतान न होय
व्रत, ना० वा० एक प्रकारका नियम
वित्त, ना० वा० धन
व्याधि, ना० वा० बीमारी
बृहस्पति, वि० ना० देवताओंके गुरु
विशेष, गु० वा० अधिक मुख्य
बिलाव, वि० ना० दिल्ली
बिलूरवे ना० वा० पु० मूसा, चूहा
विनती, गु० वा० नम्रता, आजिज़ी
बटोही, ना० वा० राह चलनेवाला
विप्र, ना० वा० जातिकानाम ब्राह्मण
बध्यो, क्रि० वा० मारना
ब्रह्मचर्य्य गु० वा० वेदकाआचरण

बंधन, ना० वा० क़ैद
बसीठ, ना० वा० मंत्री
बंदरा, ना० वा० बंदरका बहुवचन बहुत बंदर
बंधु, गु० वा० भाई
बगर, ना० वा० बगल
बढवार, ना० वा० बढ़वार
विरुद्ध, भा० वा० झगड़ा
बसन, गु० वा० शौक

[भ]

भागवान, गु० वा० नसीबेवर
भाषत, क्रि० धौ० कहताहुआ
भांति, गु० वा० तरह
भृंग, ना० वा० पक्षी विशेष
भक्षण, क्रि० वा० खाना
भविष्य, का० वा० आनेवाला समय
भार, ना० वा० बोझा
भिक्षा, ना० वा० भीखमांगना
भर्त्तार, गु० वा० स्वामी
भिक्षुक, गु० वा० भिखारी
भोजनार्थ, सं० का० खाने के लिये
भिन्न, गु० वा० जुदा
भेदी, गु० वा० जासूस

[म]

महाराजाधिराज, गु० वा० शाहंशाह
मारकिस, गु० वा० उपनाम
मति, ना० वा० समझ
मंद, गु० वा० निर्बुद्धि
महाजन, वि० ना० उपनाम
मर्य्यादा, ना० मर्याद
मर्कत, ना० रत्नका नाम है
मणिमाणिक, ना० रत्नका नामहै
महिमा, ना० माहात्म्य
मृग, ना० वा० हरिण
मनोरथ, ना० मनकी चाह
मृतक, गु० वा० मुर्दा
मादकता, भा० वा० नशाकीअवस्था
मर्म, ना० भेद
मयूर, ना० मोर
मस्तक, ना० माथा
मिस, ना० वा० बहाना
मर्कट, ना० बन्दर
मर्दन, भा० वा० मलना
मन्थरक, गु० वा० सुस्त
मदोत्कट, ना० वा० एक सिंहविशेष घमण्डी
मुनीश्वर, ना० वा० मुनिश्रेष्ठ

[य]

युद्ध, ना० वा० लड़ाई
युक्ति, ना० वा० तदबीर
यथायोग्य, क्रि० वि० जैसाचाहिये
यत्न, ना० वा० इलाज
यद्यपि, अ० अगर
यूथपति, ना० वा० झुण्डकामालिक
यद्भविष्य, गु० वा० होनहार
युधिष्ठिर, ना० वा० राजाकानाम

[र]

रसमूल, ना० वा० रसकीजड़
रंजन, ना० वा० पु० आनन्द
रमनो, ना० वा० रमना
रोष, ना० वा० ईर्षा
रुक्मांगद, वि० ना० सुनहरी भुजाका
रस, ना० वा० पु० जल

[ल]

लक्षण, ना० वा० चिह्न
लखानों, भा० वा० देखपड़ना
लघुपतनक, वि० ना० कौवेकानाम
लहनों, ना० वा० लेना
लांबा, गु० वा० लम्बा

लाजवन्ती, गु० वा० स्त्री शर्मवाली
लार, ना० वा० थूक
लावण्यवती, गु० वा० स्वरूपवालीस्त्री
लीलावती, ना० वा० स्त्री खेलकरने वाली
लूअ, ना० वा० गर्महवा
लोठिया, ना० वा० लकड़ी
ल्यानो, ना० वा० लाना
ल्यावनो, ना० वा० लाना

[व]

व्यासमुनि, ना० वा० नामहै मुनिका
विष्णुशर्मा, ना० वा० नामहै मनुष्यका
विश्राम, क्रि० वा० बैठना, सुस्ताना
विप्र, ना० वा० ब्राह्मण
विश्वास, ना० वा० भरोसा
वधिक, क्रि० वा० शिकारमारनेवाला
वर्त्तमान, क्रि० वा० मौजूद
विसारदे, वि० क्रि० भुलादेना
वत्सल, गु० वा० प्यारा
व्याकुल, भा० वा० घवराहट
व्यभिचारी, ना० वा० बुराकामकरने वाला
विलम्ब, गु० वा० देरी
वृथा, गु० वा० वेफ़ायदे
वियोग, ना० वा० क्रि० वि० अलगहोना
वररुचि, वि० ना० एकपंडितकानाम
वर्जित, क्रि० वा० मने करना
विरुद्ध, ना० वा० वैर
वृद्धापन, भा० वा० बुढ़ापा
विषाद, ना० वा० दुःख

[श]

शम्भूसुत, ना० वा० महादेवके लड़के
शुभचिंतक, गु० वा० अच्छाचीतनेवाला
शृङ्गार, ना० वा० शिंगार
श्रीमान्, गु० वा० लक्ष्मीवान् धनी
शूरता, भा० वा० वीरता
शरणागत, वि० शरण में आया

[स]

सुरवाणी, वि० देवताओं की बोली
समतूल, ना० वा० चौड़ाव लम्बाव में एकसा
सुपात्र, गु० वा० पु० बहुत योग्य वा अच्छावर्त्तन
सज्जन, गु० वा० पु० अच्छामनुष्य
सूरता, भा० वा० बहादुरी
संयोग, ना० वा० मिलावट
सन्तोष, ना० वा० सबूरी
समाचार, ना० वा० हाल
समीप, ना० वा० निकट व नेरे
सहाय, वि० ना० पु० मदद
साध्यो, ना० वा० बनाया
सुवर्ण, वि० ना० पु० सोना
साक्षात्, अ० हूबहू
संन्यासियन, ना० वा० संन्यासी
संचरनो, ना० वा० चलना
संतुष्ट, गु० वा० पु० जो न बहुतचाहे
सौभाग्यवती, गु० वा० स्त्रीसुहाग वा०
संजीवक, वि० ना० पु० जिलानेवाला
सुपथ, वि० ना० पु० अच्छारास्ता
सपरियै, क्रि० तैयारहोना
सर्वस्व, वि० ना० पु० सबधन
साधु, गु० वा० सीधामनुष्य
स्वामिभक्ति, वि० ना० स्त्री० मालिक की सेवा
सत्यवन्त, गु० वा० पु० सचकहनेवाला
सहगामिनी, वि० ना० स्त्री० साथ चलनेवाली
स्वेच्छा, वि० ना० स्त्री० अपने मनकी बात
सुदृष्टि वि० ना० स्त्री० अच्छीनज़र

संतुष्टता, गु० वा० स्त्री० जिसके होने से मनुष्य कमचाहना करता है
समुद्रान्त, समुद्रतक
सामर्थ्यता, वि० ना० स्त्री० जिससे सब होसके
सात्त्विकी, गु० वा० पु० सतोगुणी
सुकुमारता, गु० वा० स्त्री० सुकुमारी
सुसेवित, वि० ना० पु० जिसकी अच्छी सेवा हो
सुदर्शन, वि० ना० पु० विष्णुजी का हथियार मनुष्यका नाम भी होता है
सुवर्ण, गु० वा० स्त्री० जिसका अच्छा रंगहो

[ह]

हीन, वि० ना० पु० कम
हृष्ट, गु० वा० पु० खुश
हेतु, वि० ना० पु० सबब
हिंडोरा, वि० ना० पु० हिंडोला वा हिंडोलना
हिरण्यक, ना० वा० नामहै एकपशुका
हर्षनो, क्रि० त्रि० प्रसन्नहोना

[क्ष]

क्षुधित, गु० वा० भूखा
क्षमायुक्त, गु० वा० शान्तिसहित, बरदाश्तकरनेवाला, सहनेवाला
क्षमावन्त, गु० वा० शीलवन्त मुआफ़ करनेवाला

[ज्ञ]

ज्ञाता, गु० वा० पण्डित जो सब जानता होय

इति

श्रीयुत हालसाहव कृत परिभाषा ॥

१ शम्भु—शिवजीका नाम है।

२ सहस्र अवदीच—ये गुजराती ब्राह्मणों का उपनाम है कि इन लोगोंने सहस्र अर्थात् हजार पुरुषाओं से सरस्वती—नदी के पश्चिमोत्तर देशों को परित्यागकर गुजरात का निवास अंगीकार किया।

३ कीन या कीनौ अर्थात् कियो या करेउ।

भगवान् हरि वा विष्णु।

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी
जनवरी सन् १९०४ ई०

दज, उद्भिज, वनस्पति, गुलमलता, वृक्षादिकोंकीउत्पत्ति, दिनरात्रि प्रमाण व युगोंकाप्रमाण व व्रतादिकोंके करनेका नियम व फल देशोंकाकथन, मनुष्योंके जातकर्म व नामकरण व चूड़ाकरण यज्ञोपवीतादि की क्रिया कथन वेद के अध्ययन करने का ढंग व नियम व इंद्रियोंके संयमों के उपायोंकाकथन आचार्य उपाध्याय व गुरुआदि का वर्णन पितृकर्म में श्राद्धादि करने का नियमादि निषेध व प्रायश्चित्तादि वार्त्तायें सब इसमें उत्तमरीतिसे सविस्तार वर्णन कीगई हैं—आशाहै कि जो विद्वद्वरधर्मशास्त्र व मर्यादाप्रिय महाशय इसको अवलोकन करेंगे वे परमानन्दितहो कृपाकटाक्षसे ग्रंथकर्त्ता व यंत्रालयाध्यक्षको आशीर्वाद देंगे और कदाचित् ऐसे बृहद्ग्रन्थ के मुद्रण करने में कोई अशुद्धि रहगई हो तो उसका अपराध क्षमाकरेंगे ॥

शुक्रनीति ॥

जिसका उल्था श्लोकवार पण्डित महेशदत्त तेवारीने छापेखाने की तरफसे कियाहै जिसमें नीतिविषयक राजा राजमंत्री और राजकुमारों की मुख्य धर्मकी रीतें और प्रजापालनादि क्रम चार अध्यायों में वर्णितहै ॥

चाणक्यनीतिदर्पण ॥

जिसमें मूलश्लोकसाथ लिखकर हरिशंकरजीकी भाषाटीका भी संयुक्त की गईहै—इसके देखने से मनुष्य नीति की उत्तम २ बातें जानजाता है ॥

चाणक्यनीति ॥

इसका तर्जुमा संस्कृत चाणक्यनीतिसे दोहोंमेंलालासीतारामजी बीएने कियाहै ॥

मण्डलीमण्डन ॥

पण्डित सीताराम उपाध्याय पिलकिछा ज़िला जौनपुर निवासीकृत दोहा और भावार्थ सहितहै इसमें चाणक्यनीति का पहले श्लोक और तिसपीछे दोहा और भावार्थ संयुक्तहै यह धर्मशास्त्र के प्रेमियों के लिये बहुत उत्तमहै ॥

भगवद्गीतानवलभाष्यका विज्ञापनपत्र ॥

प्रकटहो कि यह पुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृति सांख्यादिसारभूत परमरहस्य गीताशास्त्रका सर्व विद्यानिधान सौशील्यविनयौदार्य्य सत्यसंगर—शौर्य्यादि गुणसम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्जुनको परमअधिकारी जानके हृदयजनित मोहनाशार्थ सवप्रकार अपारसंसार निस्तारक भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचर कराया है वही उक्त भगवद्गीता वजवत् वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गतजिसको कि अच्छे २शास्त्रवेत्ताअपनी बुद्धिसे पारनहीं पासक्के तव मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देश भाषाही पठन पाठनकरनेकी सामर्थ्यहै वह कब इसके अन्तराभिप्रायको जानसक्केहैं और यह प्रत्यक्षही है कि जबतक किसी पुस्तक अथवा किसी वस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धिमें न भासितहो तबतक आनन्द क्योंकर मिलै इसप्रकार सम्पूर्ण भारतनिवासी श्रीमद्भगवत्पादाब्ज रसिकजनों के चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्ततधर्म्मधुरीण सकलकलाचातुरीण सर्वविद्याविलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमान् मुंशीनवलकिशोर जी (सी,आई,ई) ने बहुतसा धन व्ययकर फ़र्रुखाबाद निवासि स्वर्गवासि पण्डित उमादत्तजीसे इसमनोरंजन वेदवेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तकको श्रीशंकराचार्य्यनिर्मित भाष्यानुसार संस्कृतसे सरल देशभाषामें तिलकरचाय नवलभाष्य आख्यसे प्रभातकालिक कमल सरिस प्रफुल्लित करादियाहै कि जिसको भाषामात्र के जाननेवाले पुरुषभी जानसक्केहैं ॥

विचित्र चरित्र भाषा ॥

यह पुस्तक वास्तव में विचित्रही है इसमें सहस्रों युवतियों और नवयुवा पुरुषोंकी नखशिख अपूर्व शोभा तथा शृंगारऔर उनकेआपसमें स्नेहप्रीति और मान तथा आसक्तहोनेकी कथायें और करोड़ों प्रकारकी छलरचना, प्रपंच मायाकृत अनेक देश तथा पर्वतों इत्यादिका वर्णनहै इसमें जितनी कथायें हैं वह सबही चित्तको लुभाने वाली हैं, यहपुस्तकअवश्यमेव देखनेके योग्यहै ॥